साहित्य

कम्बन

एस० महाराजन

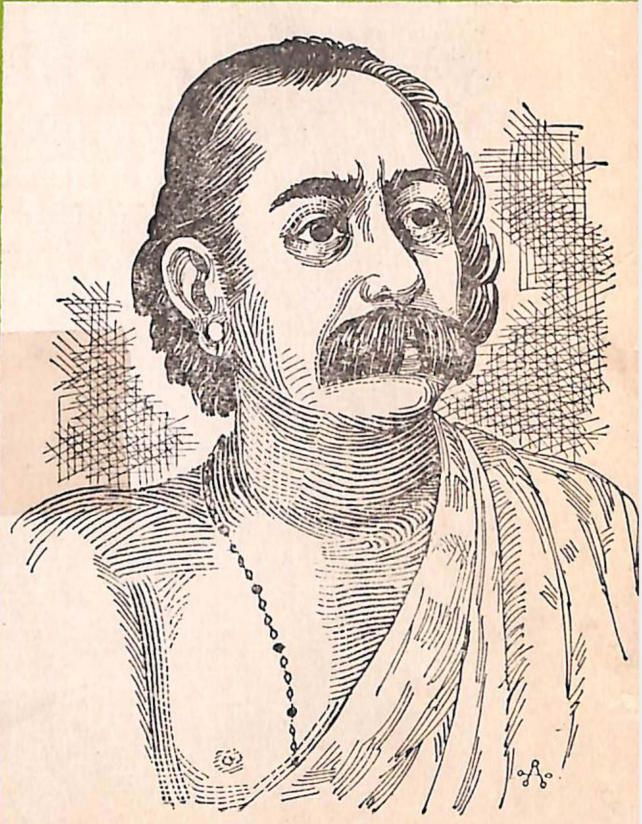

MT
891.481 013 2
K 128 M

भारतीय
साहित्यक
निर्माता

MT
891.481032
K 128M

अस्तर पर छपल मूर्त्तिकलाक प्रतिरूप मे राजा शुद्धाधनक दरबारक ओहि दृश्यकें देल गेल अछि जाहि में तीन गौट भविष्यवक्ता भगवान वुद्धक माय-रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचा मे एक गोट देवान जी बैसल छथि जे ओहि व्याख्या के लिपिवद्ध कय रहल छथि। भारत मे लेखनकलाक ई प्राय: सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी

सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली।

भारतीय साहित्यक निर्माता

कम्बन

लेखक

एस० महाराजन

अनुवादक

जगदीश प्रसाद कर्ण

साहित्य अकादेमी

Kamban : Maithili translation by Jagadish Prasad Karna of S. Maharajan's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1985), **SAHITYA AKADEMI**
REVISED PRICE Rs. 15.00

Library IIAS, Shimla
MT 891.481 013 2 K 128 M
00117133

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : 1985

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110001

क्षेत्रीय कार्यालय

ब्लाक V-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता 700029
29, एल्डाम्स रोड (द्वितीय मंज़िल), तेनामपेट, मद्रास 600018
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400014

मूल्य
SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

मुद्रक
संजय प्रिंटर्स,
दिल्ली 110032

MT
891.481 013 2
K128 M

Indian Institute of Advanced Study
117133
9.12.04
SHIMLA

विषय-सूची

प्राक्कथन	7
भूमिका	9
कम्बनक काल	11
बाल काण्ड	14
अयोध्या काण्ड	26
अरण्य काण्ड	54
किष्किधा काण्ड	69
सुन्दर काण्ड	73
युद्ध काण्ड	78
उपसंहार	89
सन्दर्भ-ग्रंथ	93

प्राक्कथन

एहि उद्धरण सबहिक सरसरियो पठन सँ हमरा स्पष्ट होइत अछि जे अनुवादक वस्तुतः उच्च कोटिक कवि ओ महाकाव्य दुहुक समकक्ष भय अपन कार्य मे संलग्न छथि। कवि कम्बनक वैशिवक रूप धरि पहुँचबाक विशिष्ट गुण स्पष्टतः एहि उच्च एवं सूक्ष्म विषयवस्तु सभ कें अत्यन्त मानवीय विवरण सँ वान्हि दैत अछि। वस्तुतः मानव-अनुभूतिक संसारे कविक वर्ण्य विषय थिक और ओ काव्यमय गीतक उदात्त प्रभावें ओही लक्ष्य कें प्राप्त करैत छथि जाहि दिशा मे संपूर्ण विश्वक महान काव्य यत्नशील अछि— अर्थात् दिव्य ओ कालातीत केर पार्थिव ओ अनुभवगम्य सँ संयोग करायब।

हम अनुवाद केर क्षमता सँ प्रभावित छी। यद्यपि अनुवादक अंग्रेजीक कटु आ विदेशी भाषा मे तमिल काव्यक पूर्णतः समुचित अनुवाद करबाक असंभवता कें अनुभव करैत दुख प्रकट करैत छथि तथापि स्पष्टतः मूलक जे वैशिष्ट्य अछि तकरा अपना अनुवाद मे सुरुचि ओ असाधारण ऊर्जस्विताक संग प्रतिविम्बित करैत छथि। हुनक अंग्रेजी रूपान्तरण सशक्त एवं स्वागत करबा योग्य अछि। कम्बन स्पष्टतः एहन कवि छथि जनिका अंग्रेजी-भाषी संसार मि० महाराजन केर सूचिन्तित एवं मधुर अनुवाद द्वारा जानि कय वस्तुतः समृद्ध हैत।

—एडवर्ड ल्यूडर्स

अंग्रेजी विभाग,
ऊटा यूनिवर्सिटी,
साल्ट लेक सिटी, ऊटा—84112
यू० एस० ए०

भूमिका

कोनो विदेशी वीसम शताब्दीक तमिलनाडु प्रदेश मे व्याप्त कम्बनक अद्भुत् लोकप्रियता कें देखैत यैह अनुमान करबा लय बाध्य हैत जे कम्बन आइ-काल्हुक अनिवार्य समस्या सभ कें कविताक स्वर देनिहार एक आधुनिक कवि छथि। मुदा ई अनुमान अपन लक्ष्य सँ एगारह शताब्दी हटल हैत, कियैक तऽ कम्बनक प्रादुर्भाव एवं निधन नवम शताब्दी मे भेल छल। अपना काव्य मे ओ एहन शाश्वत समस्या सभ कें स्वर देने छलाह जे सब युग मे उत्पन्न होइत अछि और जकर उत्तरो मनुष्यक आत्मा कें अनन्त काल धरि आकर्षित करैत रहत। तैं हुनक उत्कृष्ट काव्य युग-युग धरि अपन स्थान अक्षुण्ण बनौने रहल अछि।

कम्बनक पाछाँ सहस्र शताब्दी सँ अधिक कालक एक अविच्छिन्न काव्य-परम्परा छल। तमिलक आरंभिक वसन्त कालक कवि लोकनि कें जे सुविधा प्राप्त छलैन्ह से कम्बन कें नहि। हुनक आगमनक पूर्व वीसो आचार्य लोकनि द्वारा तमिल भाषाक प्रयोग-उपयोग कैल गेल छल। जखन भाषा अपन आरंभिक नमनशीलता ओ संवेदनशीलता सँ युक्ते छल, तखने ईसापूर्वक 'संगम' कवि लोकनि तमिल भाषा कें एक सरल गांभीर्य एवं संयम केर गुण सँ समन्वित केने छलाह। दोसर शताब्दीक कवि तिरुवल्लुवर एकरा प्रांजलता एवं सुगठित स्वरूप प्रदान केने छलाह, जाहि कारणें डॉ० ग्राउल कें हिनक द्विपदी कें "चानीक जाली मे रचल गेल सोनाक सेब" केर संज्ञा देमय पड़लैन्ह। छठम सँ नवम शताब्दी धरि वैष्णव संत आल्वार लोकनि एवं शैव संत नायनमार लोकनि भाषा कें एक असाधारण सुनम्यता ओ मर्मस्पर्शी भावपूर्ण गीतक गुण प्रदान कैलन्हि। एहन लगैत छल जेना कम्बनक आगमनक पूर्व भाषाक संपूर्ण संभावनाक उपयोग कऽ लेल गेल हो। किन्तु एहि सभ कठिनताक रहितो कम्बनक प्रतिभा भाषा कें नव अभिव्यक्ति-सामर्थ्य प्रदान कय एकरा विशुद्ध काव्यगत परिपूर्णताक साधक बनौलक।

ओ 'रामायण' कें एहि कारणें चुनलन्हि जे सरल-सहज रामकथा, 'महाभारतक विपरीत, एहन कोनो जटिलता सँ मुक्त छल जे पाठक कें कविताक मुक्तिदायक प्रभाव सँ वंचित रखैत अछि। अनेक शताब्दी सँ तमिल जनता आल्वार सन्त

लोकनिक भक्ति-गीत द्वारा एहि कथाक प्रमुख तत्त्व सँ परिचित छल और कथाक विभिन्न स्थितिक रसास्वादन कऽ चुकल छल। कम्बन जनैत छलाह जे एहि कथा-विन्यासक ई लाभ छल जे ओ पाठकक सम्पूर्ण ध्यान कें कथा सँ हटाय अपन सृजनात्मक, कथात्मक, नाटकीय आ गीतात्मक प्रतिभा पर केन्द्रित करा सकैत छलाह। वस्तुतः अपन पूर्व कथ्य मे ओ बड़े गर्व सँ ई घोषणा करैत छथि जे ओ रामायण कें अपन काव्यक विषय रूप मे एहि हेतुएँ चुनलन्हि जे एकरा द्वारा काव्यक गरिमा आ दिव्यता कें प्रकट कैल जाय। एहि दावा कें ओ अद्‌भुत सफलता सँ पूर्ण करैत छथि।

वस्तुतः कम्ब रामायणक प्रणयन तमिल काव्यक संपूर्ण भविष्य कें मोड़ि देलक आ गत एगारह शताब्दी धरि ई शीर्षस्थ काव्यकृति तमिल जन केर काव्य-चेतना पर अपन गंभीर प्रभाव रखैत आयल अछि। कम्बनक युग सँ आइ धरि विद्वद्‌वर्गक एक सुदीर्घ श्रेणी कम्ब रामायणक पाठ आ व्याख्या सं विशाल जन-समुदाय कें आह्लादित करैत आयल अछि। तमिल राजा लोकनि सँ एहि गायक आ चारण वर्ग कें जीवन-निर्वाहक हेतु भूमिक अनुदान भेटैत रहल छलैन्ह। पड़ोसक केरल, कर्नाटक ओ आंध्रप्रदेश मे प्राप्त प्रस्तर-लेख सँ ज्ञात होइत अछि जे कंब रामायणक व्याख्या ओ रसास्वादन ओहनो जन-समुदायक बीच होइत रहल अछि जनिकर मातृभाषा तमिल नहि थीक। एहि प्रकारें कम्बन लोक-शिक्षा एवं लोक-सांस्कृतिक एक प्रबल वाहक बनि गेलाह। ओ समस्त दाक्षिणात्यक दृष्टिकोण, चरित्र, सौन्दर्य-बोध एवं धार्मिक भावनाक निर्माण कैलन्हि। हुनक रामायण राष्ट्रीय स्मृतिक चिरस्थायी अंग बनि गेल। कवि ओ पंडित लोकनिक समस्त वर्ग द्वारा ओ 'कवि चक्रवर्त्ती' क रूप मे अभिनन्दित भेलाह और इतिहास मे हुनका सर्वोच्च विद्वान कविक स्थान देल गेल। कम्ब रामायणक लोकप्रिय उपदेशक लोकनि मास-मास धरि एहि पर प्रवचन आ उपदेश दैत रहैत छथि आ ई एक विलक्षण चमत्कार थीक जे आइयो बीस-बीस, चालीस-चालीस हजार पुरुष, स्त्री एवं बालकक श्रोता-समूह एहि प्रवचन मे उपस्थित होइत छथि एवं कंबनक छन्द कें सुनि भाव-विभोर एवं रसाप्लावित होइत छथि। एतावता ई सिद्ध अछि जे जे कवि सहस्राब्द सं अधिक काल धरि विशाल जन-मानस कें एना विमुग्ध केलक अछि ओकरा मे कोनो कालातीत शक्ति अवश्य विद्यमान अछि। तैं कम्बन कहियो पुरान नहि पड़ि सकैत छथि, कियैक तऽ ओ हमरा आ समस्त विश्व कें आगामी काल्हुक स्वर सँ सम्बोधित करैत छथि।

कम्बनक काल

कम्वन कोन युग मे भेलाह ई विद्वान सवहिक वीच बहुत विवादक विषय रहल अछि। एक मतें, जे अधिक विश्वसनीय प्रतीत होइत अछि, ओ नवम शताब्दी मे भेल छलाह और दोसर मतें ओ बारहम शताब्दी मे छलाह।

मुदा एहि विषय मे विद्वान लोकनिक वीच मतैक्य अछि जे कंवन तंजोर जिलाक तिरुवज्झुंडूर केर निवासी छलाह और सदायप्पा वल्लल नामक एक भूमि-पति हुनक प्रशंसक एवं संरक्षक छलथिन्ह एवं कम्बन मे जे किछु उत्कृष्ट छल तकरा प्रकाश मे आनवा मे एहि संरक्षकक योगदानक हेतु हमरा लोकनि हुनक कम ऋणी नहि छी।

लोक-कल्पना कम्बनक नाम केर चतुर्दिक अनेक अनुश्रुतिक सृजन कैलक अछि। यद्यपि ऐतिहासिक सामग्रीक रूप मे एहि सभ अनुश्रुतिक कोनो महत्त्व नहि अछि, तथापि ई सभ सामान्य लोक द्वारा अपन सर्वश्रेष्ठ कविक प्रतिभा केर विश्लेषण ओ मूल्यांकन करबाक प्रयास कें सूचित करैत अछि।

एक अनुश्रुतिक अनुसार कम्वन ओट्टकूटर केर समकालीन छलाह जे चोल राजदरबारक साधारण कवि छलाह। ओट्टकूटर अपन छन्दशास्त्रक प्रवीणता आ छन्द-रचना-विधान द्वारा अपन समयक कवि सभ पर बड़ा क्रूर शासन करैत छलाह। राजा हुनका इहो करय दै छलथिन्ह जे ओहि समयक जे कुकवि अपना अज्ञान सँ व्याकरण, वाक्य-विन्यास अथवा छन्द-विधान सम्बन्धी कनेको गलती करै छल तकर ओ मस्तक काटि सकै छलाह। किन्तु कम्वन अपन काव्य-प्रतिभा सँ व्याकरणक स्वीकृत रूढ़ि कें तोड़ि पद-संगतिक एहन नवीन विन्यास प्रस्तुत करैत छलाह जे ओट्टकूटरक रूढ़िगत मापदण्ड सँ ओ बहुत आगू बढ़ि जाइत छल। हुनक एहन प्रतिभाक प्रभाव सँ ओट्टकूटरक महत्त्व घटै लगलैन्ह और ओ चोल राजाक दरबार मे राजकवि बनि गेलाह।

एक दिन राजा दूनू कवि कें रामक महाकाव्य-तुल्य कथा कें कविताबद्ध करबाक आग्रह केलथिन्ह। ओट्टकूटर बहुत तत्परतापूर्वक एहि कार्य मे लागि गेलाह और निम्न कोटिक छन्द सँ युक्त एक श्रमसाध्य रचना करब प्रारम्भ कैलनि।

कम्बन कें ई कार्य प्रारंभ करबाक कोनो हड़बड़ी नहि रहैन्ह, प्रत्युत ओ अपन समय क्रीड़ापूर्ण मनोरंजन मे व्रितवय लगलाह। किछु समयक पश्चात् राजा दूनू कवि कें बजौलथिन्ह और ओहि कार्यक प्रगतिक विषय मे पुछलथिन्ह। कम्बन कहलथिन्ह जे हम छठम सर्ग धरि रचि चुकल छी और एहि क्षण राम-रावणक बीच अंतिम युद्धक पूर्व रामक सेना जे भारत आ लंकाक बीच सेतु निर्माण केने छल ताहि पर लिखि रहल छी। ओट्टकूटर, जे हुनक असत्य गप्प कें सुनि रहल छलाह, जनैत छलाह जे कम्बन प्रथमो सर्ग कें प्रारंभ नहि केने छथि। ओ कम्बन कें चुनौती दैत कहलथिन्ह जे सेतु-निर्माण सम्बन्धी दृश्यक एक छन्द सुनाउ। तुरत विना कोनो परिश्रम केने कम्बन सहज रूपें आशु कवि जकाँ निम्नलिखित छन्दक मूल रूप कें गावि सुना देलथिन्ह :—

कुमुद वानरराज
खसाओल जा प्रवल गिरि
ओहि पार्वत्य समुद्र मे
चलि पड़ल ससरैत
नर्तकक पद-लय क्रमें से
प्रस्थरक कत खंड पर
एना ओ घुरमैत और मथैत
छुरुक्का जे उदधि-सीकर केर छूटल
स्वर्ग-तल धरि उड़य लागल
उछलि पड़ला देवगण
भय उल्लसित एहि मनोरथ मे
पुनः उमड़त सुधा-रस रत्नाकरक मधु कुक्षि सँ !

कम्बन द्वारा बिना कोनो तैयारीक एहि तरहक विलक्षण काव्य-रचना कयला सँ ओट्टकूटर क्षुब्ध भऽ गेलाह। ओ हुनक कविता मे 'थूमी' (वा 'तूमी') शब्दक प्रयोग कें दोषपूर्ण बतौलन्हि। कम्बन कहलथिन्ह जे एहि शब्दक अर्थ 'बुन्न' होइत छैक। ओट्टकूटर आपत्ति कैलथिन्ह जे शुद्ध शब्द 'थूली' (वा 'तूली') थीक 'थूमी' नहि, तऽ कम्बन जोर दैत कहलथिन्ह जे एहि शब्द कें लोक-प्रयोग केर स्वीकृति प्राप्त छैक। ओट्टकूटर कम्बन कें एहि प्रयोगक प्रमाण प्रस्तुत करबाक हेतु ललकारलथिन्ह। तत्क्षण कम्बन अपना प्रतिस्पर्धी एवं राजा दूनू कें नगर मे लऽ गेलाह। ओतय तीनू गोटे एक गड़ेरिन स्त्री कें अपना घरक आगू मे दही मथैत देखलथिन्ह और अपना चारूकात खेलाइत बच्चा सब कें ओकरा कहैत सुनलथिन्ह— "औ बाउ लोकनि, अहाँ सब एतय सँ हटै जाउ नहि तऽ दहीक थूमी ('बुन्न') छिटकि कय पड़ि जायत अहाँ सब पर।" ई कहलाक बाद चमत्कारिक ढंग सँ ओ

मथनिहारि ओतय सँ अदृश्य भऽ गेलि। ओट्टकूटर अनुभव केलनि जे विद्याक देवी सरस्वती स्वयं भेड़ चरौनिहारि स्त्रीक रूप मे कम्बन द्वारा कैल गेल शब्दक आविष्कार कें शुद्ध सिद्ध करबा लय ओतय आयल छलीह।

ओट्टकूटर भग्न हृदयें घर जाय अपना रामायणक सातो काण्ड कें फाड़य लगलाह जकरा ओ एक विशाल शब्द-कोशक सहायता सँ बड़े सावधानी आ परिश्रम सँ गढ़ने छलाह। एहन संयोग जे ठीक ताही काल कम्बन अपन प्रतिस्पर्धीक घर पर पहुँचलाह और देखलथिन्ह जे ओहि रामायणक मात्र अंतिम सर्ग, उत्तरकाण्ड, विन फाड़ल बचल छल। अपन विशिष्ट कृपालुता प्रदर्शित करैत ओ अपन प्रतिस्पर्धीक हाथ कें कसि कय पकड़ि लेलथिन्ह आ हुनका उत्तरकाण्ड नहि फाड़य देलथिन्ह एवं जे रामायण ओ स्वयं रचवा लय छलाह तकर अंतिक काण्डक स्थान मे ओकरे सम्मिलित करबाक अनुमति हुनका सँ प्राप्त कैलन्हि।

ई वांछनीय अछि जे एखनुका समाज जे अपन गांभीर्य पक्ष कें विलुप्त कऽ देवाक खतरा मे पड़ल अछि तकर लाभक हेतु हम कम्बनक संदेश केर पुनरावलोकन करी। कम्बनक दृष्टियें 'जीवन'क अर्थ केर प्रश्न असीमित महत्त्वक प्रश्न अछि और अपन महाकाव्य मे ओ जीवनक क्षण-स्थायी प्रयोजन कें एतेक प्रभावपूर्ण ढंग सँ शान्त कऽ दैत छथि जे ओ हमरा केवल 'चरम प्रयोजन' क स्वर कें निरंतर सुनबाक हेतु सक्षम बनबैत अछि। सत्यं, शिवं आ सुंदरं केर हुनक शक्तिशाली प्रस्तुतीकरण हमर अस्तित्त्वक भावना कें पुष्टि प्रदान करैत अछि, संगहि हमर अहं भावक बद्धमूलता कें विनष्ट कऽ दैत अछि और आनंदक एक नवीन दृष्टि हमरा मे उत्पन्न करैत अछि। आशा कैल जाइत अछि जे कम्बनक एहि अंग्रेजी रूपान्तरण[1] सँ एहि आनन्दक किछु रसास्वादन पाठक कें प्राप्त हेतैन्ह।

1. सम्प्रति मैथिली रूपान्तरण

रामक प्रथम युद्ध

हम सभ कम्वन द्वारा वर्णित रामक प्रथम युद्ध केर शीघ्रता सँ सर्वेक्षण करव। महर्षि विश्वामित्र बहुत किछु राजा दशरथक इच्छाक विरुद्ध राम एवं लक्ष्मण कें हुनका लग सँ निर्जन मरुभूमि दिस लऽ जाइत छथि। पहिने कम्वन तीनू नायक कें जंगलक हरीतिमाक एवं शीतल जलक लहराइत ओहि धारा सभक बीच सँ लऽ जाइत छथि जे पर्वत सँ उपत्यका मे खसैत अछि और मैदान मे किछु काल विलमि कय पुनः कठिन ढालवला चट्टान सँ नीचाँ कूदैत अछि। धाराक एहि तरहें क्रमिक रूपें विलमव आ कूदव हुनका सभ कें नर्तकक पैर मे बान्हल घुंघरूक लयपूर्ण क्वणन केर स्मरण करबैत छन्हि। आब ओ मरुभूमिक ओहन प्रतिकूल, शुष्क एवं निर्जल प्रदेश मे अबैत छथि जतय आर्द्रताक कतहु लेश नहि अछि। एक प्रच्छन्न आत्म-संतोषक भाव सँ भरल कवि मरुभूमिक एहि शुष्कताक तुलना दू प्रकारक परस्पर विरोधी व्यक्ति सँ करैत छथि। प्रथम, परम सत्यक अन्वेषी सँ और दोसर, गणिका सँ—सत्यक अन्वेषी सँ एहि हेतु जे ओ परम सत्यक अपन निष्ठुर अन्वेषण मे संपूर्ण मनोवेग सँ परे चल जाइत अछि और अनासक्त भऽ जाइत अछि, गणिकाक मन सँ एहि हेतु जे ओ अपना आवेगक उपयोग मात्र विक्रयक हेतु करैत अछि और एवं प्रकारें मनोवेगक रंचमात्रो अवशेष सँ शून्य भऽ जाइत अछि। ध्यातव्य अछि जे कवि एतय अपन बुद्धि सँ दू परस्पर विरोधी तत्त्वक जे संयोजन कऽ दैत छथि से यद्यपि कौशलपूर्ण अछि मुदा आश्चर्यजनक कम नहि।

निर्जन मरुभूमिक एही परिवेश मे विश्वामित्र राक्षसी ताड़काक अद्भुत नृशंसतापूर्ण कार्यक वर्णन राम कें सुनेवा लय उद्यत होइत छथि। विश्वामित्रक ई कहबा सँ पूर्वे जे ओ राक्षसी निकट पहाड़ मे रहै छलि ओतय एक विशालकाय स्त्री आइलि जकर शरीर कोइला सन कारी और केश किरमिजी लाल छलैक। ओ प्रज्वलित कज्जल पर्वत जकाँ लगैत छलि। ओकर भौंह केर छोर क्रोध सँ कम्पायमान छल। ओ अपन विशाल गुफातुल्य मुह कें बन्न कय ठोर कें सटा लेने छलि। ओ गर्दनि मे हाथीक माला पहिरने छलि जाहि मे हाथीक जोड़ा सभक

सूँढ़ एक दोसरा सँ गूथल छल। ओ एक गंभीर घोष कैलक जाहि सँ स्वर्गलोक आ अन्तरिक्षे नहि अपितु सातो लोक काँपि उठल। ओहि घोषक आगू स्वयं मेघ-गर्जना डरें निस्तब्ध भऽ गेल। कवि निम्नलिखित छन्द मे ओहि राक्षसीक दुर्दमनीय शक्तिक वर्णन करैत छथि :

संचरित मेघदल कें
कसि कय ओ पकड़ि हाथ सँ दावि देलक
आ गीड़ि गेलि
पुनि पदाघात सँ भूधर कें
घूरा-घूरा कय उड़ा देलक
निज दीर्घ अधर कें काटि खूब
दन्तावलि सँ, प्रत्येक दन्त जनु अर्धचन्द्र,
पुनि अपन त्रिशूल उठा
गर्जन स्वर मे घहराइलि—
"ले, एकरा अपना छाती पर तों !"

विश्वामित्र सोचलैन्ह जे राम कें अपन कार्य करबाक अवसर उपस्थित भऽ गेल छन्हि और तैं ओ हुनका अनुनय केलथिन्ह—"हे रत्नविभूषित राम ! जतेक दुर्वृत्तिक कल्पना कैल जा सकैछ ई राक्षसी ताहि मे सँ किछुओ नहि छोड़ने अछि। ई हमरा सभकें एहि हेतु जीवित राखने अछि जे ई बूझैत अछि जे हम सभ ततेक जर्जर छी जे एकरा खैबा योग्य नहि रहि गेल छी। यैह टा एकर संयम छैक। की पीठ पर लटकैत वेणीवाली एहि राक्षसी कें अपने स्त्री वा कुमारी बूझि सकैत छियैक ?"

बह्नि रूपा ओ राक्षसी अनुमान कऽ लेलक जे ऋषि रामक कान मे की कहि रहल छलथिन्ह और ओ अपन श्वेत आँखि सँ अग्नि-स्फुल्लिग छोड़ैत अपन त्रिशूल-रूपी लाल अग्नि-शिखा कें ऋषि दिस फेकि देलक—

नहि देखि सकल क्यो कोना राम।
शर छूबि, झुकौलन्हि धनु ललाम॥
पर देखल सभ भय चूर्ण-चूर्ण।
राक्षसिक त्रिशूल खसल विशीर्ण॥
साक्षात् मृत्यु तरु सँ जकरा॥
औ तोड़ि, देने छलि धरणि गिरा॥

तत्पश्चात् ओ राक्षसी जकर रंग सघन अंधकार सदृश छल, ध्वनि-वेगें प्रस्थर-खंडक एते वर्षा केलक जे कि समस्त समुद्र-क्षेत्र कें पाटि सकै छल। किंतु

अपन बाणक वर्षा द्वारा वीर राम तकरा विफल कऽ देलन्हि। तत्पश्चात् राम एके टा बाण छोड़लन्हि जे कठोर शब्द जकाँ तीक्ष्ण ओ उत्तप्त छल और कोनो पुण्यात्माक दुष्टक प्रति देल गेल सत्परामर्श जकाँ ओकर हृदय कें आर-पार वेधि देलक। ओकर वेधल हृदय सँ जे रक्तक-धार उमड़ल से समस्त मरुभूमि पर पसरि गेल। एना बूझि पड़ै छल जेना आकाश सँ सूर्यास्तक संध्यारूपी गुलाब छिटकि कय पृथ्वी पर बिखरि गेल हो!

रामक एहि प्रथम युद्ध मे यमराज, जे राक्षसकुलक रक्तपान करबा लय ललचा रहल छलाह, अपन ठोर कें एना चटकौलन्हि मानू हुनका राक्षस-रक्त केर पूर्व-स्वाद प्राप्त भऽ गेल होन्हि।

महाबालिक कथा

ताड़काक संहारक उपरान्त विश्वामित्र अपन संरक्षित दुहू किशोर कें मरु-भूमि पार करा कय एक रमणीय उर्वर प्रदेश मे आनैत छथि। राम पूछैत छथिन्ह जे ओ देश किनक थिकैन्ह। एहि तरहें कम्बन कें विश्वामित्र द्वारा एक नाटकीय लघु कथा प्रस्तुत करयबाक अवसर भेटैत छैन्ह।

ओ कहैत छथि, कोनो युग मे ई देश महा बलशाली महाबालि द्वारा शासित छल। अपना पराक्रम सँ ओ स्वर्ग आ पृथ्वी दुहू कें अपना शासनक अन्तर्गत कऽ लेने छलाह। ओ अपना शौर्यक अभिवृद्धि करबा लय एक एहन यज्ञ करबाक निश्चय कैलन्हि जे देवतागणो नहि कऽ सकल होथि। तैं ओ अपना राज्य कें पुण्यात्मा लोकनि सभ पर छोड़ि स्वयं महान त्यागपूर्ण तपस्या मे लागि गेलाह। देवतागण हुनक योजना कें बूझि भगवान विष्णु लग गेलाह और हुनका प्रार्थना केलथिन्ह जे ओ महाबालिक तप कें ध्वस्त कऽ देथु जाहि सँ ओ महाशक्ति नहि प्राप्त कऽ लेथि। भगवान विष्णु तुरत एहि प्रार्थना कें स्वीकार कैलन्हि।

अखिल ब्रह्माण्डक स्रष्टा भगवान एक बामनक रूप मे पृथ्वी पर अवतार लेलन्हि। जेना अति विशाल रूप मे विकसित होमऽवला अश्वत्थ एक छोट बीज मे छिपल रहैछ, तहिना विश्वक अनन्तता एहि बामनक लघु रूप मे निहित छल।

बामन सम्पूर्ण ज्ञान एवं बुद्धि कें प्राप्त कैलन्हि। ध्यान सँ हुनक रूप प्रोद्भासित भऽ उठल। यज्ञोपवीत धारण कय, अपन जिह्वा सँ दिव्य मंत्रक उच्चारण करैत और हाथ पर जरैत अग्नि-कण नेने ओ महाबालिक सभा मे गेलाह। महा-बालि हुनक सत्कार कय कहलथिन्ह जे अपनेक आगमन सँ हम सौभाग्यशाली भेलहुँ।

महाराज हुनका पुछलथिन्ह—"अपनेक की सेवा कैल जाय?" बामन कहल-थिन्ह—"यदि अपने कें तीन धाप भूमि हो तऽ हमरा प्रदान कैल जाय।" राजा

कहलथिन्ह—"स्वीकृत अछि।" किन्तु हुनक गुरुमंत्री शुक्राचार्य राजा कें रोकल-थिन्ह और कहलथिन्ह—"हे महाराज, हिनक रूप कपटपूर्ण अछि। हिनका मात्र एक वामन नहि बूझू। सावधान, ई ओ विराट पुरुष छथि जे सुदूर अतीत काल मे कहियो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड और तकरो सं परे समस्त सृष्ट कें उदरस्थ कऽ लेने छलाह।"

राजा, जनिक एक मात्र आदर्श यैह छलैन्ह जे ओ प्रत्येक याचक कें अनुद्विग्न मनें मुक्तहस्त दान देथि, कहलथिन्ह—"सोचू, स्वयं भगवानक याचना करैत हाथ मे दान अर्पित कय हम कते कल्याणक भागी हैब!" प्रगाढ़ भाव-प्रवणता एवं छन्द-लालित्य सँ भरल कविता मे, जे अनुवादकक सम्पूर्ण क्षमता कें चुनौती दैत अछि, कम्बन महावालिक मुंहें निम्नलिखित पंक्ति कहबैत छथि :

नहि मृतक मृत
पूर्ण मृत ओ
जीवितो रहि
मात्र भिक्षा
हेतु प्रसृत
कर जकर अछि
और के अछि
सतत जीवित
दानरत कें
छोड़ि, सुनु हे
बन्धु, मरिकय
जे अमर अछि?

एहि शब्दें महावालि अपन मंत्रीक परामर्श कें नहि मानलन्हि आ वामन कें आज्ञा देलथिन्ह जे ओ तीन डेग भूमि नापि कय लऽ लेथि। ताहि समय मे पंजीयन (रजिस्ट्रेशन) कार्यालयक अभाव मे सम्पत्तिक हस्तान्तरण दाता द्वारा आदाताक हाथ मे जलक अर्घ्य[1] देला सँ भऽ जाइत छल।

ओ अनन्त परमेश्वर अपन वामनी हाथ कें पसारि देलन्हि जाहि पर राजा जल अर्पित कैलन्हि। जखने जल सँ हुनक हाथक स्पर्श भेलैन्ह ओ वामन नम्हरो सँ नम्हर होमय लगलाह। दर्शक-समूह ओहि वामन कें पहिने अपन स्वाभाविक मानवीय ऊँचाइ प्राप्त करैत देखि हर्षित भेल मुदा जखन ओ ओहू सँ ऊँच बढ़ैत

1. कुश, तिल एवं जल लऽ कय जे दान देल जाइत अछि।

गेलाह एवं स्वर्ग-मंडल कें छूलाक पश्चात् ओकरो सँ ऊच भेल चल गेलाह तऽ ओ भयभीत भऽ गेल।

चरण जे विस्तीर्ण रोपल
दीर्घतर भय
छापि लेलक पूर्ण पृथ्वी
पृथ्वियो कें कऽ देलक लघु
उत्क्रमित जे चरण दोसर
पार कय स्वर्लोक
ओकरो निज विशाल प्रसार मे
कि समेटि घुरि आयल, मुदा
नहि वचल कनिको स्थान
कत्तहु राखवा लय !

कथाक मुख्य तत्त्व कें हृदयंगम करवैत महर्षि आगू कहलैन्ह जे भगवानक नीचाँ घुरल चरण महावालिक माथ पर आवि गेल जे हुनक अहंकार केर पूर्ण परिहार कऽ देलक और हुनका परम तत्त्व मे एकाकार कऽ देलक।

कम्वनक सौन्दर्य-चेतना तावत् धरि सन्तुष्ट नहि होइत अछि यावत् एहि कथाक अन्त एक उत्कृष्ट उपसंहारक द्वारा नहि कैल जाइत अछि। तैं ओ आगू कहैत छथि जे भगवान विष्णु महावालि कें अपना मे लीन कय एवं हुनक साम्राज्य कें देवतागणक वीच बाँटि कय विश्राम करवा लय अपन धाम क्षीर-सागर मे चल जाइत छथि :

क्षीर समुद्रक शान्त वक्ष पर।
शयनशील हरि नील वरण वर॥
लक्ष्मी जनिक वल्लभा अनुपल।
चापथि चरण स्पर्श दय कोमल॥
लोक-लोक धरि चरण हुनक जे।
विचरि कठोर रुक्ष भय गेले॥
पविते लक्ष्मी-करक परस से।
सकुचि अरुण भय बनल सरस से॥

उत्कृष्ट काव्यक एहने नमूना सँ कवि तीव्र भाव-प्रवणता मे अनन्त शक्ति आ अनन्त कोमलताक विरोधाभास कें एके ठाम व्यक्त करबा मे सफल भेल छथि।

रामक पूर्वानुराग

एहि प्रकारक कथा सब कें सुनैत राम एवं लक्ष्मण विश्वामित्रक अनुगमन करैत मिथिला मे अबैत छथि जतय रामक सीता संग परिणय हेबा लय छैन्ह।

वाल्मीकि रामायण मे एहि युगल जोड़ी मे सँ क्यो विवाहक पूर्व एक दोसरा पर दृष्टिपात नहि केने छथि। वस्तुतः वाल्मीकिक सीता जखन अनसूया कें अपन विवाहक कथा सुनबैत छथिन्ह तऽ कहै छथिन्ह जे ओ विवाहक समय मे मात्र छौ वर्षक छलीह। तैं ओहि वयस मे पूर्वानुराग हेबाक कोनो संभावना नहि छल।

एकरा विपरीत कम्बन विवाह ओ धनुर्भंगोक पूर्व एहि युगल कें एक दोसराक प्रति प्रेमक भावावेश मे एवा योग्य विकसित बनाय एहि कथाक बीच असाधारण गीतात्मक माधुर्य सँ परिपूर्ण प्रेमक दृश्य केर सृजन करैत छथि।

कवि सीताक उदात्त सौन्दर्य-गुणक वर्णन करबा मे अपना शृंगार-रसक संपूर्ण निधि कें लुटा दैत छथि। कम्बनक अनुसार प्रतीत होइत अछि जे सीताक जन्मो सँ पूर्वे सौन्दर्य-देवी अपन पूर्ण पराकाष्ठा कें प्राप्त कय जीवक रूप लेबा सँ पूर्व एक तत्त्व बनि चुकल छलीह। अनेकानेक युग सँ सृष्टिक अनन्त सौन्दर्य सँ सौन्दर्यक विविध रूपक सार तत्त्व कें ग्रहण ओ आत्मसात् करैत हुनक क्रमिक विकास भेल छल। सौन्दर्यक चरम रूप कें आत्मसात् कऽ लेलाक बाद ओहि देवी कें कोनो नवीन तत्त्व ग्रहण करबा लय नहि रहि गेलैन्ह और तैं हुनक विकास-प्रक्रियाक इति भऽ गेल। किन्तु, देखू, जखन सीताक जन्म भेलन्हि तऽ सौन्दर्यक रमणीयता एक नऽव शोभा सँ प्रोद्भासित भय पहिनहुँ सँ अधिक चमत्कृत भऽ उठल।

जखन विश्वामित्र आ लक्ष्मणक सँग राम मिथिलाक वीथि मे विचरण करैत छलाह तऽ हुनका महाराज जनक केर महलक परिखा मे पड़ैत प्रतिबिम्ब सँ सीताक एहि सौन्दर्यक एक झाँकी अकस्मात् प्राप्त भेलन्हि। जखन ओ ओहि प्रतिबिम्ब सँ दृष्टि कें हटाय ऊपर उठौलन्हि तऽ स्वयं सीता कें महलक छज्जा पर ठाढ़ि देखलन्हि। प्रेम मे दुहूक जे सूक्ष्म मानसिक स्तर पर एकीकरण भेल कम्बन तकर बहुत आकर्षक वर्णन करैत छथि :

मिलल नयन सँ नयन युगल द्रुत।
दुहुँक रूप दुहुँ छकि-छकि पिवइत॥
थकित भाव-गति चरम प्रगति मे।
राग-विराग मिलल अनुगति मे॥
कुँवर कुँवरि कें देखि छकित छथि।
कुँवरि कुँवर छवि पर अर्पित छथि॥

विश्वामित्र ओ लक्ष्मण, जे राम सँ पाछू पड़ि गेल छलाहु, रामक निकट आबि गेलाह। राम अपन भाव-मग्नता सँ जगलाह और विमन भेल विश्वामित्रक अनुगमन करैत महाराज जनकक महल मे पहुँचलाह। सीताक मन, आत्मिक परिपूर्णता आ समस्त चारुता रामक काया केर चतुर्दिक् व्याप्त भऽ गेल छल आ हुनक अनुगमन कऽ रहल छल।

रामक मूर्ति, जकरा सँ सीताक आत्मिक भाव भरल दृष्टि आवद्ध भऽ गेल छल, जखन हटि जाइत अछि तऽ सीताक मन विषम रूपें विखरि ओ भटकि जाइत अछि।

चन्द्रोदय रामक हेतु हुनक लालसा कें और व्याकुल वना देलकन्हि। शय्या पर विछाओल कमलक फूले सँग ओ सूखय आ मुरझाय लगलीह। हुनका देह पर लेपल शीतल चंदन अग्निक तरल प्रवाह जकाँ हुनका झरकावय लगलैन्ह। एहि मधुर पीड़ाक सृजन करैत मानू कम्वन सीताक मानस मे प्रवेश कऽ जाइत छथि और ई प्रवल उद्गार प्रकट करैत छथि—"की प्रेम-रोग केर कोनो औषधि भऽ सकैत अछि?"

एहि बीच ई त्रिमूर्ति जनकक राजमहल मे पहुँचैत अछि। ओतय राम कें विश्राम करवा लय ऊपर छज्जा पर अलग एक कक्ष देल जाइत छन्हि। राम कें असकर छोड़ि विश्वामित्र आ लक्ष्मण नीचा महलक एक कक्ष मे एक दोसराक सँग रहैत छथि। राम प्रेम-भावना सँ एखन धरि अनवगत छलाह। सीताक ध्यान करैत ओ संध्याक अंधकार सँ घिरि जाइत छथि जे कि हुनक भावना कें तीक्ष्णतर वनवैत अछि। हुनक ई दशा चन्द्रमाक उदय सँ और विषम भऽ जाइत छन्हि। की ओ असकर छथि? कंवन कहैत छथि—"नहि, एकान्त, अन्धकार, चन्द्रमा, पीड़ा मे घुलैत स्वयं हुनक अपन अन्तर एवं हुनका सीता हुनका संग मे छनि। रामक व्याकुल उच्छ्वास बहार भऽ रहल छनि:

रथ सम शोभित कटि देश हुनक।
युग नयन दीर्घ अन्तर वेधक॥
उत्तुंग होइत ओ दुहु उरोज।
हिय प्रगटय खींचय स्मितिक ओज॥
की निठुर मार कें मारक हित।
छै एते कवच केर काज अमित?

अन्तहीन प्रतीत होमऽवला ओहि रातिक अधिकांश समय राम एही प्रकारक पीड़ाक आलोड़न-विलोड़न मे वितौलन्हि और तकरा बाद सूति रहलाह। वाल्मीकि द्वारा कैल गेल ईश्वरक रूप मे रामक वर्णन केर विपरीत कंवन ओहि मानवीय व्यथा सँ अभिभूत होइत छथि जे राम कें उत्पीड़ित करैत छनि। प्रेम-

व्यथा सँ विह्वल राम स प्रेरणा ग्रहण कय कम्वन ईश्वरक कृपापूर्ण अनुग्रहक चित्रण करैत छथि, जे मानवक प्रति करुणा सँ द्रवित भय पृथ्वी पर अवतीर्ण होइत छथि; देश आ काल सँ अपना कें बन्हैत छथि और 'मानव'क उद्धार करवाक हेतु स्वयं पीड़ाक भोक्ता बनैत छथि। रामक प्रातःकालीन जागरण कें कवि एहन शब्दावली मे गवैत छथि जकर सौन्दर्य अनूदित नहि कैल जा सकैत अछि :

स्वेद-सनल रवि
रश्मिचक्र-संचालित रथ पर समासीन
पश्चिम सागर मे डूवि, स्नात
छथि उदित पूर्व मे शान्त सौम्य
कोमल किरणक कर सँ
राघव केर चरण छूबि
जगबै छथि हुनका निद्रा सँ
दुर्घट-असीम-भासित पीड़ा केर निशा-सागरक तीर ठाढ़
छथि स्वयं सच्चिदानंद रूप
जे चिर अनन्तता-सिंधु मध्य
जाज्वल्यमान शत-कोटि तेज-पर्यंकोपरि
निज शयन छोड़ि
दिक्कालक सिमटल शय्या केर
छथि शूल फूल सम केने वरण !

जखन एहि अप्रतिम पद्य केर मूल कें क्यो पढ़ैत अछि तऽ एहि मे ओकरा कोटि महासागरक ध्वनि उमड़ैत अनुभूत होइत छैक। ई कविता एहन दिव्य संगीत सँ अनुस्यूत अछि जे एकरा सँ उद्‌भूत लय पाठक कें अभिभूत कऽ दैत छैक और अभिभूत पाठक अपना कें कार्य-कारणक सम्पूर्ण बन्धन सँ मुक्त पबैत अछि।

धनुर्भंग

मिथिलाक महाराजा जनक ई प्रतिज्ञा केने छलाह जे ओ अपन पुत्री सीताक विवाह ओकरे सँ करताह जे हुनका लग राखल विशाल शिव-धनुष कें झुका सकत आ ओहि पर प्रत्यंचा चढ़ा सकत। अनेको वीर राजा लोकनि प्रयत्न कऽ चुकल छलाह और ओकर प्रत्यंचा कें चढ़ेबा मे असफल भऽ चुकल छलाह।

ऋषि विश्वामित्र महाराज जनक कें रामक परिचय दैत छथिन्ह और धनुर्विद्या मे हुनक असाधारण कौशलक विषय मे हुनका कहैत छथिन्ह। ओ ई

117133
9.12.04

मंत्रणा दैत छथिन्ह जे ओ आव हुनक संरक्षित राम कें धनुष चढ़ेबा लय अवसर देथि ।

जनक एक बेर राम कें आ पुनः ओहि दुर्जेय धनुष कें देखलन्हि । ओ निराशा-आ शंका सँ भरि गेलाह । एहन व्रत ठानबाक अपन दुस्साहसक हेतु ओ अपना कें धिक्कारलैन्ह और सीताक भविष्य लय चिन्तित भऽ उठलाह ।

किंतु विश्वामित्र रामक दिस मर्मपूर्ण दृष्टि-निक्षेप कैलन्हि ।

उठि ठाढ़ भेला श्री राम जेना
यज्ञानल सँ लपकैछ
अग्नि केर शिखा-जिह्व
घृत केर आहुति कें छूबा लय !
सुरगण कैलन्हि उद्घोष
"धनुष अछि टूटि गेल !"
ऋषि-मुनि आशीषोच्चार केलन्हि !
छल धनुष मेरु सम प्रस्थापित
आयास रहित गति सँ ओकरा
सहजे उठाय लेलन्हि कि जेना
मृदु कुसुम-मालकें सीता केर
गर मे पहिरावय उठा लेथि !
अपलक नेत्रें सभ देखि रहल
नहि देखि सकल तैयो क्यो जन
पदतल कसि कय धनु रोपि राम
कौशल सँ कोना झुकाय देल
सभ देखल हुनका धनुष लैत
सभ सुनलक धनु कें भंग होइत !

शंका-निवारण

महल मे बैसलि सीता रामक द्वारा कैल गेल धनुर्भंग सँ अनवधान छलीह । ओहि अज्ञात किशोरक रूप, जे हुनका प्रेम सँ विद्ध कऽ देने छल, हुनका हृदय पर अमिट रूपें अंकित भऽ गेल छल ।

जखन प्रेम प्रताड़ित सीता राम कें प्राप्त करबा लय व्याकुल कामना कऽ रहल छथि, हुनका सेवा मे सदा उपस्थित रहनिहारि परिचारिका नीलमलै अत्यन्त वेग सँ हुनका लग अबैत अछि । ओकर हीरकजड़ित कर्णफूल सूर्यक प्रकाश मे चमकैत इन्द्रधनुषी ज्योतिक सृजन करैत छल । ओकर साड़ी ढील भऽ कय उड़ि

रहल छलैक और ओकर खुजल केश जेना ओकरा खेहारि रहल छलैक। ओ आनन्द सँ विभोर भय चिकरैत अछि, गवैत अछि और इहो बिसरि जाइत अछि जे ओकरा सीता कें प्रणाम करबाक छैक या कोनो शुभ सन्देश सुनेबाक छैक।

सीता नीलमलै कें पुछै छथिन्ह—"कोन आनन्द तोरा हृदय मे भरि एलौक अछि? किछु हमरो तऽ खबरि सुना!" तत्क्षण ओ उत्तेजित परिचारिका संज्ञा मे अबैत अछि, सीता कें प्रणाम करैत अछि और तखन कहैत अछि जे कोना राजकुमार राम शिव-धनुष कें खेलौना जकाँ उठौलन्हि आ तोड़ि देलन्हि। ओ आगू कहैत अछि—"हुनक आँखि कमल सन छन्हि और ओ अयोध्याक राजा दशरथक पुत्र छथि और हुनका सँग हुनक अनुज लक्ष्मण एवं ऋषि विश्वामित्र सेहो छथिन्ह।" रामक सँगहि दू व्यक्तिक चर्चा भेला सं सीताक शंका समाप्त भऽ जाइत छन्हि। हुनका विश्वास भऽ जाइत छन्हि जे धनुषक भंजन केनिहार व्यक्ति हुनक चितचोर छोड़ि अन्य क्यो नहि छथि। ई विश्वास सीता मे महत्त्वपूर्ण शारीरिक परिवर्त्तन उत्पन्न करैत अछि; हुनक शरीरक ओ भाग जे स्वर्ण कटिबन्ध सँ आवेष्टित अछि, सकुचैत आ उभड़ैत अछि जाहि सँ हुनक कटिबन्ध दू खंड भऽ टूटि जाइत अछि। कम्बनक भू-कम्पन-ग्राही सूची अपन स्पन्दनपूर्ण सूक्ष्मग्राहिता सँ प्रत्येक गुप्त कम्पन कें अंकित करैत अछि।

विवाहक निमंत्रण

मधुर आशाक एहि मनःस्थिति मे सीता कें छोड़ि कंबन हमरा सभ कें जनक लग लऽ जाइत छथि, जनिक आह्लाद धनुर्भंगक विस्फोटपूर्ण ध्वनियो सँ अधिक छल। ओ विश्वामित्र कें पुछैत छथि जे विवाह-संस्कार तुरन्ते सम्पन्न कऽ देल जाय अथवा राजा दशरथक आगमनक पश्चात् कैल जाय। ऋषिक आज्ञा पाबि जनक दशरथ कें निमंत्रण पठबैत छथि।

मिथिलाक दिस

जखन महाराज दशरथ अपना सँगक समाज सहित मिथिलाक सीमा पर पहुँचला, महाराज जनक अपन परिजनक संग हुनक अगुआइ कैलथिन्ह और हुनका राजधानी मे आनलथिन्ह। तखन नगर मे रामक शोभायात्राक आयोजन भेल जाहि मे रामक फूल आ आभूषण सँ शृंगार कैल गेल और हुनका रथ पर चढ़ाय मिथिला मे चारू दिस भ्रमण कराओल गेल।

शोभा-यात्रा विवाह-भवनक सम्मुख समाप्त होइत अछि जतय दू ऋषि वशिष्ठ आ विश्वामित्र प्रतीक्षा कऽ रहल छथि। राम विवाह-भवन मे प्रवेश करैत छथि और ओ दुहू ऋषिक चरण मे प्रणिपात करैत छथि। हुनक ग्रीवा मे हीराक एक

माला छन्हि जे हुनक प्रणिपात करबाक काल झूलैत अछि और हुनक श्याम शरीर पर प्रकाशक आभा छिटकावैत अछि। विपरीत रंगक ई संयोजन कवि कें मुग्ध करैत अछि और ओ कहैत छथि जे राम पावसक मेघ जकाँ छथि जे बड़े शान्ति सँ दुहू ऋषिक चरण मे स्थिर भऽ रहल अछि—एहन मेघ जकाँ जे छिटकैत दामिनी सँ दमकि रहल हो।

रंग-व्यंजक शब्दावली, विम्वग्राही योजना और सूक्ष्मातिसूक्ष्म सारगर्भित विवरणक द्वारा कम्बन ने स्थिर चित्रक, ने चल-चित्रक, ने टेकनिकलर फिल्मेक सृजन करैत छथि, प्रत्युत एहन त्रि-आयामी नाटक केर सृजन करैत छथि जे लगैत अछि जेना हमरा सम्मुख खेलल जा रहल हो।

प्रेमीक मिलन

सब पाहुन लोकनि जखन अपन आसन ग्रहण कऽ लैत छथि तऽ वशिष्ठ जनक कें वधू कें मँगयबाक संकेत करैत छथिन्ह। जखन सीता मंथर गतियें प्रवेश करैत छथि तऽ प्रतीत होइत अछि जेना हुनक आभरण सँ बहुवर्णी चित्र प्रकटित भय भूमि पर विचरण कऽ रहल हो। एहन सन जेना कि माता पृथ्वी ई बूझि जे भूमिक कठोरता सीताक चरणक हेतु कष्टकर हेतन्हि हुनका लै बहुंरगी पुष्पदलक गलीचा कें भूमि पर पसारि देलन्हि अछि।

छोट-छोट प्रभावशाली नाटकीय झलक दैत कम्बन प्रत्येक प्रमुख पाहुनक व्यक्तित्त्वक स्पष्ट चित्र सीताक आगमन पर व्यक्त हुनक उद्‌गार द्वारा प्रस्तुत कऽ दैत छथि। मधुर रागिनी सदृश वधूक निकट अबिते, ऋषिगण एवं राम कें छोड़ि, सभक हाथ प्रणामक मुद्रा मे अनायास ऊपर उठि जाइत अछि, कियैक तऽ कविक मत छन्हि जे चिन्तनशील मन सँ संयुक्त सब प्राणी सीता कें परमेश्वरी बूझैत छल और मन जे बूझैत अछि शरीर तुरत तकर अनुपालन करैत अछि।

यद्यपि नीलमलै द्वारा देल गेल रामक वर्णन सीताक हेतु बहुत आश्वासनदायक छल, तथापि हुनक अभिज्ञानक संबंध मे सीताक मन मे किछु शंका शेष रहि गेल छलैन्ह। मुदा हुनका एकटक देखब निर्लज्जताक द्योतक होइत, तैं अपना कंकण कें ठीक करबाक स्वाँग करैत सीता अपन नेत्र-कोण सँ एक उड़ैत नजरि हुनका पर दैत छथि। आब हुनका प्रतीति भऽ जाइत छन्हि जे वस्तुनिष्ठ दृष्टियें ओ जनिका देखि रहल छथि से प्रत्येक प्रकार सँ ओहि रूप सँ मिलि रहल छल जकरा आत्म-निष्ठ रूपें ओ अपना हृदय मे जोगा रहल छलीह।

क्षणक ओहि लघु अंश मे जा धरि ओ हुनका निहारैत छथि रामक नीलमयी शोभा धारा बनि सीताक विशाल नयन मे प्रवाहित भऽ जाइत अछि।

एही क्षण मे विश्वामित्र दशरथक अनुरोध पर घोषित करैत छथि जे विवाह काल्हिये सम्पन्न कैल जायत।

भोग आ योगक समन्वय

दोसर दिन प्रातः काल विवाह-संस्कारक हेतु आवश्यक प्रत्येक सामग्रीक सँग वशिष्ठ प्रस्तुत भऽ जाइत छथि।

पुष्पाभूषण सँ अलंकृत दुलहा ओ दुलहिन विवाहक वेदी पर आसन ग्रहण करैत छथि। जखन राम आ सीता सटिकय सँग-सँग बैसैत छथि तऽ कम्बन हमरा कान मे नहु स्वरें कहैत छथि जे दुहूक दृश्य भोग आ योग केर गरिमापूर्ण समन्वय सन भासित होइत अछि। कविक विश्वास छन्हि जे पार्थिव सुख ओ पारमार्थिक आनन्द मे कोनो अन्तर्निहित विषमता नहि अछि प्रत्युत दूनू कें एक सामंजस्यपूर्ण समष्टि मे एकीकृत कैल जा सकैत अछि।

एहि परिणयक सँग विश्वामित्रक कार्य पूर्ण भऽ जाइत छनि। महाकाव्य सँ हुनक निर्गमन कें कवि एहन गीत सँ समायोजित करैत छथि जाहि मे संगीत-वैविध्य केर पूर्णता अछि और जाहि सँ विश्वामित्रक परितोष ओ आनन्दातिरेक केर भाव अभिव्यक्त होइत अछि :

राम राजवर राजवधू सीता केर जोड़ा।
परमानन्दक अमित क्रोड़ करइत अछि क्रीड़ा॥
एक दशरथक पुण्य-पराक्रम प्राण-मूल छथि।
दोसर जनकक स्नेह-पुष्ट पिक भाव फूल छथि॥
दुहुँ कें विश्वामित्र देलनि आशीष वेद-विधि।
स्वयं उत्तराखंड हेतु प्रस्थित कि तपोनिधि॥
जतय ऋषिक आश्रम नभचुम्बी उच्च शिखर पर।
स्वर्ण शैल जे मेरु ततय राजित अछि सुन्दर॥

विश्वामित्रक ई अन्तिम चित्र दय कवि एक एहन नायक कें विदा करैत छथि जे एहि महाकाव्यक हेतु एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सम्मिलन करेबा मे अपन विशिष्ट योगदान देलन्हि अछि।

अयोध्या काण्ड

आब पर्दा उठैत अछि अयोध्याकाण्ड पर, जाहि मे कुबरी मंथरा आ महाराज दशरथक सभ सँ छोट रानी कैकेयीक दुरभिसंधि सँ राम कें राजमुकुट सँ वंचित कऽ देल जाइत छन्हि । रामक वन मे निष्कासित भेला सँ रावण द्वारा सीताक अपहरणक एवं अंत मे पाप एवं अत्याचारक समूल विनाशक भूमिका तैयार होइत अछि ।

कम्बन अयोध्याकाण्डक प्रारंभ एक एहन विलक्षण प्रार्थना-गीत सँ करैत छथि जे एहि भाषाक कोनो उत्कृष्ट रचना जकाँ स्वयं मे पूर्ण अछि :

सर्व दृश्य आ स्थूल वस्तु जे सूक्ष्म शून्य सँ बहिर्भूत अछि ।
देश-काल केर चिर प्रसार मे व्यक्त और सर्वत्र व्याप्त अछि ।।
ईश्वर एहि मे निहित सर्वगत, रहित सर्व सँ पुनि छथि ओहिना ।
आत्मा ओ चैतन्य देह मे रहितो विलग स्वतंत्र कि जहिना ।।
वैह अखंड अनन्त ब्रह्म बनि योद्धा राजकुमर-राजेश्वर ।
नाचि रहल छथि रानि विमाता ओ कुबरी पापिनी क्रूर कर ।।
त्यागि राज्य ओ राजमहल से करथि वनगमन सिंधु-तरण पुनि ।
वेद-धर्म-सुर-नर-मुनि-रक्षण हित राक्षस कुल दमन-दलन जनि ।।

अनुवादक सुखद यांत्रिक प्रक्रिया मे उपर्युक्त अनुवाद जाहि मूल पंक्तिक रूप ओ लय कें ध्वस्त करैत रचल गेल अछि से वस्तुतः वैज्ञानिक विचार कें धार्मिक भावना ओ ईश्वर-साक्षात्कार सँ अनुस्यूत करबाक कम्बनक असाधारण क्षमता केर प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि ।

मंत्रिमंडलक बैसकी

मिथिला सँ घुरलाक पश्चात् महाराज दशरथ अयोध्या मे बहुत दिन धरि आनन्द सँ समय बितबैत छथि । अपन सुयोग्य ओ सद्गुण-सम्पन्न पुत्र सभक विवाह सम्पन्न भेला सँ दशरथक ऐहिक जीवन पूर्णता एवं समृद्धि कें प्राप्त करैत

अछि। एक दिन ओ हाथी पर सवार भय मंत्रणा-कक्षक दिस प्रस्थान करैत छथि और आदेश दैत छथि जे हुनक मंत्रिगण ओतय आबथि। हुनक प्रधानामात्य ऋषि वशिष्ठ सभ सँ पहिने अबैत छथि। अन्य मंत्रिगण अग्रताक क्रम मे मंत्रणा-कक्ष मे प्रवेश करैत छथि और प्रथम वशिष्ठक सम्मुख नमन करैत छथि, तत्पश्चात् दशरथक अभ्यर्थना करैत छथि। वशिष्ठ एवं दशरथक द्वारा हुनका सभ कें अभिवादन कयलाक पश्चात् ओ सब अपन पूर्व-निर्धारित आसन ग्रहण करैत छथि। हुनका सब कें सद्भावपूर्ण दृष्टि सँ देखैत महाराज दशरथ अपन ई इच्छा जनबैत छथि जे ओ अपन पवित्र पूर्वज लोकनिक अनुकरण करय चाहैत छथि जे अपन वृद्धावस्था मे पहुँचि अपना पुत्र कें राज्य समर्पित कय आध्यात्मिक ज्ञानक अन्वेषण मे वन प्रस्थान कऽ जाइत छलाह।

दशरथ मंत्रि-परिषद कें आग्रह करैत छथि जे ओ हुनक प्रस्ताव पर विचार करय और अपन परामर्श दियै।

वशिष्ठ जे कि महाराजक शब्द कें ध्यानपूर्वक सुनि रहल छलाह ओहि प्रस्तावक पाछाँ जे विवेक एवं बुद्धि छल, मंत्रिगणक जे सर्वसम्मत विचार छल एवं जनताक जे हित छल ताहि दृष्टियें ओहि प्रस्ताव पर विचार करैत बजलाह :

अहो, अहँक ई शुचि कर्त्तव्य।
अहँक उच्चते सम अछि कथ्य॥

हुनक प्रस्ताव पर वशिष्ठक स्वीकृति सँ दशरथकें अपार आनन्द होइत छन्हि।

वरिष्ठ राजनेता लोकनिक मुँह पसरल पत्र जकाँ लगैत छल जाहि पर स्वीकृतिक भाव सुस्पष्ट रूपें लिखल छल। दशरथक आग्रह पर सुमंत्र राम कें अनैत छथि। राम श्री वशिष्ठक चरण मे प्रणिपात करैत छथि और तखन महाराज दशरथक चरण स्पर्श करैत छथि।

महाराज जे कि प्रेम-विभोर छथि और जनिक आँखि मे अश्रु छलकि रहल अछि, राम कें हृदय सँ लगबैत छथि।

दशरथ अपन पुरखा लोकनिक परम्पराक विशद वर्णन करैत छथि जे ओ अपन जीवन-संध्या मे अपना पुत्र कें राजमुकुट समर्पित कय कोना आत्मोद्धारक हेतु वन चल जाइत छलाह।

अपन पिताक आग्रह सुनि कमलनयन राम राजमुकुटक प्रति ने लालसा, ने अपेक्षेक कोनो भाव प्रकट कैलन्हि। ओ केवल ई अनुभव कैलन्हि जे राज्य करब हुनक कर्त्तव्य छन्हि। अपना मन मे ई विचारैत जे महाराज जे किछु आज्ञा दैत छथि सैह हमरा हेतु विधि-विहित अछि, राम राजकीय आदेश कें स्वीकार कैलन्हि। दशरथ एहि पर पुनः राम कें हृदय सँ लगौलन्हि एवं मंत्रिगणक सँग

महल दिस विदा भेलाह। पृथ्वीक विभिन्न देशक राजा-महाराज लोकनि कें एहि राज्याभिषेकक निमंत्रण पठाओल गेल; ओ पत्र सभ गरुड़ांकित सोनाक सील द्वारा बन्द कैल गेल छल।

उत्सवमग्न नगर

राम राज्याभिषेक-समारोहक हेतु तैयार भऽ रहल छथि। अयोध्याक पुरवासी लोकनि अपन सुन्दर नगर कें एना सजौलन्हि मानू ओ सूर्य कें चमका रहल होथि अथवा कि जगत्पालक भगवान विष्णुक वक्षस्थल पर समुज्ज्वल मणिक गर्दा कें झाड़ि रहल होथि।

मार्ग सभ रथ एवं हाथी सँ भरि गेल छल। स्वर्ण-जटित साज-सज्जा मे हाथी सभ एना चलि रहल छल जेना कि जगमगाइत सूर्य कें अपना कपाल पर धारण केने उदयाचल चलि रहल हो।

जखन नगर एहि प्रकारें आनन्द सँ ओत-प्रोत भऽ रहल छल कुटिल कुबरी मन्थरा (मन्थराइ) रावणक द्वारा आचरित समस्त असद्वृत्तिक साकार रूप नेने एहि दृश्यक बीच मे उपस्थित भेलि। ई आनन्द-उछाह ओकरा मे द्वेष-भावना कें जागृत केलकैक। ओकर मन प्रकम्पित भऽ गेलैक ओकर क्रोध ओकरा अन्तर मे बहुत भीतर धरि जड़ि पकड़ि लेलकैक। ओकर हृदय दुःख सँ भरि एलैक। ओकर आँखि मे ज्वाला धधकय लगलैक आ ओकर शब्द क्रोधें उत्तप्त भऽ गेलैक।

ई नारी जे तीनू लोक कें शोक-मग्न कऽ सकै छलि, दशरथक तृतीय रानी एवं भरतक माता कैकेयीक महल मे आबि धमकलि। ओ अपना ठोर कें कसि कय सटाय लेलक और ई मोन पाड़ि कय जे बालक राम खेलाइत-खेलाइत कोना अपना धनुष सँ ओकर कूबर पर माटिक गोली दागै छलथिन्ह, अपना स्मृति मे एकरा स्थिर कय लेलक। जे धृष्ट बालक ओकर शारीरिक कुरूपताक एहन उपहास करैत छल तकर आब राजसिंहासन पर आरोहण करब ओकरा सह्य नहि भेलैक। ओ कैकेयीक सतौत रामक आसन्न राज्याभिषेक कें निष्फल करबा मे रानी कें सम्मत करबाक संकल्प नेने हुनक शयनागार मे प्रवेश कैलक।

कंबनक परिष्कार

कम्बन अपन महाकाव्यक प्रत्येक नायक जकाँ कैकेयी कें वाल्मीकि सँ बिल्कुल भिन्न मौलिक साँचा मे ढालैत छथि।

कैकेयी मृदु, कृपालु, उदार एवं विशालहृदया छथि। हुनक स्वभाव एतेक सुमधुर छन्हि जे अपन अन्तर्मनो मे अपन पुत्र भरत एवं सतौत रामक बीच

कोनो भेद-बुद्धि नहि रखैत छथि। एहि परिष्कृत रूप कें आनि कम्बन कैकेयी कें मन्थराक दुराग्रही आक्रमणक विरुद्ध अधिक शक्तिशालिनी वनबैत छथि एवं अपना लय चुनौतीपूर्ण समस्याक सृजन करैत छथि। किन्तु मनोविज्ञानक अधिक सूक्ष्म एवं गंभीर स्तर पर एहि समस्याक समाधान कय ओ एहि चुनौतीक युक्ति-युक्त उत्तर प्रस्तुत कऽ दैत छथि। ओ दृश्य जाहि मे मंथरा कैकेयीक निष्कलुष मानस कें विषाक्त बनेबा मे सफल होइत अछि अपना मे एक महाकाव्य अछि और जाहि कपटपूर्ण रीति सँ कैकेयी असत् वृत्ति दिस आनल जाइत छथि तकरा कम्बन जे प्रभावपूर्ण नाटकीय रूप देलन्हि अछि प्राप्त स्थानक सीमा मे तकर वर्णन नहि कैल जा सकैत अछि। तावत् एतबे कहब पर्याप्त जे मंथरा जाहि प्रकारक चतुर षड्यंत्री अछि, ओ कैकेयी कें मानव-हृदयक कोनो लोभवृत्ति पर नहि प्रत्युत ओकर उदात्तते पर आधारित युक्तिक द्वारा कैकेयीक विचार मे परिवर्त्तन कऽ दैत अछि। ओ कैकेयी कें पूछैत अछि—"की विपत्ति एवं दरिद्रता सँ प्रताड़ित दीन-दुखिया जखन अहाँ लग भिक्षा-याचना करय आओत तऽ अहाँ ओहि विपत्तिग्रस्त जन कें सहायता देबाक हेतु कौशल्या सँ स्वर्ण-याचना करबा लय जायब अथवा ओहि असहाय जन कें अहाँ 'नहि' कहि देबैक? यदि हुनक पुत्र आइ राजा बनि जाइत छथि तऽ समस्त संसार कौशल्याक अधीन भऽ जायत और तखन की अहाँ हुनका द्वारा देल गेल खोरिस पर अपन जीवन व्यतीत करब?

कवि कहैत छथि जे दुष्ट मंथराक मुँह सँ एहि शब्दक निकालते असत् कें विनाश करबाक हेतु देवतागणक द्वारा माँगल वरदानक प्रभावें एहि महारानीक हृदय कलुषित भऽ गेलैन्ह। ओ मंथरा सँ बूझय चाहलैन्ह जे भरतक हेतु राजमुकुट कें कोना प्राप्त कयल जाय? ओ स्त्री जकर मन ओकर शरीरे जकाँ विकृत छलैक महारानी कें पूर्व मे सम्परण नामक राक्षस पर विजय प्राप्त करबाक क्रम मे दशरथक द्वारा देल गेल दू टा वरदान स्मरण दियबैत ई विचार दैत अछि, "एक वरदान सँ अहाँ अपना पुत्रक हेतु राज्य माँगि लियऽ आ दोसर सँ राम कें चौदह वर्ष वनवास दऽ दियऽ।" एको क्षण बिना नष्ट कैने कैकेयी एहि योजना कें कार्यान्वित करबा मे लागि गेलीह।

जखन कैकेयी दशरथ सँ ई दू वरदान मँगलन्हि तऽ दशरथ मर्म्माहत भऽ गेलाह। ओ कैकेयी सँ अनुनय कैलन्हि जे ओ राम कें वनवास देबाक अपन आग्रह पर हठ नहि करथि, मुदा कैकेयी कनेको झुकैवाली नहि छलीह। जखन महाराज शोकाकुल भय भूमि पर लोटा रहल छलाह ओ अविचलित नारी बाजलि—"जौं अहाँ कें पूर्व मे देल वरदानक पूर्ति करब अभीष्ट हो तऽ हम तकरा स्वीकार करब, अन्यथा, हे राजन्! हम अपन प्राण हति लेब।" दशरथ कें स्पष्ट भय गेलन्हि जे कैकेयी कें जे अभीष्ट छलैन्ह तकरा प्राप्त करबा लय ओ कृतसंकल्प छलीह। क्षोभित भय महाराज वरदान कें स्वीकार करैत छथि :

उठल नृपतिक करुण स्वर ई मात्र जनु चीत्कार मे।
"अधम केर अछि उचित अंते विकट एहि संसार मे।।
से अहँक वरदान-पूर्त्तिक संग होयत निश्चिते।
राम करता राज्य वन मे हम कि स्वर्ग-प्रतिष्ठिते।।
अहाँ अथवा भरत हित ई कुयश-पारावार जे।
रहत दुर्ल्लंघ्ये मुदा नहि करब कहियो पार से।।

कैकेयीक निद्रा

एतवा शब्द कहिते सान चढ़ाओल तेज कटार जकाँ तीक्ष्ण ओ मर्मान्तक वेदना हुनका हृदय कें वेधि देलकैन्ह और ओ मूच्छित भय गेला। अविचल ओ अप्रभावित ओ नारी आत्म-सन्तोषक भाव सँ भरि गेलि एवं गाढ़ निद्रा मे सूति रहलि।

ई मनोविज्ञानक एक सूक्ष्म सत्य थीक जे अत्युत्तेजित मन जखन कोनो वड़का तनाव सँ मुक्त भऽ जाइत अछि तऽ ओ शीघ्रे गंभीर निद्रा मे चल जाइत अछि। दशरथ कें यंत्रणापूर्ण मूर्च्छा मे देलाक वाद कैकेयी कें शान्तिपूर्ण निद्रा मे दय कवि एही सत्यक नाटकीय अभिव्यक्ति करैत छथि।

प्रकृतिक विद्रोह

यद्यपि कैकेयी निद्रा मे विश्रान्तिक अनुभव करैत छथि, कम्बनक अनुसार संपूर्ण प्रकृति कैकेयीक एहि विश्वासघातपूर्ण कार्यक विरुद्ध विद्रोह करैत अछि।

रात्रि प्रभातकाल मे परिवर्तित होइत अछि। कवि कहैत छथि जे शीतल रात्रि-कुमारिका जखन देखलक जे वैह कैकेयी जे कि विवाहक प्रथम दिन सं अपन संपूर्ण क्रिया-कलाप द्वारा महाराज दशरथक आत्मा जकाँ आचरण करैत आयलि छली से एखन अपना स्वामीक दारुण शोक पर लेश मात्रो करुणा नहि देखबैत छथि तऽ ओ लोक कें अपन मुह देखैबा मे अत्यन्त लज्जाक अनुभव करैत और ओहि नारीक आचरण पर अत्यन्त संकोचपूर्ण ग्लानि मे पड़ि शीघ्र पड़ा गेलि।

पौ फटिते तारागण आकाश सँ बिला जाइत अछि। तारक-जटित आकाश एहन सुदूर विस्तृत मंडप जकाँ लगैत छल जे कि समस्त पृथ्वी कें अपन दुधिया प्रकाश सँ नंहा रहल हो। किंतु जखन प्रस्फुटित कमल सदृश अरुण-नेत्र राम केर राज्याभिषेक स्थगित भऽ गेल तऽ ओहि मंडपक कोन काज? छिपैत नखत-मंडल एहन दृश्य उपस्थित करैत अछि जेना रामक द्वारा अपना बाँहि पर राज्याभिषेक-केयूर धारण करबा सँ पूर्वे एहि मंडप कें ध्वस्त कैल जा रहल हो।

सूर्य उगैत अछि। शत्रुतापूर्ण अंधकारक सघन आवेष्टन अकस्मात् हटि जाइत

अछि। रविकुलदीप महाराज दशरथक जीवन महलक भीतर दीपे जकाँ निर्वापित भऽ रहल छल। विश्वासघातिनी कैकेयीक पापपूर्ण दुष्टता पर क्रोधोन्मत्त प्रज्वलित सूर्य पूर्वाचल पर उदय लैत क्रोधें लाल भऽ रहल छलाह।

राज्याभिषेकक जनसमूह

अयोध्यावासी प्रजागण जनिका महलक शयनकक्षक एहि घटनाक कोनो ज्ञान नहि छलैन्ह रामक राज्याभिषेकक हेतु उल्लासपूर्वक प्रतीक्षा कऽ रहल छलाह। प्रत्येक व्यक्ति अपन प्रकृति एवं बुद्धिक अनुरूप राम-राज्याभिषेकक आनंद लऽ रहल छलाह। प्रौढ़ा लोकनि कौशल्याक वात्सल्य भावें रामक एहि उत्कर्ष सँ आनन्दित भऽ रहल छलीह। ऋषि-मुनि लोकनि वशिष्ठ जकाँ निष्काम भावें एहि कार्यक्रम कें देखि रहल छलाह। नवीना लोकनि सीता जकाँ एहि उत्सव सँ भाव-संबंध जोड़ि रहल छलीह। वृद्ध लोकनि जे कि सांसारिकता सँ ऊपर उठि गेल छलाह अपन सुशान्त मानस मे दशरथक समकक्ष भऽ रहल छलाह।

सीतापति रामक एहि राज्याभिषेक कें देखबा लय पृथ्वीक कोन-कोन सँ राजकुमार आ राजा लोकनि आबि अयोध्या मे सागर जकाँ उमड़ि रहल छलाह।

सद्यः प्रस्फुटित कमल

अयोध्याक मार्ग पर जखन राज्याभिषेकक हेतु लोक उमड़ैत छल, वशिष्ठ जे राजप्रासादक भीतर पवित्र विधि सम्पन्न करयबा मे व्यस्त छलाह, सुमंत्र कें तुरत दशरथ कें आनय कहलथिन्ह। सुमंत्र जखन दशरथक भवन मे जाय हुनका ओतय नहि पौलन्हि तऽ ओ कैकेयीक महल मे गेलाह। ओतय कैकेयी हुनका राम कें आनबाक हेतु आदेश देलथिन्ह। राम कैकेयीक सम्मुख उपस्थित भय हुनका चरण मे प्रणिपात कैलन्हि। कैकेयी हुनका कहलथिन्ह—"महाराजक आज्ञा छन्हि जे अहाँक भ्राता भरत राज्य करताह और अहाँ वल्कल ओ जटाजूट धारण कय वनक हेतु प्रस्थान करब एवं ओतय ऋषि-मुनि लोकनिक सँग रहि तप करब, पवित्र नदी मे स्नान करब और चौदह वर्ष धरि वन मे रहलाक पश्चात् अयोध्या घुरब।"

एहि निर्मम आदेश कें सुनि राम प्रमुदित भेलाह। कवि कहैत छथि जे रामक मुख जे कि एहि आदेश कें सुनबा सँ पूर्व अपन नव शोभा एवं मनोहरता मे कमल सदृश लगै छल आब एहि आदेश कें सुनि कय सद्यः प्रस्फुटित कमलो सँ वेशी प्रोद्भासित भऽ उठल। राम कहलन्हि :

जँ नहि पितु केर अहिंक निदेश।
की हमरा लय नहि बड़ वेश?
एहि खन विदा अहाँ सँ लैत।
वन दिस छी प्रस्थान करैत॥

राम जानि गेलाह जे हुनक पिता अन्तर्कक्ष मे छलथिन्ह, मुदा ओ हुनका सँ विदा माँगय नहि गेलाह। ओ अपन पिता दिस ओही ठाम सँ प्रणाम अर्पित कैलन्हि और पुनः कैकेयीक चरण मे प्रणिपात कय ओ अपना माता कौशल्याक महल दिस विदा भेलाह। प्रसंगवश हम एकर उल्लेख कऽ सकैत छी जे वाल्मीकि रामायण मे वन-गमन सँ पूर्व राम दशरथ सँ भेट करैत छथि आ दशरथ हुनका अपना लग बजा कय कहैत छथिन्ह—"छल सँ कैकेयी हमरा सँ दू वरदान स्वीकृत करौलन्हि अछि। तैं अहाँ कें हमर आदेशक अवहेलना कय अयोध्याक राजा बनबाक चाही।" ई सम्मति वाल्मीकिक राम कें दशरथक प्रति उपदेश वचन कहवा लय और दशरथ कें अपन देल वचन कें भंग करवा सँ रोकबा लय उत्प्रेरित करैत छनि। कम्बन जे एहि अशोभन विदाइ-दृश्य कें छोड़ि दैत छथि तऽ एकर अत्यन्त उचित कलात्मक कारण अछि। प्रथम, यदि राम शोक-विह्वल पिता सँ बिना विदा लेने वन चल जाइत छथि तऽ वियोग केर व्यथा और वेशी नाटकीय एवं तीव्र बनि जाइत अछि। दोसर, दशरथक पुत्र-प्रेम और सत्य-निष्ठा दूहू एकजुट एहि प्रकारें आबद्ध अछि कि दूनू मे सँ ककरो बहुत कसला सँ दोसर केर स्वर-संगति विनष्ट भऽ जैतैक।

पुण्यक विलाप

ने हुनका चँवर धरि डोला क्यो रहल छल।
ने शीर्षे हुनक राजछत्रें सजल छल॥
कि निर्मम नियति आगु हुनका प्रधावित।
कि पुण्यो हुनक पाछु निर्गत विशोकित॥
भेला राम असकर जननि लग उपस्थित।
समुत्सुक जनिक मातृ-उर हर्ष-स्पन्दित॥
सोचै छलि कि देखब अपन नीलमणि कें।
पहिरने मुकुट ज्योति-जगमग सुछवि मे॥

जखन राम नहु-नहु अपन वनवास क समाचार कौशल्या लग प्रकट कैलन्हि तऽ हुनक हृदय विदीर्ण भऽ गेलन्हि।

राम अपन शोकित माता कें भरि पाँज धऽ लेलन्हि और हुनका धैर्य बन्हयबाक प्रयास केलन्हि। माता कहैत छथिन्ह—"सब तरहें भरत भुवन भरि राज्य करथि। ओ सम्पूर्ण गुण सँ समृद्ध छथि और अहूँ सँ श्रेयस्कर छथि। मुदा कुटिल सम्मति सँ दुष्प्रभावित राजा लग झुकि और हुनका विनती कय हम वन-गमन सँ अहाँक रक्षा करब।" ई कहि ओ कैकेयीक महल दिस धड़फड़ायल चलि पड़ै छथि जतय ओ महाराज कें भूमि पर संज्ञाहीन पड़ल देखैत छथि।

एहि बीच ऋषि वशिष्ठ प्रतीक्षा करैत जन-समूह कें ई दारुण समाचार प्रेषित करैत छथि। क्षोभ सँ उन्मत्त भय पुरवासी दशरथ पर निकृष्ट दोषारोपण करैत छथि और कहैत छथि जे रामक राज्याभिषेकक पश्चात् हुनक एकान्तवास करबाक इच्छा मात्र एक चालि थीक। ओ घोषित करैत छथि :

रामक चारू दिस हम उमड़ब।
सभ ठाँ हुनके हम पाछु धरब॥
हो कतबो व्याल कराल भरल।
रामक सँग जंगल हो मंगल॥
हुनका सँग वनो नीक लागत।
द्रुत रुचिर नगर बनि से जागत॥

एम्हर जखन आयोध्यावासी अपन दुर्भाग्य पर झखैत छलाह, लक्ष्मण ई सुनि जे हुनक सुनयनी विमाता दशरथक बुद्धिक हरण कय रामक वनवास एवं अपन पुत्र भरतक हेतु राज्य प्राप्त कऽ लेने छलीह रोषें उन्मत्त भऽ गेलाह।

गरजि उठला लखन—
"हम छी ठाढ़ एहि खन करय उन्मूलन धरा सँ
युद्ध-पिपासु समस्त जन केर
एक-एकक उपर दुष्टक पाटि तन
हम तकर शव सँ
शैल अम्बर धरि उठायब
मुकुट तनिके शिर चढ़ायब
नृपति-पद लय विहित जनिके हम बुझै छी
आइ हमरा लक्ष्य-पथ मे
करय बाधा क्यो कि आबय !"

तखन राम आबि अपन मंजुल शब्दक फुहार लक्ष्मणक ऊपर बरिसौलन्हि। कवि कहैत छथि, ओ नील-श्याम मेघदल जकाँ अयला और एक अदम्य ज्वाला कें शान्त कैलन्हि।

लक्ष्मणक रोष कें शान्त केलाक बाद राम वन दिस प्रस्थान करबा लय प्रस्तुत होइत छथि।

बिलखैत स्वर

एहि करुण दृश्यक मर्मवेधकता अयोध्याक घर-घर कें आक्रान्त कय देलक। गृहिणी लोकनि स्तम्भित भय घरक काम-काज करब रोकि देलन्हि।

एको ने भनसा घर सँ सपनहुँ
धूआँ निकसल ।
एको ने वेदी पर चन्दन केर
धूपो पजरल ।।
शुकक कटोरी पिजरा मे विन
दूधे रहलै ।
क्यो ने झुला सकलै पलना कें
नेना चिहुँकलै ।।

ई एक महान नाटक थीक—एक विशिष्ट साहित्य जाहि मे भनसा-घर, वेदी, दूधक कटोरी आ पलना चलैत अछि आ बजैत अछि ।

अयोध्याक पथ अन्यथा गीत-नाद आ आनन्द-उछाह सँ भरल रहैत अछि। किंतु एखन ?

सूति रहल मृदंग, वीणा केर
स्वर अनगूँजल ।
उठल ने लोकक घोल उमंगें
जे छल मातल ।।
राज-मार्ग सभ करुण विलापक
स्वर मे डूबल ।
कतहु ने छल जत भीषण शोकक
लहरि ने बाढ़ल ।।

राम सीताक महल मे गेलाह । हुनका पाछू-पाछू शोकाकुल लोकक समूह उमड़ि रहल छल । राम सीता कें ई कहि जे ओ जंगलक भीषण उत्ताप कें सहन नै कऽ सकै छलीह हुनका वन जेवा सँ रोकबाक प्रयास कैलन्हि । किन्तु सीता चट दय उत्तर देलथिन्ह :

हे प्राणनाथ ! की विरहानल
सँ वाढ़ि दुखद अछि दावानल ?

जखन राम विचार मे डूबल छलाह, सीता अन्तर्कक्ष मे गेलीह और निर्भीकता पूर्वक वल्कल-चीर पहिरि बाहर आबि रामक कात मे ठाढ़ भऽ गेलीह और हुनक विशाल बाहु कें कसि कय पकड़ि लेलन्हि ।

वाल्मीकि रामायण मे सीता स्वेच्छा सँ वल्कल चीर नहि धारण करैत छथि प्रत्युत कैकेयीक द्वारा हुनका चीर धारण करबा लय विवश कैल जाइत छन्हि ।

ओहि चीरक रुक्षता सीता कें उत्पीड़ित कऽ दैत छन्हि और ओ ओकरा देखिते एना काँपय लगैत छथि जेना हरिणी वझवऽवला जाल कें देखि कँपैत अछि। कैकेयीक द्वारा देल गेल एहन हृदयहीन उपहारक हेतु हुनका वशिष्ठ एवं दशरथ अनेक श्राप दै छथिन्ह, मुदा कैकेयी हुनक श्राप पर कोनो ध्यान नै दै छथिन्ह। एकरा विपरीत कम्वनक सीता स्वेच्छा सँ ओहि रुक्ष वस्त्र कें पहिरैत छथि और एहि तरहें ओ वन-यात्रा मे रामक अनुगमन करबाक सीताक संकल्प कें एक नाटकीय दृढ़ता प्रदान करैत छथि।

वन दिस प्रस्थान

संध्याक समय छल जखन राम लक्ष्मण ओ सीताक सँग जंगल दिस प्रस्थान कैलनि। सुमंत्र हुनका रथ पर बैसाय बीस मील दूरी पर एक सुरभित कुंज मे लऽ जाइत छथि, जतय राम रात्रिक विश्राम हेतु रथ पर सँ उतरैत छथि। जखन ओ ओहि कुंज मे ऋषिगण सँ वार्त्तालाप करैत छलाह, दस मील व्यासक नागरिक जन केर विशाल मंडल ओहि निकुंजक चारू दिस एकत्रित भय गेल एवं ओकरा वाहर सँ एना घेरि लेलक जेना ओ ओकरा झाँपयवला कम्बल हो। नदीक किछेर पर, रेत भरल ढलान पर, हरियर दूभि भरल भूमि पर और जे भूमि खंड प्राप्त भऽ सकल ताहि पर ओ सब पसरि गेल।

जखन जन-समुदाय सूतय लागल तखन राम ओकरा बिना सूचित केने वन दिस आगू वढ़बाक आकांक्षा प्रकट करैत सुमंत्र कें अयोध्या घुरबाक परामर्श देल-थिन्ह। एहि सँ पूर्व ओ सुमंत्र कें तीनू माताक चरण मे हुनक प्रणाम निवेदित करबा लय और निरंतर भरतक सँग मे रहि हुनक व्यथा कें मेटायबा लय प्रार्थना केलथिन्ह। भरतक प्रति रामक ई करुणा कवि कें निम्नलिखित भाव व्यक्त करबा लय प्रेरित करैत छन्हि :

कहि भरत हेतु ई सुधि-सन्देश।
श्री राम स्वयं जे पथिक-वेश॥
भय शास्त्र-ग्रंथ सँ जनु विलुप्त।
बसि निबिड़ विपिन मे भेला गुप्त॥

कम्बनक भाव ई अछि जे मात्र शास्त्रक पांडित्यपूर्ण ज्ञान (मीमांसा) परम सत्यक साक्षात्कार मे बाधक अछि। ई ज्ञान 'मनुष्य' क अहंकार मात्र कें पुष्ट करैत अछि और परम सत्य कें ओकरा सँ और दूर करैत अछि। जतेक अधिक हम ग्रंथ मे डूबैत छी ततवे परम सत्यक स्वरूपक विषय मे हम व्यामोह मे पड़ैत छी। तैं ईश्वर मनुष्यक कल्याणार्थ धर्म-ग्रंथ कें त्यागबाक और वन मे जाय अपन

अधिक विश्वसनीय प्रमाण देबाक निश्चय कैलन्हि। कोना कय वन-गमन मनुष्यक सम्मुख ईश्वरक सत्य कें प्रकट करैत अछि ?

नगरक कृत्रिमता मे मनुष्यक कृति ईश्वरक सृष्टि सँ अधिक देखबा मे अबैत अछि। अपन उपलब्धिक गरिमा कें देखि मनुष्य अपन विविध अहंकारपूर्ण शक्तिक चिन्तन मे उन्मत्त भऽ जाइत अछि। किंतु नगर कें छोड़ि जखन मनुष्य जंगल आ पहाड़क बीच भ्रमण करैत अछि तऽ ओतय सहस्रवर्णी पत्र-दल सँ सुसज्जित विशाल विटप कें अथवा पर्वत सँ झरैत निर्झरिणी कें देखि ओ संकुचित भऽ जाइत अछि, अपन अहंकारक उपलब्धि कें विसरि जाइत अछि और ईश्वरक अव्यक्त उपस्थिति सँ अभिभूत भऽ जाइत अछि। जँ अरण्य-भ्रमण मनुष्यक मन कें अपना अहंकार सँ हटाय ईश्वर दिस उन्मुख करैत अछि कम्बनक ई कहब उचित जे ईश्वर धर्म-ग्रंथ सँ नुकाय रहैत छथि और वन मे निवास करबाक निश्चय करैत छथि।

ई गंभीर भावना कंबनक चित्त मे तखन उदित होइत अछि जखन अवतार-पुरुष राम अयोध्याक त्याग कय गहन वन मे जेबा लय उद्यत होइत छथि। सुमंत्र सँ कैन गेल ई प्रार्थना जे ओ भरतक सतत सहयोग करैत हुनका सांत्वना देथि मानवीय क्षुद्रता ओ द्वेष सँ ततेक मुक्त ओ स्फूर्त्तिदायक अछि जे कम्बन ई चिर-स्मरणीय उद्‌गार प्रकट करबा लय बाध्य होइत छथि जाहि सँ पाठक राम मे निहित ईश्वरत्त्वक एहि लौकिक प्रमाण कें अनुभव कऽ सकय—"भय शास्त्र ग्रंथ सँ जनु विलुप्त। बसि निबिड़ विपिन मे भेला गुप्त॥" एहि संपूर्ण उदात्तताक स्रोत ओहि मे निहित भावपूर्ण अन्तर्दृष्टिक गांभीर्य मे अछि। ई कोनो काव्य-कौशल नहि, प्रत्युत कविक प्रतिभा थीक।

मैना ओ सुग्गा

एकरा पश्चात् सुमंत्र सीता दिस उन्मुख होइत छथि जे वन मे अपन आनन्द-पूर्ण भविष्यक कल्पना करैत छलीह। ओ सुमंत्र कें कहैत छथिन्ह—"प्रथम, हमर प्रणाम महाराज कें एवं सासु लोकनि कें निवेदित करबैन्ह। तखन हमर प्रिय बहिन लोकनि कें आग्रह करबैन्ह जे ओ हमर सोन मैना आ सुग्गाक ध्यानपूर्वक पालन करथि।" जाहि सीता कें वन्य जीवनक दारुण कष्ट एवं संकटक लेशमात्र अनुभव नहि छलैन्ह तनिक एहन शिशु-सुलभ आग्रह कें सुनि सुमंत्रक हृदय करुणा सँ भरि जाइत छन्हि। सीताक करुण शुद्धता पर विचार करैत ओ कानय लगैत छथि। सीता कें कौतूहल होइत छन्हि जे ओ अपन कोनो गलती सँ सुमंत्र कें दुखी तऽ ने कऽ देलन्हि अछि। सीता कें अजगुत बूझि पड़ैत छन्हि—"हम तऽ एतबे कहलियैन्ह जे हमर अनुपस्थिति मे चिड़ै सभ कें पोसल जाय। एहि पर ई कियै कनै छथि ?" हुनक कानबाक किछु कारण जखन ओ नहि बूझि सकै छथि तऽ ओहो कानय लगैत छथि।

व्यथा भरल हृदय सँ सुमंत्र राम सँ विदा मँगैत छथि और रथ कें हँकैत असकर घुरैत छथि।

ईश्वरीय चन्द्रमा

पुरवासी लोकनिक एहि सेना कें सूतल छोड़ि राम एहि अवसर सँ लाभ उठाय जंगल दिस प्रस्थान करैत छथि। आब सघन अन्हार भऽ जाइत अछि और तखन के एहि अन्हार मे रामक संग हुनक पथ-प्रदर्शन करैत अछि ? कवि कहैत छथि :

सीताक सती बल केर संवल।
रामक सद्गुण-पौरुष अविचल॥
भ्राताक संग ओ धनुष-रंग।
से रक्षाकवच हुनक अभंग॥
भू-अवतारी नर-तनु-धारी।
छल संग प्रभुक निशि-संचारी॥

जखन तीनू थाहि-थाहि कय आगू बढ़ैत छलाह तऽ बूझि पड़ैत छल जेना अंधकार मूर्त्त रूपें हुनक मार्ग अवरुद्ध करैत हो। लगैत छल जेना असद्वृत्तिक सहयोगी राक्षस गणक सँग ओ दुरभिसंधि कऽ लेने हो और ओकरा सबहक प्रति मित्रताक कारणें एहि त्रिमूर्त्तिक यात्रा मे अवरोध उत्पन्न कऽ रहल हो। फुसफुसा कय कहल गेल एहने संकेत शब्द द्वारा कम्बन मानू सत् आ असत् केर बीच आसन्न संग्रामक आभास प्रदान करैत छथि।

मोसि बोरल राति केर घन अमा
कें हँटबैत
एना ऊगल चान ईश्वर रूप
प्रकाशक किछु बारि बाती
उठा लेलक व्योम अपना हाथ मे जनु !

कोनो सूक्ष्म रीति सँ कवि अंधकारक बीच एहि धार्मिक यात्रा सँ एवं असत् केर विरुद्ध धार्मिक युद्ध सँ पाठकक मन कें आबद्ध कऽ दैत छथि। उपयुक्त समय पर उगल एहि चन्द्रमा कें 'ईश्वरीय' कहि कम्बन हमरा सबहक हृदय मे अकस्मात् उठल कष्ट-मुक्ति एवं कृतज्ञताक भाव कें व्यक्त करैत छथि। समस्त महाकाव्य मे शाश्वत धर्म, विधि-व्यवस्था एवं सच्छक्तिक एक अविच्छिन्न चेतना हमरा प्राप्त होइत अछि।

जखन राति मे चन्द्रोदय होइत अछि तऽ कवि चन्द्रप्रकाश मे घूमैत

तीनूक छायाचित्र शब्दक माध्यम सँ प्रदान करैत छथि । श्री राम श्याम रंग ढेउरल पर्वत जकाँ चलि रहल छथि। लक्ष्मणो ओहने पर्वताकृति लगैत छथि मुदा एहन पर्वत जकाँ जकर प्रत्येक रेखाकृति स्वर्णमंडित हो। भूमि पर ज्योत्स्नाक प्रभाव एतेक कोमल प्रतीत होइत अछि जे लगैत अछि जेना धवलतम तूर केर सूक्ष्म तन्तु कें ओ एना पसारि देने हो जाहि सँ सीताक सुकुमार चरण कें वन-पथ पर चलबा मे कोनो कष्ट नहि होन्हि । वन प्रदेशक एहि सुखद सौन्दर्यपूर्ण परिवेश मे तीनू कें छोड़ि कम्बन हमरा सभ कें सुमंत्रक सँग अयोध्याक मार्मिक दृश्यक दिस लऽ जाइत छथि ।

अश्रु-कूप

जखन सुमंत्र अयोध्या घुरलाह तऽ दशरथ हुनका पुछलथिन्ह—"की राजकुमार लग छथि अथवा दूर ?" सुमंत्र बाजि उठला—"नमहर-नमहर बाँसक सघन जंगल मे राम बहुत दूर चलि गेल छथि।" "राम गेलाह" ई शब्द सुनिते दशरथक प्राण सेहो चलि गेल। दशरथक दारुण अंत कम्बनक अन्तरतम कें करुणो-द्वेलित करैत अछि और ओहि सँ कवि केहन अश्रु-कूपक खनन करैत छथि !

पति-विरहिता रानी सबहक द्वारा दशरथक शरीर कें कसि कय पकड़बाक दृश्य कवि कें दशरथक जीवनक अपार गरिमा पर गंभीर चिन्तन करबाक हेतु प्रेरित करैत अछि। अपना प्राणोक मूल्य चुकाय अपन देल गेल वचन कें ओ पूर्ण कैलन्हि और एक आदर्शक हेतु प्राणोत्सर्ग कय ओ शाश्वत जीवनक उपलब्धि कैलन्हि। हुनक शरीर-नौका, जाहि मे ओ भव-सागरक संतरण कैलन्हि, हुनका सकुशल परमानन्दक किनार पर पहुँचा देलकन्हि। ओ हुनका भ्रान्तिक महामत्स्य सँ बचौलकन्हि और अपना यात्री कें शाश्वतताक राज्य मे उतारि सुरक्षित घुरि गेल, जाहि सँ ई सिद्ध भेल जे ओ नौका भव-सागरक हेतु सब तरहें समर्थ छल । तैं रानी लोकनि जखन महाराजक शरीर कें कसि कय पकड़ने छलीह तऽ एहन लगैत छल जेना ओ एहि विश्वस्त नौका पर एहि आत्मविश्वासक सँग सवार भऽ चुकल छलीह जे ओ हुनको ओही गंतव्य स्थान पर लऽ जेतन्हि ।

भ्रमण

अपना आनन्द मे अयोध्याक दुखपूर्ण घटनाक्रम सँ अनवगत रहि सीता एवं राम वन मे उल्लसित भय भ्रमण करैत छथि। उन्मुक्त भावें ओ सब प्रकृतिक आनन्द महोत्सव मे रस-निमज्जित होइत छथि। उच्च चारुता एवं सौंदर्ययुक्त कविता मे कम्बन हुनक आनन्दपूर्ण भ्रमण मे भरल कोमल एवं भव्य बन्धन विहीन-लाक भाव कें प्रकट करैत छथि। राम सीताक संग एना विचरि रहल छथि जेना

विद्युल्लताक सँग सुमनोहर मेघ भ्रमणशील हो। जखन ओ सब गंगाक उत्तरी तट पर पहुँचि साधु लोकनि सँ आनन्दपूर्ण वार्त्तालाप मे निमग्न होइत छथि तऽ निषाद-राज गुह अपन प्रणाम अर्पित करबा लय हुनका लग पहुँचलाह। ओ महाविषम धनुष सँ युक्त एवं एक सहस्र नौकाक अधिपति छलाह। हुनक कान्ह प्रस्थर-निर्मित छलैन्ह और हुनक दूनू जंघा कठोर काष्ठक बनल छलैन्ह। ओ एतेक नाम छलाह जे हुनक ऊँचाइ गंगाक तल कें थाहि सकै छल! हुनक कटि सँ लाल चर्म लटकि रहल छलैन्ह एवं हुनक कटि मे आवेष्टित ई चर्म चमकैत व्याघ्र-पुच्छ सँ कसि कय बान्हल छल। हुनक गर्दनि मे एहन माला छलैन्ह जकर दाना सभ गूँथल दंत-पंक्ति जकाँ लगैत छल। ओ एहन कंकण पहिरने छलाह जेना ओ प्रस्थर-खंडक माला हो। हुनक केश-गुच्छ एना लगैत छल जेना ओ बान्हल अंधकारक पुल्ला हो। सिंह जकाँ भासित होइत हुनक भौंह परक केश-राशि लगैत छल जेना धानक शीश सँ ओ गूथल गेल हो। हुनक कटिबन्ध सँ एक रक्त-रंजित कटार बान्हल लटकैत छलैन्ह। विषधर नाग जकाँ भयोत्पादक हुनक मुखाकृति छलैन्ह, मुदा ओ बालस्वर मे बजैत छलाह और हुनक कटि इन्द्रक हीरक-निर्मित माला जकाँ मजबूत छलैन्ह। 'असत्या-चरण सँ अनभिज्ञ', 'हृदय सँ शुद्ध' एवं 'माता सँ अधिक स्नेहपूर्ण' गुह रामक सम्मुख माछ ओ मधुक अपन उपहार राखलैन्ह।

वाल्मीकिक चित्रणक विपरीत कम्बनक राम एवं ऋषिगण शाकाहारी छलाह एवं शाकाहार कें एक सद्गुण और संस्कृतिक एक विशिष्ट लक्षण मानैत छलाह। निषादराजक माछ खैबाक आग्रह एकत्रित ऋषिगण कें क्षुब्ध केलकन्हि और अप-मानजनक बूझि पड़लैन्ह। राम मुस्कुराइत कहलथिन्ह—"गुहक द्वारा आनल उप-हार प्रेमरस सँ परिपूर्ण अछि और ताहि सँ ओ पवित्र भऽ गेल अछि, अवश्यमेव ओ ग्रहण कैल वस्तु जकाँ मानल जैबाक चाही।" गुह राम कें अयोध्या सँ विदा हैबाक कारण पुछलथिन्ह एवं लक्ष्मण हुनका एकर करुण कथा कहि सुनौलथिन्ह जाहि सँ गुहक नेत्र अश्रुपूरित भऽ अयलैन्ह। राम गुहक प्रेम सँ द्रवित भय हुनका अपन भ्राताक रूप मे अंगीकृत करैत कहैत छथि :

हम छलहुँ एखन धरि चारि भाइ।
भऽ गेलहुँ पाँच भ्राता कि आइ॥
की भ्रातृत्त्वो केर कतहु अन्त?
प्रेमे एकरा बनबय अनन्त॥

कविक ई भाव श्रेयस्कर थीक जे भ्रातृत्त्वक मूल जन्मगत नहि अपितु प्रेमगत अछि और यदि प्रेम केर विस्तार भेल जाय तऽ भ्रातृत्त्वक सीमा सेहो विस्तृत होइत जाइत अछि, किंयैक तऽ दुहूक कतहु ओर-छोर नहि अछि।

गुह सँ विदा लय तीनू प्रातः काल धरि चित्रकूट पर्वतक प्रदेश मे पहुँचैत छथि

भरि दिन तीनू गोटे नदीक तटपर एक वृक्षक छाया मे रहैत छथि। आब सन्ध्या भऽ गेल अछि।

प्रेमक चरमोत्कर्ष

जखन तीनू गोटे पर्वतीय जलाशयक निकट विचार मे डूबल छथि तऽ अंधकार भऽ जाइत अछि और लक्ष्मण राम आ सीता कें एक कुटी मे लऽ जाइत छथि जे ओ पहाड़क एक ढलान पर बनौलन्हि अछि। ओ अपन राजकुमार-सुलभ हाथें ओकरा निर्मित कैलन्हि अछि। पहाड़क किनार सँ ओ बाँस कें उखाड़लन्हि, ओकरा बरोबरि लंबाइ मे काटलन्हि, कतार मे ओकरा गाड़लन्हि और ओहि पर चारक ठाठ कें चढ़ाय बाँसक खाम्ही सँ ओकरा बान्हलन्हि। ओ तकरा पुनः शालवृक्षक पत्ती सभ कें सटा-सटा कय जोड़ल छाजन सँ छारलन्हि और ताहि पर पुष्पलता कें आवेष्टित कैलन्हि। चारू दिस एक टाट बनाय ओ तकरा माटि सँ लेवलन्हि और भूमि कें जल सँ सिक्त कैलन्हि। एहि कुटीक सटले स्वयं सीताक हेतु एक फराक कुटीक निर्माण ओही सामग्री सब सँ कैलन्हि और लाल माटि सँ ओकर टाटक लेबाइ कैलन्हि और वनक धारा सँ चमकैत पाथरक टुकड़ी आनि ताहि सँ ओकरा मढ़लन्हि।

लक्ष्मणक द्वारा बनाओल ओहि कुटीक सर्वेक्षण कय राम आनन्दविभोर भऽ गेलाह। सीता आ लक्ष्मण द्वारा बरसाओल प्रेम सँ ओ आन्दोलित भऽ जाइत छथि और सोचैत छथि जे प्रेमक एहन स्वतः प्रसूत वरदान ओही व्यक्ति कें प्राप्त होइत छैक जे सभ किछु गमा चुकल हो :

राजवधू जनकात्मजा, वन-पथ निज पद देल।
अनुजक अनुपम करें की, शुचि गृह निर्मित भेल॥
की नहि तकरा प्राप्त भुवि, जे त्यागी निष्काम।
'कखन सिखल ई कला हे ?' पुछल लखन सँ राम॥

और ई पुछैत हुनक कमलनयन ओसबिंदु सदृश अश्रुकण सँ भरि उठल। राम सोचैत छथि जे सत्य पालकक रूप मे हुनक प्रसिद्धि अनुचिते अछि, कारण जे ई हुनक अपन त्याग पर नहि, प्रत्युत लक्ष्मणक महान त्यागे पर आधारित अछि। हमरा सभ कें आनन्दक एहि चरमानुभूति मे छोड़ि कम्बन हमरा सभ कें भरत लग लऽ चलैत छथि जे अपन मातामहक कैकय नगर गेल रहथि।

उत्पीड़क विपत्ति

राजा सँ दू वरदान पाबि कैकेयी जे निद्राभिभूत भऽ गेल छलीह जागि कय

भरत कें आनबाक हेतु शीघ्र दूत कें कैकय नगर पठौलन्हि। सन्देश पाबि भरत रामक वन-गमन एवं दशरथक मृत्यु सँ अनवगत रहि अयोध्या दिस वेग सँ प्रस्थान कैलन्हि।

अयोध्या पहुँचि ओ नगर कें विषण्ण पौलन्हि। अनिष्टक आशंका करैत ओ महाराज सँ भेंट करबा लय महलक भीतर दौड़ि कय गेलाह। किंतु महाराज कतहु दृष्टिगोचर नहि भेलथिन्ह! ओ कैकेयी लग गेलाह और हुनका पुछलथिन्ह जे महाराज कतय छथि। हुनका आलिंगित करैत ओ कहलथिन्ह—"अहाँ शोक जुनि करी, अहाँक पिता स्वर्गवासी भऽ गेलाह।" हुनक उत्तरक निष्ठुरता सँ भरत आशंकित भेलाह और दशरथक मृत्युक खबरि हुनका वेचैन आ संज्ञाशून्य बना देल-कन्हि। किछु समयक पश्चात् पुनः संज्ञा प्राप्त कय ओ शोकक घोर चीत्कार कय उठलाह। तखन हुनक चित्त सांत्वनार्थ स्वाभाविक रूपें रामक दिस उन्मुख भेलन्हि और ओ बाजि उठलाह—"धर्म ओ पुण्यक आगार श्री राम हमर पिता, माता, भ्राता आ स्वामी छथि। यावत् हम हुनका चरण मे प्रणिपात नहि करब हमर मन दारुण दुखक यंत्रणा सँ मुक्त नहि हैत!" रामक प्रति भरतक प्रकट कैल श्रद्धा कैकेयी कें क्रुद्ध कऽ देलकैन्ह और ओ गर्जन कऽ उठलीह :

निज भ्राता ओ पत्नी सँग लय।
छथि राम आब वनवासी भय॥

जाहि अन्यमनस्क भावें कैकेयी ई शब्द वजलीह भरत कें से पुछबाक हेतु उत्तेजित केलकैन्ह—"और कोन षड्यंत्र सभ अहाँ कें उद्घाटित करबाक अछि? और कोन दुःख सँ हमरा कान कें मर्म्माहत करबाक अछि? राजा कियै मरला और राम कें कियै वन जाय पड़लैन्ह?" कैकेयी बड़े उमंग सँ उत्तर देलथिन्ह—"एक वरदान सँ हम राम कें वनवास देलियैन्ह आ दोसर सँ अहाँक हेतु राज्य प्राप्त केलहुँ। एकरा सहन करबा सँ अक्षम भय महाराज प्राणत्याग कऽ देलन्हि!"

ई शब्द सुनबा सँ पूर्व भरतक दूनू जोड़ल हाथ प्रणामक मुद्रा मे हुनका माथ पर उठल रहैन्ह, किन्तु ई शब्द सुनलाक पश्चात्—

जोड़ल जे हाथ गिरल कान बन्न करबा लय।
फड़कल भ्रू उर्ध्व-निम्न एक रौद्र नर्त्तन कय॥
लहकल जे श्वासानल अन्तः ओ वाह्य घिरल।
शोणित सँ प्रक्षालित नयन भेल अरुण तरल॥

एहि पद मे कम्वन रोष केर संपूर्ण मनोवैज्ञानिक लक्षण कें नाटकीय रूप दैत छथि। क्रोध केर विश्लेषण भरिसके एहि सँ अधिक जीवंत भऽ सकै अछि। रामक राजमुकुट कें हस्तगत करबाक प्रलोभन भरत कें जहिना धर्मघाती पापाचरण बूझि

पड़लैन्ह दुष्टा कैकेयीक तत्क्षण हत्या नहि करब तहिना हुनका पापपूर्ण बुझना गेलैन्ह। तथापि ओ कैकेयीक मुंह कें तोड़ि देबा सँ अपना कें रोकलैन्ह अन्यथा हुनका रामक कोपभाजन होमऽ पड़ितैन्ह।

अपन निराशा मे भरत कें बूझि पड़ैत छन्हि जे एहि कलुषमय संसार मे समस्त धर्म-नीति धराशायी भऽ चुकल अछि। किन्तु शान्त मन सँ राम ओ दशरथक आत्मोत्सर्गक स्मरण कैलाक पश्चात् धर्म मे हुनक विश्वास पुनः अटल भऽ जाइत छन्हि। ओ बाजि उठैत छथि :

जौं जग मे तन दय प्रणपाल नृपाल पिता सन पुण्यस्वरूपे।
रामक सन नायक वनवासक निर्मम व्रत कर पूर्ति अनूपे॥
क्यो भरतो सन राज्य-विलासक कटु उपहासक सह अभिशापे।
तौं विधि केर कुटिल दोषे, नहि धर्मक, अविचल जकर प्रतापे॥

कम्बनक शब्द-शक्ति ओ चमत्कार अत्यन्त दिव्य भऽ जाइत छन्हि जखन ओ भरतक एहि विश्वास कें स्वर दैत छथि जे समस्त जीवन धर्म ओ पुण्य केर उच्चतर विधान सँ संचलित अछि। शब्द-चयन एवं ध्वनि-माधुर्य पर कविक अधिकार उदात्त प्रभाव सँ युक्त अछि और हुनक ध्वनि एवं अर्थ केर संयोजन समस्त तमिल कवि मे हुनका अनुवादक दृष्टियें सर्वाधिक कठिन बना दैत अछि। भरत अपन व्यक्तित्त्व कें जाहि उदात्त उपेक्षाभाव सँ अन्य पुरुष मे निर्देशित करैत छथि से हुनक पवित्र नाम कें प्रसंगक अनुसार पापीक अर्थ प्रदान करैत अछि। एहन-एहन नाटकीय स्थितिक निर्माणकय एवं अपन चरित्र नायकक मुख सँ एहन वाग्मिताक प्रदर्शन कराय कम्बन पाठक मे प्रत्येक महत्त्वपूर्ण तत्त्वक सँग रागात्मक सान्निध्य भावना कें परिपुष्ट करैत छथि।

भरत कें कैकेयीक सँग रहब स्वीकार्य नहि होइत छन्हि कारण ओ कहैत छथि जे ओ एहन पापिनी छथि जकर मन अवर्णनीय निष्ठुरता सँ भरल अछि। ओ कौशल्या लग जाय कहैत छथि जे कलंकक पर्याय भरत कें पावि सूर्य-वंश कलंकित भऽ गेल अछि कियैक तऽ हुनके हेतु पापिनी कैकेयी राम कें वनवास दियौलन्हि। एहन प्रबल शोकक शब्द सुनि कौशल्या कें तत्क्षण भरत सँ एकात्मताक बोध होइत छन्हि। कनैत कौशल्या भरत कें अपना अंक मे भरि लैत छथि और हुनक आलिंगन करैत छथि जेना कि राजमुकुट कें त्यागि राम जे वन चल गेल छलाह से स्वयं घुरि हुनका समक्ष ठाढ़ होथि। तत्काल वशिष्ठ अबैत छथि आ भरत कें एहि शब्दें संबोधित करैत छथि—"जाहि राज्य मे एक सशक्त राजा नहि हो ओ प्रभापूर्ण सूर्यरहित दिन जकाँ और शुभ्र चन्द्रविहीन ग्रहशून्य रात्रि जकाँ अछि। अहाँक पिता स्वर्ग मे छथि और अहाँक भ्राता राजमुकुट परित्याग कऽ देलन्हि जे अहाँक

माताक वरदानस्वरूप अहाँ कें प्राप्त भेल अछि। हे वत्स, एहि राज्यक शासनभार अहाँ अपना हाथ मे ली।" भरत ई वचन सुनि कय भयप्रकम्पित भऽ गेलाह। पुनः प्रचण्ड रोष मे ओ प्रश्न कैलन्हि जे की अपने सन धर्मज्ञ व्यक्ति कें हमरा एहन सम्मति देब उचित थीक ?

भरत आगू कहलैन्ह जे राम कें वन सँ घुरायब एवं पुरातन परम्परा ओ विधानक अनुसार हुनक राज्याभिषेक करायब अत्यन्त आवश्यक अछि। "यदि अपने एकरा अतिरिक्त एको शब्द वजै छी तऽ हम आत्मघात कऽ लेब।" वशिष्ठ एवं अन्य व्यक्ति सब भरतक दिव्य न्याय-भावना सँ और अनुचित कृत्य कें उचित कर्त्तव्य द्वारा मार्जन करबाक हुनक आकांक्षा सँ विमुग्ध भऽ गेलाह। भरत अपन कनिष्ठ भ्राता शत्रुघ्न कें बजौलन्हि और हुनका आज्ञा देलथिन्ह जे समस्त अयोध्या मे ढोलहा दय ई घोषणा करबा देल जाय जे ओ प्रजागणक अपन विधि-विहित सम्राट कें घुरा आनबाक हेतु कृतसंकल्प छथि। मृत नगर एहि घोषणा कें सुनि पुनः जीवि उठल। कवि कंवनक निदान अछि जे दुःख प्रेमक विलोपेक परिणाम थीक और ओकर उपचार यथेष्ट प्रेमक अवदाने द्वारा संभव थीक। कवि कहैत छथि :

रथ, गज, बाजिक श्रेणीक आगू-आगू भरत पैदल विदा भेलाह जखन कि वाल्मीकिक भरत राम सँ भेट करबाक आ हुनका घुरा आनबाक व्यग्रता मे रथ पर सवार भय शीघ्रता सँ यात्रा कैलन्हि।

अपन सेनक संग जखन भरत गंगा-तट पर पहुँचलाह तऽ गुह जे कि दोसर तट पर छलाह शीघ्रता मे ई अनुमान कैलन्हि जे ई सेना रामक विरुद्ध संचालित अछि। कम्बन वर्णित गुह निरपेक्ष भक्ति एवं प्रेमक साकार मूर्त्ति थिकाह। ओ हमरा मन मे एक शिशुक अविकृत बोध एवं वर्जनाविहीन मनोवेग केर स्मरण करबैत छथि। रामक प्रति हुनक अनुरक्ति हुनका उत्तेजना मे कोनो अमर्यादित आचरण करबा सँ वर्जित करैत छन्हि।

दृग मे अग्नि-स्फुल्लिग।
कटि मे लटकल कटार॥
दातें कय अधर-दंश।
वेधक कटु शब्द-धार॥
डम-डम डम-डम निसान।
दुंदुभि बजबैत ठाढ़॥
रामक हित 'परिजनवत्।
गुहक स्कंध उठल गाढ़॥

एहि तरहें गुह अपना चारू दिस योद्धा-गण कें संघटित करैत बजैत छथि :

उत्तुंग तरंग संग गंगक कय धार पार।
ओ प्राणो बचा पाबि सकता जीवन-किनार ?
की हमर धनुर्धर-हूह देखि गज-व्यूह भागि
पाओत अधमाधम कायर केर गति प्राण त्यागि ?
की हमरा प्रति 'प्रिय बंधु' राम केर सम्बोधन
नहि सकल शब्द मे शब्द-रत्न सम सम्मोहन ?

भरतक अशोभनीय आचरण गुहक हृदय कें सब सँ अधिक क्लेशित करैत छनि। ओ अपन युद्धोद्घोषक भाषण मे कहैत छथि :

हुनका देलनि राज-वरदान
हमर स्वामि जे परम महान
की तनिके ओ देथि अरण्य
जे कि हमर अछि राज्य शरण्य ?

जखन गुह गंगाक दक्षिण तीर पर ठाढ़ छथि मंत्री सुमंत्र उत्तर दिसक किनार पर भरतक समीप आबि हुनका गुहक परिचय दैत छथिन्ह आ हुनक राम-भक्तिक वर्णन करैत छथि। गुह सँ मिलबाक उत्कंठा मे शत्रुहनक सँग भरत तुरत जलक कोर धरि वेग सँ बढ़ि अबैत छथि जाहि सँ निषादराज गुह कें भरत कें निकट सँ देखबाक अवसर भेटैत छन्हि।

भरतक देखल तन रज-धूसर वन केर वल्कल-तृण-चीर।
कत मुखक हास शशि किरण ह्रास सँ पीत काश जनु वीर॥
से शोक गहन विगलित तत्क्षण कर शत पवि सन पाषाण।
जनु व्यथाघात सँ भरत गात जलजात कोटि गुण म्लान॥
गुह बनल ठूठ लखि करुण रूप हिय उठल हूक से जोर।
कर शिथिल ओकर धनु ससरि गिरल छल-छल छलकल दृगकोर॥

एहि व्यथाघात सँ उबरि गुह अनुभव करैत छथि जे भरत कें युद्धाकांक्षाक लवलेश मात्र नहि छन्हि। हुनक स्वर फूटि पड़ैत अछि :

ई वीर रूप भरतक ललाम।
अछि हमर स्वामि सन शीलधाम॥
ओ हुनक कात जे ठाढ़ मूर्ति।
से रामानुज केर रूप-पूर्ति॥

ई साधु वेष शोकित अशेष ।
करइत प्रणाम रामक उद्देश ।।
की पावि प्रभुक भ्राताक जन्म ।
संभव कुशील से होथि स्वप्न ?

असकर नाव पर चढ़ि गुह एहि किनार पर अबैत छथि और भरत कें प्रणाम करैत छथि जखन कि भरत गुहक चरण मे प्रणिपात करैत छथि और कहैत छथि जे पिता दशरथ द्वारा कैल गेल गलती कें ठीक करय और राम कें घुराय हुनक राज्याभिषेक करावय ओ आयल छथि। ई शब्द सुनिते गुह भरतक चरण सँ लिपटि जाइत छथि और कहैत छथि :

ई तऽ हे रविकुल केर कैरव ।
अपनेक चरम थिक गुण गौरव ।।
नहि सहस राम केर रूप सृष्टि ।
तुलि सकत अहाँ सँ, ज्ञानि दृष्टि ।।

भरत गुह कें कहैत छथि—"कृपा कय ई बताउ जे हमर ज्येष्ठ भ्राता कतय विश्राम कैलन्हि ?" गुह तखन भरत कें ओहि आश्रम मे लऽ जाइत छथि जतय शिलाखंड पर बनाओल तृण-शय्या पर राम सूतल छलाह। कँपैत शरीर सँ भरत ओहि भूमि पर खसि पड़ैत छथि और शोक-विह्वल भऽ जाइत छथि। तखन भरत प्रश्न करैत छथि—"की एतहि ओ नर-भूषण विश्राम केलन्हि ? और ओ अपन समय कतय व्यतीत कैलन्हि जनिक हृदय मे रामक अगाध प्रेम भरल छन्हि और जे हुनक सब तरहें पदानुसरण कैलन्हि ?" गुहक उत्तर छन्हि :

ओ श्यामल तन वामाक संग ।
सौंपल निज कें निद्राक अंग ।।
लक्ष्मण तखने कसि वीरासन ।
भरि राति हुनक कैलनि रक्षण ।।
उर सँ उत्तप्त उसास लैत ।
छल करुणा-जल दृग सँ झरैत ।।
कखनो न हुनक पलको कि झुकल ।
नयनें निशि विगत, उषा छिटकल ।।

गुहक ई विवरण ओहने मर्मस्पर्शी अछि जेहन शेक्सपियरक नाटक 'किंग लियर' मे केंट कें देल गेल भद्र पुरुषक लियरक उत्पीड़नक प्रति कॉर्डेलियाक भावावेशक विवरण अछि।

भरतक प्रार्थना पर गुह भरतक साठि सहस्र सेना आ शोक-विह्वल अयोध्या-वासी कें गंगाक पार करौलन्हि । तखन भरत अपन भाइ, तीनू रानी और मंत्री सुमंत्रक सँग नौका पर चढ़ै छथि । गुह नाव कें चलबैत छथि जे करुआरि रूपी अपन सुन्दर सन्तरणशील पैर पर ससरि चलल ।

रानी लोकनिक परिचय प्रस्तुति

जखन ओ सभ नदी पार करैत छथि तऽ गुह रानी कौशल्याक दिस इंगित करैत पुछैत छथि जे ओ के थिकी । भरत उत्तर दैत छथिन्ह—"ओ वैह छथि जे तनिका जन्म देलनि जे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड कें जन्म देलनि अछि और ओ वैह छथि जे हमरा जन्म लेबाक कारणें संपूर्ण राज-वैभवक परित्याग कऽ देलन्हि अछि !" गुह कौशल्याक चरण मे खसि पड़ला और सिसकय लगला जाहि पर रानी पुछलथिन्ह जे ओ के छथि ? उत्तर मे भरत हुनका कहलथिन्ह जे ओ रामक प्रियतम मित्र एवं लक्ष्मण, शत्रुघन आ स्वयं हुनक अपन अग्रज गुह छथि । जखन गुह कानय लगला तऽ भरत आ शत्रुघ्नोक नयन अश्रुसिक्त भऽ गेलैन्ह । कौशल्या सभ कें गीत गावि प्रबोधलथिन्ह । ओ गीत शान्तिपूर्ण आशीर्वादक भाव सँ भरल अछि । जखन हमरा लोकनि ओहि मूल गीत कें पढ़ैछी तऽ वातावरण सहस्र-सहस्र देवदूतक पाँखि सँ स्पन्दित भऽ उठैत अछि जे मनुष्यक भग्न हृदय पर शीतल लेप-युक्त समीर कें लहरावैत अछि । नीचाँ मूल गीतक स्वर लिपि देल जा रहल अछि :

नैविर अलिर, मंन्तिर !
इनिट्टु रायल; नतिरान्तु
कातुनोक की
मेइ विरार पेयर्नततुवुम
नल मायिन्नाम अन्त्रे
विलंगल तिन्तोल
कै विराक कालिरनय
कालै इवान तन्नोतुम
कलन्तु नीविर
ऐ वीरुम ओरु वीराइ
अहलित तइ ने दुंगालम
अलित्तिर एन्द्राल

कम्बनक छन्द-प्रबंधक विविधता अत्यन्त विस्तृत अछि । वस्तुतः ओ कोनो अंग्रेजी कवि सँ दीर्घतर छन्दमात्राक प्रयोग करै छथि । एहि पद-खण्ड मे, जे

चतुष्पदी अछि, प्रत्येक पंक्ति उन्नैस सँ बीस स्वर-खंड (Syllable) केर अछि। एतेक अधिक स्वर-खंड आ शब्द कें एके बेर नियंत्रित करबाक क्षमता राखब अवश्यमेव असाधारण निपुणताक द्योतक थीक और ओकरा सब कें संगीतक क्रम मे एना सजायब जे ओ भाव-सन्दर्भक अनुकूल भऽ जाय ई हुनक काव्यगत श्रेष्ठताक अन्तिम प्रमाण थीक।

बीथोवेन एक बेर कहलन्हि जे गेटे 'डी-मेजर' (D-major) कोटि मे छलाह। तहिना प्रत्येक वस्तु आ व्यक्ति कम्बन कें स्वरक कोनो कोटि मे बूझि पड़ैत अछि और ओ तकरा प्रत्येकक कोटिक हेतु सभ सँ उपयुक्त स्वर-कोटि (Key) मे एना सम्प्रेषित करैत छथि जे हुनक संगीतात्मक शब्दावली एवं लयगत संपर्ण तकनीक संवेदनशील मर्मभेदी पाठक-हृदय पर अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। कम्बनक ई शब्द चमत्कार अथवा हुनक ध्वनिक (टोनक) उत्कृष्टताक कोनो अंश अनुवाद मे नहि आबि सकैत अछि, तथापि कथा-क्रम टूटय नहि तैं कौशल्याक वचन केर निम्नलिखित रूपांतर देल जाइत अछि :

हे वत्स हमर, हे पुत्र हमर,
जुनि शोक करू, जुनि नोर भरू।
जौं पुरुष वीर तजि जनपद कें
वन-राज्य करथि मंगले बुझू॥
ई मत्त गयंद समान, एकर
दृढ़ दन्त शैल सँग तुलित करू।
एहि वीरोद्धत कें भ्रातृ-डोर
सँ बान्हि अंक मे अपन भरू॥
आ तखन सुभग हे पंच भ्रातृ,
पाँचो मिलि चिर एकात्म बनू।
पुनि शत-शत युग धरि पृथ्वी भरि
कें पालि राज्य-सुख भोग करू॥

शोकें कातर कौशल्याक मातृ हृदय ओहि निम्म कुलोत्पन्न निषादराज कें उच्चकुल-संभव पुत्र जकाँ आलिंगित करैत अछि। एहि गीत मे एक महाकाव्यगत विशेषता अछि जे मनुष्य कें मानवीय क्षुद्रता सँ ऊपर उठबैत अछि।

जे सुमित्रा स्वयं पुण्यक प्रतिमा जकाँ लगैत छलीह हुनका दिस इंगित करैत गुह पुछलथिन्ह—"कृपा कय बताउ, प्रेम सँ ओत-प्रोत ई नारी के थिकी ?" और भरत उत्तर दैत छथि—"ओ ओहि पुरुषक कनिष्ठ रानी छथि जे सत्य कें जीवन देबाक हेतु अपन जीवन दय देलन्हि। ओ एहन महिमामयी नारी छथि जे एक अविच्छेद्य भ्राता कें जन्म देलन्हि आ देखा देलन्हि जे उपास्य रामो कें एक भ्राता छैन्ह।"

एहि परिचयक पश्चात् गुहक ध्यान कैकेयी पर पड़ितन्हि, एहि स्थिति सँ कम्बन मानू प्रकम्पित भऽ जाइत छथि। जेना विशिष्ट रसमर्मज्ञ श्री टी० के० चिदम्बरनाथ मुदालियरक विचार छनि, कम्बनक ई घबड़ाहटि दिव्य मर्म-गहनताक संग अगिला पदखंड मे चित्रित अछि :

जनिकर पति अवध-नृपनि केर तन।
भू छोड़ि कैल छल स्वर्ग-गमन॥
जे निज सुत कें दुख-विष पियाय।
कैलन्हि मर्म्माहत निस्सहाय॥
जे शील-स्नेह केर सिंधु राम।
कें देल निठुर वन-वास धाम॥
से नारि जग भरिक क्रूर दुष्ट।
थाहय सब जग केर की अनिष्ट॥
जकरा कहियो श्री विष्णु अगम।
नापल लय रूप सुदीर्घ चरम॥
तनिका दिस गुह करइत इंगित।
पूछल—"ई के, कहु हिनक चरित!"

तखन कम्बन भरतक द्वारा हुनका हृदय मे एखन धरि एकत्रित जे प्रकोप अछि तकरा व्यक्त करबैत छथि :

ई सकल अमंगल-मूल वैह।
प्रतिशोध-क्रोध केर जननि सैह॥
रहलहुँ जकरे अभिशप्त कोखि।
जे निर्मम हमरे पीसि-सोखि॥
अपने लह-लह यंत्रणा-मुखी।
मरणान्त जगत कय स्वयं सुखी॥
हे गुह, नहि की आवहु लक्षित।
ई हमरे मा अछि विधि-कल्पित॥

ई ओहन कटु शब्दावली छल जे ओहि समाज मे अत्यन्त विद्रूप स्थिति उत्पन्न कऽ देलक। तखन कम्बन ओहि पर नौका-दृश्यक पर्दा खसाय ओहि समाज कें आ पाठक कें संकट सँ उबारबाक हेतु शीघ्रता करैत छथि। ओ शीघ्रे मात्रिक छन्दक दीर्घ आ भरिगर पद कें छोड़ि क्षिप्र आ संक्षिप्त पद कें चुनैत छथि :

माता बुझि अदया नारिहुँ कें।
गुह कैल प्रणति दुहु विमल करें।।
आ एम्हर नाह क्षिप्र गतियें।
तट लागु हंस जनु बिनु पक्षें।।

एहन स्थिति जे अल्पशक्ति कविक हाथें नितान्त रसाभास मे परिणत भऽ सकै छल तकरा संकट सँ मुक्त करबा मे कम्बन जाहि नाटकीय क्षमताक परिचय देलन्हि अछि ओ दुर्लभ थीक। भीतर दिस खींचल करुआरिवा नाव आ पाँखि रहित हंसक सादृश्य एतेक चमत्कारिक अछि कि पाठकक ध्यान उत्पीड़क संकट स्थिति सँ हटि एहि सटीक उपमाक विलक्षणता पर केन्द्रित भऽ जाइत अछि आ ओहि स्थितिक तनाव सँ मुक्त हेबाक प्रिय आवश्यकता दिस मुड़ि जाइत अछि।

पृथ्वी पर स्वर्गक अवतरण

नाव पर सँ उतरि भरत और हुनक प्रजागण पैदल भारद्वाजक आश्रम दिस जाइत छथि जतय ऋषि बाँहि पसारि हुनक स्वागत करैत छथिन्ह आ हुनका सभ कें उत्सवपूर्ण भोज दय आनन्दित करैत छथिन्ह। तपोसिद्ध ऋषिक संकल्प मात्र सँ पृथ्वी पर स्वर्गक अवतरण होइत अछि।

भरत आ हुनक समस्त परिकर कें पृथ्वी परक एहि स्वर्ग मे छोड़ि कवि हमरा सब कें चित्रकूट पर्वत माला दिस लऽ जाइत छथि जतय राम आ सीता लक्ष्मणक संग बिहार कऽ रहल छथि। एक दिन लक्ष्मण जखन कुटीक आँगन मे बैसल छलाह तऽ दूरपर धूमिल रूपें ओ कोनो वस्तु कें चलैत लक्षित कैलन्हि। निकटे मे नोक जकाँ उठैत एक पहाड़ी छल जेना कि पृथ्वी सँ फूटि कय उठल पतराइत अग्निक जिह्वा हो। ओहि शैल पर चढ़ि ओकर चोटी पर सँ लक्ष्मण उत्तर दिशा मे देखलन्हि तऽ धनुष ओ तीरक लहराइत एक समुद्र जकाँ बूझि पड़लैन्ह। हुनका कनेको सन्देह नहि रहलैन्ह जे ओ भरतक सेना छल जे अभियान कऽ रहल छल। लक्ष्मण जे गुह जकाँ उताहुल, भक्त ओ सुगमता सँ उत्तेजित होमऽ वाला छलाह भरतक उद्देश्यक विषय मे गलत अनुमान कय शत्रुक प्रतिरोध हेतु शीघ्र उपाय करबा मे कनेको बिलंब नहि कैलनि। ओ नीचा भूमि पर कूदलाह और ततेक जोर सँ पाथर पर पैर पटकलन्हि जे पाथरक धूलि उड़ि कय मेघ बनि गेल। वेग सँ रामक समीप पहुँचि ओ गर्जना कैलन्हि—"अहाँ कें निरादृत करैत भरत अयोध्याक सेना साजि कय अहाँ पर आक्रमण करय आबि रहल छथि।" ई कहि ओ कवच पहिरलन्हि और ओकरा खूब कसलन्हि, तखन धनुष उठाय बड़े श्रद्धा सँ रामक चरण कें छूबि बजलाह जे हम तत्काल भरतक सेना कें उखाड़ि फेकब। अपना मानस-चक्षु सँ

लक्ष्मण सत आ असत् शक्तिक बीच एक निर्णायक भयंकर संग्रामक चित्र देख-लन्हि जकर रक्तिम दृश्यक वर्णन ओ बड़े चित्रात्मक आ रणरंग भरल शब्द मे करैत छथि :

देखव हे तात ! अहाँ
उठत एहन रक्त-ज्वार
धार से कराल काल
उफनि-उमड़ि-लहरि चलत
अखिल-असुर-कुटिल शक्ति
दुष्ट वृत्ति कें मेटाय
पोछि-बहा-भसा देत
सागर जा मिला देत
कतय हुनक रथ-समूह
गज-बाजिक विकट व्यूह
सभटा कें गिरा-उड़ा
विला देत महायुद्ध
काल क्रुद्ध
एके वेर विश्व शुद्ध
भऽ जायत !

कम्बन जनैत छथि जे कोना छोट सँ छोट विवरण कें नाटकीय रूप देल जा सकैत अछि, ओ एहि शोणित प्रवाह कें निरर्थक नहि बनऽ दय सकैत छथि। तैं ओ लक्ष्मण सँ आगू कहबैत छथि :

और अहाँ देखब हे
रक्त वर्ण दनुज-ठठ्ठ
वामन तन छुरित नेत्र
मुंड रहित रुंड-झुंड
उब-डुब शोणित तरंग
नचइत बेढंग रंग
स्वर्गो मे देव लोकनि
करता आनन्द नृत्य
होयत उद्घोष हुनक
"भेल अहिंक राज्य अहँक !"

"पिताक आज्ञा स भरत पृथ्वीक राज्य करैत छथि," लक्ष्मण बाजि रहल छथि, "मुदा आब ओ नरक लोकक राज्य करताह।"

ई भयानक तर्जन-स्वर सुनि कय राम कें क्लेश होइत छन्हि। ओ कहैत छथि :

सुनु लखन ! शान्त !
हो शास्त्र-ग्रंथ कतबो अनन्त
ओ मात्र धर्म चर्चा करैछ
पर भरत ओकर आचरण करथि
जे करथि भरत हो वैह धर्म
जे करथि न ओ से अछि अधर्म
नहि बुझल मर्म से एखन अहाँ
हमरा प्रेमें भय अन्ध-मूढ़
ओहि पुण्य-शिरोमणि केर विरुद्ध
अहँ सोचि रहल, जे धर्म-धुरी
हे तात ! भरत छथि आबि रहल
हमरा प्रति लय शुचि भक्ति-प्रणति
आ एखनहि से प्रत्यक्ष हैत !

जखन राम ई कहि रहल छलाह भरत शत्रुघ्नक संग निकट सँ रामक दर्शन करबाक व्याकुलता मे हुनका दिस वेग सँ बढ़लाह। स्वतः श्रद्धा ओ प्रणति मे हुनक हाथ उठल छलैन्ह, शरीर शिथिल भऽ रहल छलैन्ह और नेत्र अश्रु-सिंचित छलैन्ह। भरतक रूप एक चित्र जकाँ ई सूचित कऽ रहल छल—'ई अछि वेदनाक प्रतिमा !'

राम भरत कें आपादमस्तक टकटकी लगा कऽ देखलन्हि आ लक्ष्मण दिस घूमि कय बजलाह :

हे धनुटंकारी लखन भ्रात।
देखू दुहु नयन पसारि तात॥
ई थिका भरत 'युद्धोन्मादी'।
ई 'सैन्य'क दल-बल संचारी॥

लक्ष्मण छगुनता मे ठाढ़े रहलाह, हुनक ताड़न स्वर शान्त भऽ गेल छल। हुनका आँखि सँ अश्रुविन्दु हुनक आवेश आ धनुषक संग भूमि पर खसि रहल छल। भरतक शरीर शोक सँ क्षीण ओ जर्जर भेल छल। रामक दिस बढ़ैत भरत उपालम्भ दैत छथि :

हे तात ! धर्म-नय नहि सोचल
करुणाक पक्ष कें किय छोड़ल ?
जे नीति-नियम युग सँ जोड़ल
हे धर्म-सेतु, की विधि तोड़ल !

तखन ओ रामक चरण मे एना प्रणिपात करैत छथि जेना कि पिता दशरथ रामक रूप मे पुनर्जीवित भऽ गेल होथि। एम्हर राम अपन अश्रु-जल सँ भरतक जटा-जूट कें भिजा दैत छथि और हुनका कोमल करें उठबैत अपना वक्षस्थल सँ कसि कय लपेटि लैत छथि। कम्बन एहि दृश्य सँ द्रवित भय ई उद्‌गार प्रकट करैत छथि :

उर लपटाओल बन्धु, राम एना सुधि-बुधि बिसरि।
मिलल विवेकक सिन्धु, प्रेम-मूल जनु धर्म सँ ॥

तखन राम हुनका पुछैत छथिन्ह—"महाराज कोना छथि ?" और भरत उत्तर दैत छथिन्ह—"तात, ओ आब एहि संसार मे नहि छथि। अपनेक वियोग-रोग सँ हुनक प्राणान्त भऽ गेलैन्ह। हमर कुटिल जननी कैकेयीक माँगल वरदान अभिशाप बनि हुनक प्राण हरण कय लेलकैन्ह।" ई शब्द सुनि रामक आँखि नाचि गेलैन्ह आ तहिना हुनक मानस सेहो। दूनू मिलि जेना भँवर-भ्रमित भऽ गेल हो। "वैह राम जे महान सँ महानतम छलाह" भूमिसात् भऽ गेलाह।

ऋषि वशिष्ठ हुनका एहि शब्दें प्रबोधैत छथिन्ह—"जन्मे जकाँ मृत्यु प्रकृतिक एक प्रक्रिया अछि। सम्पूर्ण शास्त्र मे निष्णात अहाँ एहि सत्य कें कियै बिसरि रहल छी ?" एहि शब्द सँ आश्वासन ग्रहण कय राम निकटवर्त्ती वन-धारा मे जाइत छथि आ स्नान कय तीन वेर मृत पिता कें तिलांजलि दै छथि।

स्थानाभावक कारणें लेखक आगूक कारुणिक दृश्य कें उपस्थित करबा सँ असमर्थ अछि। भरत राम कें राजदंड ग्रहण करबाक अनुनय करैत छथि। किंतु राम हुनका कहैत छथिन्ह जे हम पिताक आज्ञापालन करैत चौदह वर्ष वन मे बितायब और अहाँ एहि अवधि मे हमरा आज्ञा सँ राज्यक शासन-सूत्र सम्हारब।

भरतक मुकुट

जखन भरत आगामी चौदह वर्षक दीर्घ अवधिक विषय मे सोचैत छथि तऽ ओ पुनः व्यथाविद्ध भऽ जाइत छथि और तखन हुनक ध्यान प्रभुक चरण-कमल दिस चल जाइत छन्हि, जे ईश्वरक अनुग्रह केर चिर प्रतीक थिक, ओ अनुग्रह जे समस्त ब्रह्माण्ड कें एवं ओकरा भीतर घटित प्रत्येक घटना-क्रमक संचालक थीक। ओ कलहथिन्ह—"कृपा कय अपन पावन चरण मे धारण कैल सौभाग्यशाली पादुका

हमरा प्रदान कैल जाय।" और राम ओ पादुका हुनका देलथिन्ह जे हुनका इहलोक आ परलोक दुहुक परमानन्द प्रदान केनिहार छल। नियम-निष्ठा सँ पूर्ण भक्तिक संग भरत जखन ओहि पादुका कें अपना माथ पर लगौलन्हि तऽ ओ सोचलन्हि— 'यैह हमर मुकुट अछि।' ओ रामक चरण मे प्रणिपात कैलन्हि और रामक चरण-स्पर्श सँ पुनीत भेल धूलि लगाय अपना शरीर कें प्रोद्भासित करैत ओ विदा भेलाह।

आगत लोकनिक विदा हेबाक संग अयोध्याकाण्ड पर पटाक्षेप होइत अछि संगहि अरण्यकाण्डक पट उठैत अछि।

अरण्य काण्ड

उद्धारक चरण

तीनू चित्रकूट पर्वत कें छोड़ि दंडकारण्य नामक वन मे पदार्पण करैत छथि जतय हुनका एक दीर्घकाय राक्षस विराध सँ भेट होइत छन्हि जे दुहू भ्राता कें भक्षण करबाक धमकी दैत अछि। राम ओकरा पर अपना चरण सँ प्रहार करैत छथि कि हुनक चरण-स्पर्श होइते ओ राक्षस अपन पूर्व रूप कें प्राप्त करैत अछि। तखन ओ कहि सुनबैत अछि जे ओ कोना पहिने इन्द्रक सभा मे तुम्बुरु नामक संगीतज्ञ छल, मुदा ओकर काम-लोलुपातक कारणें इन्द्र ओकरा दंडित करैत राक्षस बनि जेबाक श्राप देलथिन्ह और इहो कहलथिन्ह जे रामक चरण-स्पर्श सँ ओ पुनः अपन पूर्व रूप प्राप्त करत। अपन श्राप आ श्राप-मुक्तिक स्मरण करैत विराध रामक कृपाक स्तुति मे किछु सुन्दर भक्ति-गीत गबैत अछि :

अपनेक चरण जँ एहन प्रभो।
चिर शान्ति-मुक्ति-गुण-गहन विभो॥
वेदादि जकर महिमा-कीर्त्तन।
त्रैलोक व्याप्त लीला-नर्त्तन॥
तऽ रूप अहँक जे सत्य पूर्ण॥
की हैत सुविस्तृत दिव्य वर्ण॥

ईश्वर केवल जड़ प्रकृतिये मे नहि अपितु चेतन पदार्थो मे समान रूपें निवास करैत छथि। मुदा ई एक रहस्ये थीक जे ई सभ प्राणी ओहि ईश्वर कें नहि जनैत अछि। स्रष्टा कें सृष्टिक ज्ञानरहितो सृष्टि कें अपन स्रष्टाक संबंधक ज्ञान नहि छैक—एहि मे पारस्परिकताक नियम भंग होइत बुझि पड़ैत अछि।

गो-वत्स न जे अपना माता कें नहि चिन्हैछ।
निज वत्स बिना जनने गायो नहि रहि सकैछ॥
ई सृष्टि अहँक शिशु, जग-जननी, हे प्रभु, अपने।
नहि कोनो मात्र सन्तान न जानी जे अपने॥

पर कोना अहिंक सन्तान अहीं सँ नहि परिचित।
अछि ओकर दृष्टि की अज्ञानक तम सँ कीलित॥
सत्यो छी अहँ आ भ्रांति अहिंक जनु कल्पलता।
बिनु अयने आबि सकी, रहितो, नहि अहँक पता॥

ईश्वर जे कि अज्ञानी आ ज्ञानवान सबहक हृदय मे निवास करैत छथि तखने जानल जा सकैं छथि जखन अज्ञानीक अन्तर मे ज्ञान-रश्मि प्रस्फुटित होइत अछि। तैं इहो नहि कहल जा सकैत अछि जे ज्ञान-प्राप्तियेक क्षण मे हुनक दर्शन होइत अछि। ज्ञान द्वारा हुनक साक्षात्कार भेलाक पूर्वो ओ हृदय मे विद्यमान रहैत छथि। एही सत्य कें कवि कम्बन विराधक एहि कथन द्वारा गंभीर विरोधाभासपूर्वक प्रस्तुत करैत छथि—'बिनु अयने आबि सकी, रहितो, नहि अहँक पता।' ईश्वरक वास्तविक उपस्थिति, कविक अनुसार, व्यक्ति द्वारा कैल गेल हुनक निजी अनुभवक पूर्वो रहैत अछि।

विराधक विदा भेलाक पश्चात् तीनू गोटे शरभंग ऋषिक आश्रम दिस यात्रा करैत छथि। आश्रमक दुआरि पर आबि कय राम देवराज इन्द्रक प्रतीक-चिह्न देखैत छथि और राम आश्रमक भीतर ई देखबा लय चल जाइत छथि जे इन्द्र ओतय छथि वा नहि। वाल्मीकि रामायण मे जखने इन्द्र राम कें देखैत छथि ओ रामक भेट केनहि बिना झट दय आश्रम सँ विदा भऽ जाइत छथि जाहि सँ पृथ्वी पर रामक कार्यपूर्त्ति मे बिलम्ब नहि हो, किन्तु कम्बन इन्द्रक भेट राम सँ करबैत छथि जाहि सँ ओ भगवानक प्रति एहि हेतु कृतज्ञता-ज्ञापन कऽ सकथि जे ओ देवतागणक प्रार्थना कें मानि अधर्मक विनाश करबा लय मानवरूप मे पृथ्वी पर अवतरित हेबाक अनुकम्पा कैलन्हि। एहि साक्षात्कारक आयोजन कवि कें पृथ्वी लोकक घटनाक्रम कें ब्रह्माण्डीय पृष्ठभूमि मे व्याख्यायित करबाक आ तकरा द्वारा 'मानव' क पार्थिव परिप्रेक्ष्य कें अधिक विस्तृत करबाक अवसर प्रदान करैत छनि। इन्द्र रामक स्तुति करैत कहैत छथि :

करइत रामक स्तुति इन्द्र।
भक्तिक स्वर गुंजित मन्द्र॥
हे विश्व-प्रकाशक राम।
जग अहिंक प्रकाश्य निकाम॥
जग केर कण-कण कय व्याप्त।
सब कें निज मे कय आप्त॥
तैयो छी विलग अलिप्त।
कनियो ने कथू मे लिप्त॥

खल-दल सँ भय आक्रांत।
छल भेल हमर प्राणांत॥
प्रभु चरण-शरण हम धैल।
विनती अर्पण हम कैल॥
झट भेटल कृपा-वरदान।
हे नाथ, अनाथक प्राण॥
नर-तन मे भय अवतीर्ण।
सब विधि कैलहुँ वर पूर्ण॥
पद-पंकज प्रभु अपनेक।
नहि आबय ध्यान कनेक॥
से पृथ्वी पर विचरैछ।
की भाग्य हमर वढ़वैछ॥

शूलकेर वरण

इन्द्र अत्यन्त प्रभावित होइत छथि—भगवानक भक्त लोकनिक प्रति करुणा सँ, हुनका द्वारा बहु-आयामी लोकक त्याग कय देश आ कालक सीमा मे अपना कें आवद्ध कैला सँ और मात्र 'मानव'-उद्धारक हेतु मानवीय सुख-दुखक अप्रतिष्ठाक वरण कैला सँ ! ओ भगवान गुण-गानक क्रम कें जारी रखैत छथि :

हे ईश, अहँक जे ईश्वरत्त्व।
अछि सर्व व्याप्त चिर ज्ञात तत्त्व॥
पर किनको नहि से अविकल मति।
जनिका हो अहँक पूर्ण अवगति॥
नहि अंधकार, नहि जे प्रकाश।
नहि जनिक अधः वा उर्ध्व वास॥
नहि वृद्ध वयस भय वयस वृद्ध।
आद्यन्त मध्य नहि जकर सिद्ध॥
नहि जकरा पूर्वापरक नियम।
चिर नेति-नेति अछि 'अस्ति' अगम॥
अपने यदि नहि स्वीकार करी।
पृथ्वी पर नहि अवतार धरी॥
धनु केर लय भार न भुवि विचरी।
नहिये कि हमर उद्धार करी॥

पथ-श्रम सँ नहि कय अरुण चरण।
जँ करी न जन केर कष्ट-हरण॥
तँ अभियोगे कि लगाओत के।
प्रतिदान अहँक दय पाओत के॥
श्यामल अनन्तता-सिंधु-अयन।
जनिकर निरवधि चिर शांति-शयन॥
से हरथि दुःख कय दुखक वरण॥
हम करब तकर की प्रत्यर्पण॥

अनन्त केर परिसीमन

भक्तिक प्रबलता मे इन्द्र अनन्त कें नापबा लय अद्‌भुत् रूपें कल्पनाक एक विशाल नपनाक निर्माण करैत छथि किन्तु ओ ई अनुभव करैत छथि जे ओ नपना ओहि उद्देश्य मे अत्यन्त अक्षम अछि।

त्रिभुवन केर स्रष्टा ब्रह्मा जँ।
सिरजथि लय तत्त्व सकल ग्रह सँ॥
मापक प्याला अति विशद एक।
तकरा सँ मन मे धरथि टेक॥
नापथि प्रभु महिमा-विस्तृति कें।
ठाढ़े रहि दक्ष-क्षिप्र गतियें॥
होयत कतबो युग-कल्प शेष।
से रहत अपरिमित चिर अशेष॥
अपने बनाय पृथ्वीक पात्र।
भरि दधिक स्थान मे उदधि मात्र॥
कय मेरु पर्वतक मथन-दंड।
कर-कमल मथल सागर प्रचंड॥
निज कोमल तन कय बहु क्लेशित।
हमरा देलहुँ वरदान अमृत॥
तऽ राक्षस कुल अपनेक करें।
रहि सकत कोना बिनु दलित भेने॥

राम, लक्ष्मण आ सीता महर्षि अगस्त्यक पर्वतीय आश्रम दिस प्रस्थान करैत छथि जे 'सद्यः प्राप्त मधुओ सँ कोटि गुण मधुर' जलक टेढ़-मेढ़ प्रपात सँ परिपूर्ण अछि।

योगी गज

महर्षि अगस्त्यक पांडित्य विश्व-ज्ञान-कोष जकाँ गुरु-गंभीर छल। ओ न केवल कला, काव्य ओ आध्यात्मिक संस्कृतिक आचार्य छलाह, अपितु विज्ञान, आयुर्वेद, शस्त्रविद्या, बन्धनिर्माण, सिंचन एवं सांसारिक विद्याक विभिन्न शाखाक पारंगत विद्वान सेहो छलाह। दूर-दूर सँ लोक तिरुनेलवेली जिलाक पोडिकाइ पर्वतमाला पर अगस्त्यक विश्वविद्यालय मे पढ़वाक हेतु अबैत छल। ओ ज्ञान आ संस्कृतिक 'बिजली घर' छलाह। जखन ओ सुनलन्हि जे राम हुनक आश्रमक निकट आयल छथि तऽ ओ हुनक स्वागत करबा लय द्रुत गति सँ बढ़लाह। एकरा विपरीत वाल्मीकिक अगस्त्य राम कें आनबाक हेतु एक दूत पठबैत छथि।

तमिल प्रदेशक परम्परानुसार अगस्त्य अपना समय मे प्राप्त संपूर्ण मानव-ज्ञान कें अनेक पुस्तक मे सूत्रबद्ध कय तमिल भाषा मे प्रकाशित केने छलाह, यद्यपि आगू चलि कय जखन तमिलनाडुक एक विशाल क्षेत्र समुद्र मे डूबि गेल तऽ ई पुस्तक सब लुप्त भऽ गेल। तैं कम्बन वर्णन करैत छथि जे विष्णु जकाँ अगस्त्य तमिल भाषाक मापदण्ड सँ ब्रह्माण्डक ऊँचाइ कें नापलन्हि।

अगिला पद्य मे कम्बन एक प्रतीकात्मक अर्थवला दन्तकथा केर चर्चा करैत छथि। बहुत प्राचीन काल मे असुरक एक जाति छल जे समस्त नीतिशास्त्रीय एवं आध्यात्मिक ज्ञान-भंडार कें एकत्र कय ओकरा नेने महासागरक तल मे चल गेल। तखन देवतागण अगस्त्य लग जाय हुनका प्रार्थना केलथिन्ह जे ओ ओहि डूबल ज्ञान-भंडार कें बचाय पुनः प्राप्त करथि। अगस्त्य हुनक प्रार्थना पर काज कैलन्हि; ओ समुद्रक जल कें अपना अंजुलि मे लय पीबि गेलाह जाहि सँ समुद्र सुखा गेल तखन देवता गणक प्रार्थना पर पुनः अपना पेट सँ मुँह बाटे समुद्र-जल कें बहार कऽ देलन्हि और ओहि छिपाओल भंडार कें पुनः मानव-जाति कें उपलब्ध करौलन्हि।

रसिकमणि टी० के० चिदम्बरनाथ मुदालियर एहि अनुश्रुतिक व्याख्या पाँच शताब्दी पूर्व मिरैन्डोला द्वारा कैल गेल कार्यक आलोक मे करैत छथि। ग्रीक कला एवं साहित्य ततेक गूढ़ एवं जटिल छल जे किछु इटली-निवासी जे ग्रीक परम्परा सँ नितान्त अनभिज्ञ छलाह ओकर अत्यन्त भ्रामक टीका कैलन्हि। इटली-निवासी वैयाकरण एवं टीकाकार सभक एक दल जकरा कोनो सौन्दर्य-चेतना नहि छलैक अपन अनुर्वर बुद्धि कें उत्कृष्ट ग्रीक कलाकृतिक निरूपण करबा मे लगा रहल छल और ग्रीक संस्कृति मे जे किछु सुन्दर आ भव्य छल तकरा लेपि-पोति रहल छल। फलतः ई भ्रान्त टीकाकार सभ कलाविरोधी असुर लोकनिक एक जाति बनि गेल छल जे अपन अल्पज्ञता सँ ग्रीक मानस केर विलक्षण उपलब्धिक ध्वंस कऽ रहल छल! एहि अंधकार-युग मे मिरैन्डोलाक जन्म भेल छल। ओ ग्रीक कलाक गंभीर अध्ययन कैलन्हि; इटली निवासी वैयाकरण आ टीकाकारक असत्यताक रहस्योद्घाटन

कैलन्हि और ग्रीक संस्कृतिक आत्मा कें प्रकाश मे आनलन्हि। हमरा लोकनि संस्कृतिक इतिहास मे बहुधा एहन घटना कें घटित होइत देखै छी जाहि मे महान कलात्मक एवं आध्यात्मिक क्रिया-कलापक एक युगक पश्चात् भ्रान्तिपूर्ण टीकाक एक एहन अंधकारपूर्ण युग अबैत अछि जे ओकरा दबा दैत अछि। टी० के० चिदम्बरनाथ मुदालियरक ई सोचब तर्कपूर्ण छन्हि जे अगस्त्य अवश्य कला एवं ज्ञान कें बर्बर लोकनिक मुट्ठी सँ मुक्त केने हेताह और हुनका द्वारा समुद्र कें पीबि जेबाक और देवतागणक आग्रह पर पुनः ओकरा उगिलि देबाक दन्तकथा अवश्य हुनका द्वारा कैल गेल संशोधन एवं पुनर्व्याख्याक कार्य दिस प्रतीकात्मक संकेत करैत अछि।

अगिला पद्य मे कम्बन पुनः अगस्त्य द्वारा संपन्न असाधारण आध्यात्मिक कार्य दिस प्रतीकक भाषा मे संकेत करैत छथि। किछु अद्वैतवादी जिज्ञासु लोकनि अगस्त्य लग आबि हुनका पुछलथिन्ह—"ब्रह्म कें प्राप्त करबाक सभ सँ सुलभ मार्ग कोन अछि?" अगस्त्य एकर उत्तर शब्द मे नहि दय एक युक्तियुक्त प्रदर्शन द्वारा दैत छथि :

मायिक गिरि-शिखर गगन भेदी
ससरैत मेघदल केर माला
ओकरा ग्रीवा मे झूलि रहल
रोपल ओकरा पर ऋषि अगस्त्य
निज चरण
तुरत चढ़ि गेला उपर
आ शैल नीच सँ नीच होइत
पाताल धसल
विजयी अगस्त्य ओकरा माथा पर
ठाढ़ भेला योगी गज सम !

ई प्रदर्शन अगस्त्यक प्रश्नकर्त्ता कें आध्यात्मिक विकास केर केन्द्रीय समस्याक समाधान करबाक मार्ग नीक जकाँ बुझा देने हेतैन्ह। मानव आ ईश्वरक बीच जे एक बाधा अछि से मनुष्यक अहंकार थीक, जकरा कम्बन विशाल गगनभेदी मायिक पर्वतक रूप मे सूचित करैत छथि। मुदा ई पर्वत, यद्यपि मायिक अछि, तथापि ई मानव मनक वास्तविक दुर्दमनीय विस्तार अछि और काम, क्रोध, मायादि अज्ञान केर मेघ सँ आच्छादित अछि। जाही क्षण मनुष्य दृढ़तापूर्वक एकरा पर अपन पैर रोपैत अछि और एकरा पराजित करैत अछि ओ ईश्वरक अनुभूति करैत अछि। ई एक रहस्यवादी प्रक्रिया थीक जे कि हठयोग जकाँ कोनो शारीरिक कष्ट सँ

युक्त नहि थीक और अगस्त्य द्वारा ईश्वर-प्राप्तिक सुलभ मार्गक रूप मे प्रशंसित अछि।

अगस्त्यक संबंध मे कम्बन एक दोसर किम्वदन्तीक वर्णन सेहो करैत छथि और ई संभवतः कोनो एहन भू-वैज्ञानिक उथल-पुथल पर आधारित अछि जे दक्षिण भारत कें प्रभावित केलक। भगवान शिव आ पार्वतीक विवाह हिमालय मे हैब निर्धारित छल। समस्त मानव-जाति ओहि विवाह कें देखबा लय दौड़ि पड़ल जकर परिणाम ई भेल जे ओहि अभूतपूर्व भार कें वहन करबा सँ अक्षम भय हिमालय धसऽ लागल। तुरत भगवान शंकर वामन अगस्त्य कें बजबा पठौलन्हि और हुनका शीघ्र दक्षिण दिस जेबाक आग्रह केलथिन्ह। शंकरक बात कें मानैत प्रतिभारक रूप मे अगस्त्य पोडिकाइ पर्वत पर चलि एलाह। एकरा बाद धसैत हिमालय पुनः ऊपर चल आयल और पुनः सन्तुलन स्थापित कैल गेल। एहि किम्वदन्तीक द्वारा मात्रा नहि मूल्य कें तौलल जा रहल अछि एवं सांस्कृतिक शक्तिक रूप मे अगस्त्यक मूल्य कें निर्भीकतापूर्वक शिव एवं शेष मानव-जातिक समान प्रस्तुत कैल जा रहल अछि।

वैह अपार विद्वत्ता एवं आध्यात्मिकता सँ सम्पन्न ऋषि ओहि रामक स्वागत करबाक हेतु श्रद्धा-समन्वित भय द्रुत गतियें आगू बढ़ैत छथि जखन ओ हुनक आश्रमक निकट अबैत छथि। वेग सँ बाहर अबैत काल ओ सोचैत छथि जे रामक आगमन हुनका द्वारा कैल गेल संपूर्ण तप केर परिणति एवं सिद्धि कें सूचित करैत अछि। राम-रूप ईश्वरक दर्शन करबाक हेतु जाइत काल ओ पुलकित होइत छथि और दिव्य आनन्द मे घोषित करैत छथि :

चिर मुखरित चारिहुँ वेद।
सद्ग्रंथक सकल प्रभेद॥
धय ज्ञानक चाक विशाल।
ब्रह्मा जँ पिसथि बेहाल॥
कतबो दिन करता कर्म।
पौता न सत्य केर मर्म॥
पर वैह अगोचर तत्त्व।
लय नर-तन सगुणक सत्त्व॥
नयनक भय विषय अमोल।
हमरा सुनबय मृदु बोल॥
आयल छथि स्वयं रमेश।
दियबय सौभाग्य अशेष॥

कम्बन दुहूक मिलन कें भव्य गीत मे गुंजित केने छथि—

राम सुदीर्घ मूर्ति आगत, ऋषि-चरण झुकैत।
भाव-मूर्त्ति ऋषि थकित, हृदय रस-मथन करैत॥
परम प्रेम डुबि, प्रभु कें कसि कय उर लगबैत।
आनन्दाश्रु भरल दृग, 'स्वागत' शब्द कहैत॥
वैह महर्षि अमर जे बनला काव्य गवैत।
दछिनक चिर नव तमिल-भारती भरित करैत॥

अगस्त्यक आश्रमवासी ऋषि लोकनि रामक आगमनक उपलक्ष्य मे उत्सव मनौलन्हि। हुनक सम्मान मे एक भोज आयोजित भेल और तकरा पश्चात् अगस्त्य राम कें प्रार्थना कैलन्हि जे ओ हुनके आश्रम मे निवास करथि। राम दुष्ट शक्तिक संपूर्ण विनाश करबाक प्रतिज्ञा कैलन्हि और अगस्त्य सँ ओहि आश्रम सँ आगू बढ़-बाक अनुमति माँगलन्हि जाहि सँ ओ एहन सामरिक स्थान पर निवास करथि जे राक्षस दिसक मार्ग पर बीचोबीच स्थित हो और जतय सँ ओ राक्षसक सामना कऽ सकथि। अगस्त्य रामक एहि योजनाक अनुमोदन कैलन्हि और राम कें शिवक ओ धनुष आ तरकस प्रदान केलथिन्ह जे बहुत काल सँ हुनक पूजा मे राखल छल। ओ राम कें शिवक ओहो शक्तिशाली शूल देलथिन्ह जकरा लऽ कय शिव आकाशीय तीनू पुरक विनाश केने छलाह। ई सभ उपहार देलाक पश्चात् अगस्त्य राम कें परामर्श देलथिन्ह जे ओ पंचवटी मे अपन आश्रम बना सकै छथि जतय गोदावरीक उद्गम अछि। कम्बनक अगस्त्य ओहि दृश्यगत भव्यताक विशद वर्णन करैत छथि जे पंचवटी कें आच्छादित केने अछि :

वन-तरुक शीर्ष ऊपर उठैत।
तकरा पर वेणुक वन चढ़ैत॥
गिरि-शिखर ताहि पर उठि कढ़ैत।
सभ एक-एक सँ जनु लड़ैत॥
शीतल-शोभित उपवन-निकुंज।
गिरि-पार्श्व बढ़ल जत पुंज-पुंज॥
कुसुम-स्तवकक झूलैत गात।
लिपटल-उरझल, सुरभित बसात॥
मृदु मन्द संचरित सरित एक।
नहुँ-नहुँ उर्म्मिल अलसित कनेक॥
हे पुत्र, एहन शुचि स्थल ललाम।
थिक पंचवटी केर बसल धाम॥

एहि वर्णनक संग ऋषि तीनू गोटा कें विदा करैत छथि। ओ तीनू ऋषिक आशीर्वाद पावि उत्तर दिशा मे पंचवटी दिस प्रस्थान करैत छथि।

कोस-कोस, प्रान्त-प्रान्त।
पार कैल गिरि वनान्त।।
नदी-नाल, रम्य धार।
कतहु पड़ल, कतहु ठाढ़।।
गिरिक पाँति कतहुं चलल।
सटि वैसल कतहु घिरल।।
रुकल हुनक चरण तखन।
गृध्रराज भेटल जखन।।

पक्षी-माता

पर्वतमाला सँ एक कारी पहाड़ निकलल अछि और ओहि पहाड़ सँ एक उच्च शिलाखण्ड, जाहि पर गृध्रराज जटायु वैसल छथि। मनीषी वाल्मीकि जटायु कें एक वट-वृक्ष पर बैसल देखबैत छथि और एकरा अतिरिक्त जे ओ विशाल एवं शक्तिशाली छथि ओहि पक्षीक कोनो दोसर वर्णन नहि दैत छथि। किन्तु कम्बन ओहि पक्षीक वर्णन मे विशेष वर्णन-कला आ जीवन्त चित्रकलाक प्रचुर उपयोग करैत छथि। ओ पक्षी आगूक किछुए दृश्य मे अपन जीवने सीताक रक्षा मे अर्पित करय जा रहल अछि। विशुद्ध कला मे निपुण, ज्ञान केर गांभीर्य मे सन्तुलित ओ प्रतिष्ठित, सत्यनिष्ठ एवं निर्मल, बुद्धि मे तीक्ष्ण जटायु अपन छोट आँखि सँ परि-पक्व राजनीतिज्ञ जकाँ बहुत दूर आगू देखि सकैत छथि। वाल्मीकि रामायण मे जटायु राम आ लक्ष्मण लग अपना कें हुनक पिताक महान मित्रक रूप मे प्रस्तुत करितहुँ दशरथक संबंध मे कोनो जिज्ञासा नहि करैत छथि। दोसर दिस कम्बन जटायु सँ दशरथक स्वास्थ्यक विषय मे जिज्ञासा करबाय प्रभावोत्पादक शोक-गीत द्वारा एक पक्षी आ मनुष्यक बीच प्रेरणादायक मैत्रीक गुण-गान करबाक विशिष्ट अवसरक सृजन करैत छथि। परिणाम ई होइत अछि जे कल्पना एवं नाटकीय सहानुभूति द्वारा पाठक सँ जटायुक सान्निध्य अधिक बढ़ि जाइत अछि और पाठकक रागात्मक सहयोग प्रभावपूर्ण ढंग सँ प्राप्त कैल जाइत अछि।

जटायु अपन विशाल पसरल पाँखिक आश्रयपूर्ण छाया मे तीनू कें पंचवटी धरि मार्ग-दर्शन कैलन्हि आ अगस्त्य द्वारा बताओल स्थान-विशेष कें देखाय ओ टोह लेबा लय उड़ैत चलि गेलाह। अपन ध्यान अपन दुहू पुत्र आ कनकाभ वक्षवाली अपन पुत्रवधू पर केन्द्रित केने जटायु निकटवर्त्ती प्रदेशक गश्ती करब प्रारम्भ कैलन्हि। कम्बन, जनिका मानवीय परिधि सँ बहार निकलबाक अतुलनीय क्षमता

छन्हि, आब एहि तीनू गोटे कें ओहि पक्षीक कोमल हृदयक भीतर सँ एवं ओकर चिन्ताकुल नेत्र सँ देखैत छथि और कहैत छथि :

जटायू देखै छथि कि तीनू स्वजन कें।
जेना खग-जननि नीड़-शिशु केर तन कें॥

एहि क्षमताक द्वारा कवि एहि काल्पनिक आ दन्तकथात्मक पात्र मे सप्राणता, भावना आ शक्ति भरबा मे सफलता प्राप्त करै छथि आ मनुष्य एवं पक्षीक बीचक अन्तर कें मेटबैत छथि।

शूर्पणखाक विचित्र प्रेम

एहि रसमय परिवेश मे राम और सीता आनन्दपूर्वक दिन बितबैत छथि। एही बीच एक अन्तःप्रवेष्टा हुनका जीवन मे प्रवेश करैत अछि और घटनाक्रम कें तीव्र गति प्रदान करैत अछि। पंचवटीक निकट एक विशाल जंगल पर रावणक छोट बहिन शूर्पणखा नामक राक्षसी अखंड शासन करैत अछि। नृशंस एवं षड़यंत्रपूर्ण नियति ओकरा ओतय आनलक जतय राम रहैत छलाह। रामक अवतार राक्षस-कुलक उन्मूलन करबा लय भेल छल आ शूर्पणखाक जन्म कविक अनुसार रामक कार्यपूर्ति मे योगदान देबाक हेतु भेल छल। फलतः एहि महाकाव्य मे एहि दूनूक भेट अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अर्थ रखैत अछि। जखने शूर्पणखाक दृष्टि राम पर पड़ैत अछि ओ अनुभव करैत अछि जे हुनक सुन्दरता एहन अछि जकर अवलोकन ओ पहिने कहियो नै केने छल। ओ हुनक प्रेम मे पागल भऽ जाइत अछि। ओकरा आश्चर्य होइत छैक जे एहन सुन्दर पुरुष जकरा सुखोपभोगक केलि-क्रीड़ा मात्र मे अपना जीवन कें लगेबाक चाही कियै एहन कठोर तपश्चर्या मे अपना कें क्षीण आ शुष्क कऽ रहल अछि। ओ अपना मन मे प्रश्न करैत अछि :

ध्यान-योग की ध्यान-क्रिया मे
हिनका मोड़ल ध्यान-दिशा मे!

वाल्मीकिक शूर्पणखा अपन लाल केश, विशाल उदर और विकर्षक कुरूपता नेने, अपन वासनाक प्रवल वेग मे, रामक सम्मुख जैवा सँ पूर्व अपन रूप नहि बदलऽ पबैत अछि। किंतु कंबनक शूर्पणखा अपन सिद्ध जादूक शक्तिक प्रयोग करबा मे चतुर अछि और रामक सम्मुख जेबा सँ पूर्व ओ एक सुन्दर सुकुमारीक सम्मोहक रूप धारण करैत अछि। ओ एक मंत्र बुदबुदायल और तुरत एहन शरीर और मुखमंडल प्राप्त केलक जे अपना आभा मे चन्द्रमो कें मंद कऽ देलक। एक झुमाबऽवला लय एवं गति सँ भरल गीतक द्वारा कंबन जगमगाइत एवं फलकल साड़ी मे शूर्पणखा कें रामक सम्मुख आनैत छथि। ओ मोर जकाँ मन्द गतियें

ससरैत और अपन अंग विशेष कें सम्मोहक रूपें कंपित करैत अबैत अछि। ओकर स्वर्णाभा कामनाक सतत पूर्ति केनिहार स्वर्गक कल्पतरुक मखमली मसृण नव किसलय जकाँ अछि। ओकर अरुण अधर सँ मानू कामोद्दीपक मधु झरि रहल अछि। ओकर अधरक पाछू चमकैत मोतिक लड़ी विद्यमान अछि। हरिण शावक जकाँ लाज भरल आँखि सँ ओ युक्त अछि। ई दुखक बात अछि जे मूल कविताक सम्मोहकताक किछुओ अंश अनुवाद मे नहि प्रस्तुत कैल जा सकैत अछि। ओहि दिव्यांगनाक वायवीय स्फूर्त्ति कें कवि अपन दिव्य कविता मे बहुत कौशल सँ पकड़लन्हि अछि। एहि गीत मे जाहि सौन्दर्य कें ओ देखौलन्हि अछि, अगिला गीत मे ओकरा श्रुतिगोचर करौलन्हि अछि। शूर्पणखाक नूपुरक झंकार ओकर कटि सँ बान्हल घंटिकाक रणन, ओकर ग्रिमहारक खनक, ओकर केश-राशि पर उड़ैत भ्रमरक गुंजन—ई सब ध्वनि परस्पर प्रतिद्वंद्विता करैत घोषित कऽ रहल अछि, "आबि रहल अछि एक कुमारिका !"

यद्यपि कवि प्रेमक विषय मे बहुत तीव्रता आ वास्तविकता सँ गाबि सकैत छथि, तथापि ओ कतेको पद्य मे शूर्पणखाक विचित्र प्रेम कें हास्य-रसक पुट दय चित्रित करैत छथि। रामक द्वारा अस्वीकृत भेला पर ओ किछु जमल बर्फ कें काढ़ि अपन उत्तुंग उरोज पर लेपि लैत अछि, मुदा ओ जरैत पाथर पर फेकल माखन जकाँ गलि कय बहि जाइत अछि, अंत मे ओकर नाक, कान आ उभड़ल उरोज कें काटि लक्ष्मण ओकर भीषण प्रेम-प्रदर्शन कें दंडित कैलन्हि। ओ कानय लागलि "एक विशाल ढोल जकाँ, ये यमराजक आज्ञा सँ, राक्षसकुल केर उन्मूलनक घोषणा कऽ रहल छल !"

शूर्पणखाक संबंध रावणक राज-परिवार सँ छल। ओकरा पाछाँ राक्षस-साम्राज्यक प्रताप एवं गरिमा विद्यमान छलैक। ओकर अभ्यास छलैक अनका यातना दी किंतु स्वयं यातना नहि भोगी। सामान्य मनुष्य द्वारा कैल गेल अवमानना ओकर राजकीय ग्लानि कें उभाड़ि देलकैक। अपराधी न केवल अदंडित रहि गेल छल प्रत्युत अपन अपराध पर स्वार्थपूर्ण आनन्दक सेहो अनुभव कऽ रहल छल जखन कि महामहिम सम्राटक बहिन घूरा मे लोटा रहल छलि। रावणक आदेश सँ जे दूटा राक्षस खर और दूषण ओहि जंगलक रक्षा कऽ रहल छल जखन एहि अपमानक समाचार पबैत अछि तऽ राम सँ युद्ध करय अबैत अछि, मुदा दूनू राम द्वारा मारल जाइत अछि।

लंका नगरी

एहि दुहूक विनाशक पश्चात् शूर्पणखा लंका विदा होइत अछि। ठीक एही समय मे कम्बन रावण कें ओकर सम्पूर्ण गौरव एवं प्रतापक सँग हमरा लोकनिक

सम्मुख प्रस्तुत करैत छथि। ओकर चित्रण विशुद्ध असत् शक्तिक प्रतीक एक महद्राक्षस जकाँ नहि, प्रत्युत आध्यात्मिक रूपें महान, उपकारी और अत्यंत सुसंकृत व्यक्तिक रूप मे कैल जाइत अछि जकर व्यक्तित्त्व कें कलुषित करऽवला और ओकर पतनक कारण स्वरूप एकमात्र दोष ओकर दिग्भ्रष्ट एवं अंधतापूर्ण कामलिप्सा थीक। ओकर राजसभा मे अपना अंजलिबद्ध हाथ कें माथ पर उठौने महाराजा लोकनि ओकरा केन्द्र बनाय मंडलाकार घूमैत छथि और ओहि मे सँ क्यो ई नहि जनैत छथि जे कि कोन दिशा मे और कखन ओं हुनका पर अपन दृष्टि-निक्षेप करत। स्वर्गक गायक तंबूरा (तुम्बुरु) मधुर संगीत स्वर मे ओकर शक्तिशाली स्कंधक वीरताक गुणगान करैत अछि। नारदक वीणाक तार सँ प्राचीन शास्त्रीय-संगीत परम्परा केर शुद्धता और श्रेष्ठता सँ नितान्त अविचलित जे संगीत निकलैत अछि से लगैत अछि श्रोताक कान कें मधुर-मधुर स्पर्श कऽ रहल हो। ई सभ संगीत एके बेर बन्न भऽ जाइत अछि जखन महासमुद्रक मंथन करऽवला अन्हड़क वेग सँ शूर्पणखा रावणक राजसभा मे आबि धमकैत अछि। अपना बहिनक सँग कैल गेल अप्रतिष्ठा और अंगभंग सँ रावण विस्मित भऽ जाइत अछि और सिंहनाद करैत ओ पुछैत अछि—"ई ककर काज अछि ?" शूर्पणखा, जे अपना अपराधीक प्रति अत्यधिक प्रेम सँ भरल छलि, उत्तर दैत अछि—"ओ दुहू मनुष्य छथि, जे अपन तरुआरि निकालि हमर अंग-भंग कऽ देलनि। किंतु ओ प्रेमक देवता सन लगैत छथि। और की ई संभव थिक जे दू टा कामदेव एके संसार मे एक संग रहैत होथि ?" अनुरक्ति सँ भरल ई शब्द संदिग्ध रूपें ओहि अंग-भंग केनिहार व्यक्तिक प्रति कोनो द्वेष-भावना सँ नितान्त मुक्त छल और रावण कें अवश्य कौतूहल सँ भरि देने हेतैक। किंतु ओकर सन्देह कें उपेक्षा करैत ओ रावण लग सीताक अत्यंत मुग्धकारी वर्णन कहि सुनौलक। ओकर योजना ई छलैक जे ओ रावणक कुख्यात कामलिप्साक लाभ उठाबय और सीता कें अपना लय अधिकृत करबाक हेतु ओकरा प्रेरित करय जाहि सँ ओ स्वयं राम एवं लक्ष्मण पर एकाधिकार प्राप्त करबा लय स्वतंत्र भऽ जाय। शूर्पणखा द्वारा देल गेल सीताक सौन्दर्यक कामोत्तेजक वर्णन रावणक हृदय मे ज्वाला धधकाय देलक। प्रेमोन्माद मे रावण सीता कें प्राप्त करबाक योजनाक विषय मे सोचैत भरि राति जागल रहि गेल। ओ अपन पितृव्य मारीच कें मँगबा पठौलक और बहुत किछु ओकर इच्छाक विरुद्ध ओकरा राम सँ एना बदला चुकेबाक हेतु विवश कैलक जे ओ राम कें सीता सँ अलग कऽ दियै और ओकरा सीताक अपहरण करबा मे एहि तरहें सहायता करय। फलस्वरूप मारीच स्वर्ण मृगक रूप धारण केलक जकर स्वर्णाभा पृथ्वी आ स्वर्ग दूनू कें आलोकित कऽ देलक और एहि रूप मे ओ पंचवटी आयल। जखन ओ पंचवटीक निकट आयल तखन सीता अपना कुटी सँ बहार भऽ रहल छलीह।

तन्नुक कटि दोलित, मृदु पद-गति
कोमल-कोमल
छलि घूमि-घूमि
ओ कुसुम-चयन मे लीन
मुदा हुनकर कर तँ
छल अपनहिं
सद्यः अनतोड़ल जनु कलित कुसुम !

एहि पद्यक मूल सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे कोना कंबन सीताक मनोहर संचरण मे अपना आत्मा कें डुबा दैत छथि एवं ओकरा सँ कविताक कोमल जाली बुनैत छथि। एहि दृश्य मे सीता श्री राम कें फुसियबैत छथि जे ओ अपना हाथ सँ ओहि स्वर्ण मृग कें पकड़थि, लक्ष्मण कें नहि पकड़य देथि। ई दृश्य जाहि गीत सब सँ भरल अछि तकर स्वर-योजना मे किछु विचित्र सम्मोहक एवं स्वैण प्रभाव अछि, एहन जेना ओकर स्वरवर्ण सभ अपन गीतात्मक लालित्य मे व्यंजनवर्ण कें परास्त कऽ रहल हो। जखन राम ओहि हरिणक पाछू गेलाह तऽ हरिण अपन कान कें ठाढ़ केलक और अपन चारू टाँग कें अपना छाती सँ सटा बहुत ऊँच छलाँग भरलक। ओ मानू 'गति' कें गति प्रदान करैत हवा आ मन दूनू सँ बेशी तीव्र गतियें दौड़ लगौलक। ओ पर्वतक ऊपर चढ़ि गेल, मेघ दलक भीतर मे छलाँग मारलक और जखन कखनो राम थाकि कय ठाढ़ भऽ जाथि तऽओ हुनका द्वारा पकड़बाक दूरी मे आबि जाइत छल और स्थिर भय ठाढ़ हेबाक स्वाँग करैत पुनः दूर ओ बहुत दूर चल जाइत छल। ओकर प्रलोभनपूर्ण गति ओहि पुष्पालंकृता गणिका सभक गति सदृश छल जे कंचनक हेतु अपन चंचल प्रेम-लीला कें पसारैत अछि। जखन पाठक हरिणक शारीरिक संचरण मे अपन ध्यान कें मग्न करैत अछि तखन अपन उपयुक्त किनु घृणित उपमा द्वारा कम्बन ओकरा यथार्थक दोसर तल पर लऽ जाइत छथि और ओहि दुखद रूपें 'प्रफुल्ल' वाला लोकनिक मानसिक गतिविधिक अवलोकन करावैत छथि जे अपना शरीरक विक्रय करैत अछि। नाम पात केर आकारक तीर लऽ कय राम हरिण कें विद्ध कैलन्हि। हरिण रामक स्वर धारण कय सहायताक हेतु चीत्कार कैलक और मृत भऽ कय खसि पड़ल। आब राम अनुभव कैलन्हि जे हरिण एक अधिक विस्तृत षड़यंत्रक अंग छल जकर पूर्व चेतावनी लक्ष्मण हुनका दऽ देने छलथिन्ह।

अपहरण

संकटक ओहि झूठ चीत्कार सँ सीता भ्रम मे पड़ि ई सोचय लगलीह जे राम विपदा मे फँसल छथि। सीता कें असकर छोड़बा मे अनिच्छुक लक्ष्मण हुनका सँ

भर्त्सना सुनि रामक रक्षाक हेतु दौड़बा लय विवश भेलाह। राम एवं लक्ष्मणक अनुपस्थिति मे रावण एक बूढ़ एवं अशक्त संन्यासीक रूप मे आयल और सीता जाहि भूमि खण्ड पर ठाढ़ि छलीह तकरा समेत हुनका उठाय अपना रथ पर राखि लेलक और आकाश मे उड़ि गेल। सीताक विलाप जटायु कें कर्णगोचर भेलैन्ह। ओहि पक्षी और राक्षसक बीच एक लोमहर्षक द्वंद्व युद्ध भेल जाहि क्रम मे रावण अपन तरुआरि सँ जटायुक दूनू पाँखि काटि देलकैन्ह और जटायु अचेत भऽ नीचा खसि पड़लाह। रावण शीघ्रता सँ सीता कें लंका लऽ गेलैन्ह और हुनक पवित्र शरीर कें स्पर्श करबा सँ भयभीत भय हुनका अपन सुन्दर अशोक-वाटिका मे राक्षसी सभक घेरा मे वन्दिनी बना कय राखि देलकैन्ह। कविक शब्द मे :

कारी-कारी राक्षसी-समूहक बीच
एहन सीता केर द्युति
दमकैत दामिनी-खण्ड जेना
वर्षाक सघन घनमाला कें
कऽ रहल खण्ड !

एहि बीच राम, जनिक मन आगामी आशंका सँ भरि गेल छल, बड़े वेग सँ आश्रम दिस घुरलाह और ओतय सीता कें नहि पाबि मर्म्माहत भऽ गेलाह। ओ ओहि आत्मा जकाँ छलाह जे अपना शरीर सँ अलग भेलाक पश्चात् पुनः अपन शरीररूपी पिंजरक खोज मे घुरि अबैत अछि मुदा ओ तकरा नहि पाबि दुखी होइत अछि। ओ एक विशाल धनुष आ बाण केर सागरक बोझ अपना ऊपर नेने ठाढ़ छलाह। लक्ष्मण हुनका एक रथक पहियाक चिह्न देखबैत छथिन्ह और बहुत व्यथित भेल दुहू जन ओहि चिह्न पर तलमलाइत चलि पड़ैत छथि। किछु दूर पर जाय राम एक हृदयविदारक दृश्य देखलैन्ह और झट दऽ आगू बढ़ि देखलन्हि जे लहूलोहान जटायु अचेत भूमिसात् छलाह। रामक आँखि सँ अश्रुधारा फूटि पड़ल जखन कि ओ जटायुक पवित्र शरीर पर खसि पड़लाह आ मूर्च्छित भऽ गेलाह। लक्ष्मण एक निकवर्त्ती प्रपातक गगनचुम्बी जल हाथ मे लय रामक मुँह पर फुहारा देलथिन्ह और ओहि सँ राम चेतना प्राप्त कय जटायुक दशा पर विलाप करय लगलाह। एहि विलाप कें सुनि गृध्रराजक मन मे नहुएँ चेतनाक संचार भेलैन्ह और अपन आँखि खोलि जटायु एहि पर आनन्दक अनुभव कैलन्हि जे हुनका जे कलंक लागल छलैन्ह तकरा आब ओ हटा चुकल छलाह। हुनका एहन सन अनुभव भेलैन्ह जेना कि अपन दूनू कटल पाँखि और सातो लोक कें ओ पुनः प्राप्त कऽ लेने होथि। जाहि चंचु सँ रावणक मुकुट कें खंड-खंड कय तोड़ि देने छलाह तकरा सँ ओ बड़े प्रेमपूर्वक राम आ लक्ष्मण कें पुनः-पुनः चुम्बन कैलन्हि।

जाहि रीतियें रावण सीता कें लऽ गेल छलैन्ह राम कें तकर वर्णन सुनेबा

सँ जटायु हिचकिचाइत छलाह। बहुत हिचिकिचाइत और अन्त मे साहस करैत ओ अपहरणक दृश्य कें प्रकारान्तर सँ एना सूचित कैलन्हि जे राम कें राक्षस-समुदाय रूपी तृण-मूल सभक बाढ़ि कें निर्मूल कऽ देबाक चाहियैन्ह। जखन ओ लड़खड़ाइत स्वर मे ई शब्द कहलन्हि तऽ राम ई अनुमान कऽ सकलाह जे अवश्य कोनो राक्षस सीताक अपहरण केने होयत आ जखन हुनक रक्षा करबा लय जटायु गेल हेताह तऽ ओ हुनक पाँखि काटि देने होयतैन्ह। तुरत रामक क्रोधानल भड़कि उठलैन्ह और ओ बजलाह, "जे देवलोक एहि दृश्य कें देखैत रहि गेल तकरा सहित समस्त लोक कें हम ध्वस्त कय देब।" रामक मन केर एहन विक्षिप्त स्थिति सँ घबड़ाय हुनक अनियंत्रित क्रोध कें शान्त करबाक हेतु जटायु एक विशेष प्रक्रिया अपनेबा लय उद्यत भेलाह। ओ जनैत छलाह जे कटु शब्द रामक हृदय कें आहत कऽ देतैन्ह किन्तु ओ एहन शब्द प्रयोग केने बिना नहि रहि सकैत छलाह कारण मात्र वैह शब्द ओहि समय मे वांछित परिणाम उपस्थित कऽ सकैत छल। ओ राम पर दोषारोपण कैलन्हि जे ओ असहाय सीता कें छोड़ि कंचन मृगक पाछू दौड़ि कय अपन कुलक अवमानना कैलन्हि। ओ स्पष्ट रूपें कहलथिन्ह—"दोष अहाँक थिक, संसारक नहि।" ई कटु शब्द रामक हृदय कें मर्मविद्ध कय देलकैन्ह एवं हुनक क्रोधक लहरि कें शान्त कऽ देलकैन्ह। राम कहलथिन्ह—"हे तात, कृपया हमरा ई कहू जे ओ राक्षस कोन दिशा मे गेल?" यावत् ओ ई शब्द बजलाह गृध्र-राजक मन घूमय लगलैन्ह और हुनक वाक् हरण भऽ गेलैन्ह और तत्क्षण हुनक प्राणान्त भऽ गेलैन्ह।

यद्यपि वाल्मीकिक जटायु राम लग सीताक अपहरणकर्त्ता केर नामक उद्घाटन कय दैत छथि, कम्बन ओहि अपहरणकर्त्ताक वास्तविक परिचय करेबा सँ पूर्व जटायुक मृत्यु देखाय एक नाटकीय रहस्यक सृजन करैत छथि। एकरा अतिरिक्त जटायु कें खूनक धार मे पड़ल देखि वाल्मीकिक राम कें ई सन्देह होइत छन्हि जे मनुष्यभक्षी गिद्ध अवश्य सीता कें मारि कय खा गेल हेतैन्ह आ तैं ओ तीर सँ ओकरा मारि देबाक उपक्रम करैत छथि। ठीक एही समय वाल्मीकिक जटायु राम सँ प्रार्थना करैत छन्हि जे ओ हुनका नहि मारथि और तखन विस्तार सँ कथा कहैत छन्हि जे कोना जखन ओ सीताक रक्षा करैक हेतु गेला तऽ रावण हुनक अंग-भंग कऽ देलकैन्ह। दोसर दिस, कम्बनक राम कें जटायुक हेतु उच्च श्रद्धा छोड़ि और किछु नहि छैन्ह कारण ओ हुनका अपने पिताक अन्तरंग मित्र मानैत छथि और दुहूक बीच प्रबल प्रेमक जे सम्बन्ध अछि तकर सौन्दर्य वाल्मीकिक रामक सन्देह सन शतांशो कोनो रूप सँ कनेको दूषित नहि होमऽ पबैत अछि। अपन प्रखर नाटकीय एवं मानवीय निरूपण द्वारा कम्बन जटायु कें एक अवि-स्मरणीय चरित्र बना दैत छथि।

किष्किधा काण्ड

जे जटायु दशरथक मृत्यु सँ भेल रिक्त स्थानक पूर्ति केने छलाह तनिकर अन्त्येष्टि केलाक पश्चात् राम एवं लक्ष्मण सीता कें तकैत यत्र-तत्र घुमय लगलाह। अन्ततः ओ किष्किधाक पार्वत्य प्रदेश मे पहुँचलाह जतय हनुमान दुहू गोटे केर हार्दिक स्वागत केलथिन्ह। हनुमान हुनक शील आ लावण्य पर मुग्ध भऽ गेलाह और हुनका भेलन्हि जे ओ दूनू कोनो दिव्य अतिथि ने होथि! ओ दुहू हनुमान मे तेहन रूपान्तरकारी परिवर्तन कऽ देलथिन्ह जे हुनक अन्तर्दृष्टि स्फीत भऽ गेलैन्ह और पृथ्वी परक संपूर्ण वस्तु हुनका नवीन अर्थ आ सौन्दर्यमय प्रतीत होमऽ लगलैन्ह। जाहि प्रस्थर खंड सँ अग्निस्फुल्लिग निःसृत होइत छल से ओहि दुहूक चरण स्पर्श सँ ततेक कोमल भऽ गेल जेना ओ मधुमय पुष्प मे परिवर्त्तित भऽ गेल हो। जेम्हर-कोम्हरो ओ लोकनि गेला तेम्हरे गाछ-वृक्ष सभ लीबि जाइत छल एहन सन जेना हुनका प्रति भक्तिभाव सँ नत भऽ गेल हो। हनुमान विस्मित भऽ बाजि उठलाह—"की ई धर्मरूप ईश्वर छथि?"

हनुमान जे किछु बजलाह ताहि सँ राम बुझलन्हि जे ओ अत्यन्त सुसंस्कृत व्यक्ति छथि जनिका मे शक्ति, मानसिक परिपूर्णता, ज्ञान, दृढ़ता एवं सहज प्रतिभा इत्यादि दुर्लभ गुणक संगम छन्हि। वस्तुतः कम्बनक अनुसार हनुमान संसार मे धर्मक एकाकीपन कें दूर करऽ आयल छलाह। राम लक्ष्मण कें कहलथिन्ह—"जाहि पूर्णत्व कें ने काव्य अपन शब्द-जाल सँ, ने अद्वैत ज्ञान अपन रहस्यवादक जाल सँ पकड़ि सकैत अछि से एहि वानरक रूप धारण कय पृथ्वी पर अवतरित भेल अछि।"

हनुमान अपन स्वामी कपिराज सुग्रीव लग गेलाह और हुनका रामक महान कुल-परम्परा, हुनक सर्वोच्च त्याग-भावना एवं हुनक वर्त्तमान स्थिति सँ अवगत करौलथिन्ह। सुग्रीव हनुमानक वर्णन सँ बहुत प्रभावित भेलाह और तत्क्षण राम सँ भेट करबाक प्रबल आकांक्षा व्यक्त कैलन्हि। दूनू एक टेढ़-टूढ़ पर्वतीय मार्ग सँ गेलाह और जखन एक मोड़ पर घुरलाह तऽ हुनका किछु दूर पर बैसल रामक दर्शन भेलन्हि। रामक रूप कें देखिते सुग्रीव विमुग्ध भेल ठाढ़े रहलाह। राम कें

बहुत काल धरि टकटकी नजरि सँ देखलाक पश्चात् ओ बजलाह—"देवाधिपति देव स्वयं मनुष्य रूप मे अवतरित भेल छथि और मानव शरीर धारण कय देव-योनि पर मानवयोनिक विजय स्थापित केलन्हि अछि।"

राम अपन मित्र आ सहायकक रूप मे सुग्रीवक स्वागत केलथिन्ह। जखन हुनका ई ज्ञात भेलैन्ह जे सुग्रीवक ज्येष्ठ भ्राता वालि सुग्रीवक पत्नी कें छीनि लेने छलैन्ह और सुग्रीव कें सता रहल छलैन्ह तऽ राम तुरत ई वचन देलथिन्ह जे हम वालिक विनाश कऽ देबैक।

द्वंद्व-युद्ध

एक टा द्वंद्व-युद्ध भेल और दूनू भ्राता लोमहर्षक रूपें युद्ध कैलन्हि। अन्त मे वालि सुग्रीव पर एक प्रबल प्रहार कैलथिन्ह जाहि सँ ओ श्रान्त भय गिर पड़लाह। ठीक ओहि क्षण मे झाँखुड़क ओट सँ एक तीर आयल और वालिक छाती कें वेधि देलकैन्ह। हुनक वक्षस्थल सँ शोणितक फव्वारा फूटि पड़ल जे निर्झरिणी जकाँ झर-झर करैत वहि चलल। ई दृश्य सुग्रीव कें मर्म्माहत कऽ देलकैन्ह और अजस्र प्रेमाश्रु बहबैत ओ खसि पड़लाह। यंत्रणापूर्ण पीड़ा वालिक क्रोध कें भड़का देलकैन्ह। ओ विशाल तीर कें अपना छाती सँ खीचलैन्ह और ई कहैत जे 'एकरा हम दू खण्ड कऽ देबैक' ओ ठाढ़ भऽ गेलाह। तखन ओहि तीर पर अंकित एक नाम कें देखि हुनक आँखि चकित भऽ गेलैन्ह। ओ रामक पवित्र नाम छल जे 'सृष्टिक आद्य मंत्र थीक, जे त्रिलोक केर उद्धार करैत अछि, जे परमानन्दक प्रदायक अद्भुत जप-मंत्र थिक, जे एहन रसायन थिक जे जन्म जन्मान्तरक कर्मफल कें तत्क्षण समाप्त कऽ दैत अछि।'

राम पर वालिक महाभियोग

राम झाड़क ओट सँ बाहर एलाह और घायल एवं खून बहैत वालि कें देखल-थिन्ह और संगहि एहि दृश्य कें देखवा सँ अक्षम भेल एवं अचेत खसल हुनक भ्राताक कारुणिक दृश्य कें सेहो देखलन्हि। वालि जे एक महान भक्त एवं वीर छलाह रामक सुन्दर रूप कें देखलन्हि। ओ अपन सांघातिक घाव सँ ओतेक चिन्तित नहि छलाह जतेक रामक धर्मच्युत होयबा सँ। राम कें संबोधित करैत ओ बजलाह—"अहाँ ओहि निर्मल पुरुषक पुत्र छी जे सत्यक हेतु अपन प्राण कें उत्सर्ग कऽ देलनि और अहाँ महान भरतक अग्रज छी। अहाँक जीवन वत्सलता एवं दयाक उदाहरण रहल अछि। जँ कोयो आन कें पाप सँ रक्षा करैत स्वयं पाप करय तऽ की ओ पाप नहि कहयतैक?" वालिक अभ्यारोपण मे और अधिक बल आबि गेलैक और ओ अपन एक स्वर मे सब प्रकारक दोषदर्शिता एवं कटूक्तिक समावेश कऽ लेलन्हि जे रामक अवीरोचित आचरण पर चरितार्थ होइत छल। ओ अपन स्पष्टता, तर्क

एवं बुद्धि सँ ओकरा और अधिक शक्तिशाली बनौलन्हि। ओ राम कें पुछलथिन्ह—"की मनुस्मृति यैह विधान केलक अछि जे यदि कोनो राक्षस अहाँक पत्नीक अपहरण केने हो तऽ ओकर प्रतिकार मे एहि सँ असम्बद्ध कोनो वानरक राजा केर हत्या कऽ देल जाय ? यदि अहीं अपना कें अपयश सँ आच्छन्न कऽ लैत छी तऽ के सुयश कें धारण करबाक पात्र हैत ?" और अधिक रक्तक हानि भेला सँ वालि समस्त संयम कें समाप्त करैत भीषण प्रतिरोधपूर्वक निन्दा करय लगलाह—"मधुर अमृत स्वरूपिणी सीना सँ विरहित भय भरिसक अहाँ विभ्रान्त भऽ गेलहुँ। अहाँ केहन अविवेकपूर्ण कार्य कैल अछि ?" रामक राजवंश जे सूर्य सँ उद्भूत छल तकरा निर्दिष्ट करैत वालि कहलैन्ह—"भरिसक जैं आकाश मे मन्द गतियें संचरण करऽवला चन्द्रमा एक कारी कलंकपूर्ण दाग धारण केने अछि तैं अहाँ अपन सूर्यकुल पर ओकरे समान एक एहन कलंक आरोपित कऽ लेलहुँ अछि जे शाश्वत रहत। हे वीर ! अहाँ वालि कें नहि अपितु ओहि मर्यादा कें जे राजोचित कर्त्तव्य कें आवृत्त करैत अछि और ओकर रक्षा करैत अछि तकरे विनष्ट कैलहुँ अछि !" वालिक रोष केर चरमोत्कर्ष कविक शब्द मे व्यक्त होइत अछि :

की आविष्कृत छल भेल धनुर्विद्या एहि लय
जे करी बाण-संधान अहाँ नहि सम्मुख भय ?
वेधी तकरे छाती जे हो निशस्त्र ?
आ घात लगा मारी तकरा धय स्वयं शस्त्र ?
धिक् अहँक भार्या जे अनका सँ छथि अधिकृत !
धिक् अहँक दीप्त धनु अहँक कुकर्मे जे कलुषित !!

ईश्वरत्वक साक्षात्कार

ई मानबाक पर्याप्त कारण अछि जे एहि गीतक पश्चात् रचित अनेको पद्य कम्ब रामायण मे एहन अछि जे राम पर वालिक लगाओल भयंकर आरोप सँ रामक रक्षा करबाक उद्देश्य सँ अंध-भक्त लोकनिक द्वारा प्रक्षिप्त अछि। मार्जन करऽवला ई पद्य सभ जे कम्बनक प्रामाणिक ध्वनि सँ रहित अछि राम कें अपन पक्ष-रक्षाक तर्क सँ युक्त करैत अछि और ओ नीरस एवं अविश्वसनीय अछि। स्व० रसिकमणि टी० के० चिदम्बरनाथ मुदालियर जनिका कविताक निर्भ्रान्त प्रतिभा छलैन्ह और जनिक कम्बनक प्रेरणापूर्ण विवेचन एहि प्रबन्धक लेखक कें गंभीर रूपें प्रभावित केने अछि, उचिते एहि पद्य सभ कें नकली मानि अस्वीकृत कैलन्हि अछि और ई सिद्धान्त प्रस्तुत कैलन्हि अछि जे झाड़क ओट सँ वालि कें सांघातिक रूपें आहत करबाक हेतु कम्बनक राम अवश्य अप्रतिबद्ध रूपें अपन अपराध कें स्वीकार केने हेताह और वालि सँ निर्भीक भय क्षमा माँगने हेताह। अपन गलती

कें स्वीकार करवाक रामक साहस वालि कें रामक ईश्वरत्त्वकेर विश्वास दियौल-कैन्ह और एहि कारणें वालिक दृष्टि मे राम अधिक उच्चतर भऽ जाइत छथि। वालि अनुभव कैलन्हि जे हमरा सुग्रीवक प्रति भ्रम अछि और हम ओकरा पीड़ित केने छियैक। ओ सुग्रीव कें रामक ब्रह्मत्त्व केर अनुभव करवा लय और हुनका अपन मार्गदर्शक मानवा लय आदेश देलथिन्ह। ओ रामो कें सुग्रीव कें शरण देबा लय विनती केलथिन्ह।

एही अवस्था मे वालिक पुत्र अंगद अश्रुपूर्ण नेत्र सँ पहाड़क नीचा दौड़ैत एलाह और शोक करैत अपन म्रियमाण पिता पर खसि पड़लाह। कवि कहैत छथि जे वालि पृथ्वी पर चन्द्रमा जकाँ पड़ल छलाह जकरा पर अंगद आकाश सँ गिरैत बिजली जकाँ खसि पड़लाह।

अपन पुत्रक मार्मिक व्यथा सँ द्रवित भय ओ अंगद कें अपन बालसुलभ विलाप कें त्यागि देबा लय कहलथिन्ह और ई ज्ञान प्राप्त करवा लय हुनका प्रेरित केल-थिन्ह जे अंतिम सत्यक विशुद्ध तत्त्व अपन चरण सँ एहि पृथ्वी पर विचरण करैत अपना हाथ मे धनुष धारण केने इन्द्रियगोचर रूप धारण केने छथि। ओ आगू कहलैन्ह—"हे पुत्र, राम ओ रसायन छथि जे हमरा सभ कें जन्म-मरणक रोग सँ मुक्त कऽ सकैत छथि आ आत्मा सभक साधना-सिद्धि पर विचार करैत छथि और प्रत्येक जीव कें अपन पात्रताक अनुरूप अनुग्रह सँ विभूषित करैत छथि। हुनक चरण कें अपना माथ पर धारण कय अहाँ अभ्युदय कें प्राप्त करब।" तखन राम दिस घूमि ओ बाजलाह—"अंगद से अग्नि थीक जे राक्षस कें तूर जकाँ जरा देत। हम एकरा अपनेक शरण मे अर्पित करैत छी।" तखने अंगद रामक चरण पर खसला और राम अपन स्वर्ण तरुआरि कें अंगद दिस बढ़ौलन्हि एवं कहलथिन्ह—"एकरा धारण करू!" जाही क्षण राम ई कहलथिन्ह वालि ऐहिक जीवन कें त्यागि देलक और परलोक मे प्रवेश केलक। विरहिता तारा कें प्रबोधब दुष्कर भऽ गेलैक। कम्बन हुनक प्रबल वेदना कें व्यक्त करवा मे प्रखर एवं तीव्र शब्द सबहक प्रयोग करैत छथि। तारा एहि भ्रम कें चूर्ण करवा लय जे ओ और वालि मे सँ प्रत्येक एक दोसराक हृदय मे रहैत छल अपना विलापक क्रम मे ध्वंसकारी तर्कक प्रयोग करैत छथि :

रण-रंग-पुष्ट स्कंधक धारी हे प्राणनाथ!
की साँचे दू तन छलहुँ एक प्राणें सनाथ?
जँ छलहुँ सत्य अपनेक हृदय मे हम बसैत।
तऽ तीर अहँक वेधक हमरो वेधित करैत॥
जँ अहीं हमर उरवासी तँ रहितहुँ जिबैत।
पर क्यो न छलहुँ ककरो उर मे सरिपहुँ बसैत॥

सुन्दर काण्ड

सौन्दर्यक सर्ग

कम्बन सुन्दरताक एहि सर्ग कें सीताक अन्वेषण सँ प्रारंभ करैत छथि। सन्देश-वाहक वानर सभ कें सब दिशा मे प्रेषित कैल जाइत अछि। हनुमान सागर पार कय संध्या मे लंका पहुँचलाह। लंका एक मनोहर दृश्य प्रस्तुत करैत अछि और हनुमान एहि नगरीक भवन केर सुन्दरता देखि विस्मित भऽ जाइत छथि :

सूर्य केर प्रकाश सँ विकास जेना भासित हो
भीतर सँ जड़ल दामिनी केर विभास अछि।
मोती ओ रत्न मढ़ल स्वर्ण केर वर्ण-वर्ण
भवन, सौध, मन्दिर केर चहुँ दिशि सुहास अछि॥
लाटक ललाट दीर्घ मेघो कें भेदि रहल
चुम्बित जनु चन्द्र ओकर मर्दित हुलास अछि।
बूझि ने पड़ैछ कोन लोक, कोन नगरी ई
बनल कोन रीति, कोन तत्त्वें ई खास अछि॥

सतीत्त्वक प्रकाश

सीता कें तकैत हनुमान उत्कीर्णित खिड़की आ द्वार सभक भीतर देखैत-देखैत भवने-भवन घुरलाह किन्तु सीता कें कतहु ने देखलैन्ह। निराश भय हनुमान नगरक बाहर अशोक-वाटिका पहुँचलाह, एकटा गाछ पर चढ़लाह और ओहि पर बैसि गेलाह। किछु दूर पर एक वृक्षहीन स्थान छल जतय सीता अपना मन मे कतेको प्रकारक व्यथापूर्ण विचार-चक्र मे डूबल बैसल छलीह। मेघ जकाँ कोनो तरहक श्याम वस्तु अथवा बालिका सबहक आँखि पर लगाओल कारी रंग सीताक मन कें व्याकुल कऽ दैत छल कारण ओ हुनका रामक स्मरण करा दैत छलैन्ह। रामक आशा मे ओ पृथ्वीक संपूर्ण दिशा मे अपन आँखि कें घुमाबय लगैत छलीह। किंतु हुनक आशा निराशा मे परिवर्त्तित भऽ जाइत छल जखन हुनका ई शंका होमऽ

लगैत छलैन्ह जे की वस्तुतः श्री राम कें ई बुझल छन्हि, जे रावण हमरा हरण कऽ लेने अछि ? ओ रामक दिव्य गुण और हुनका साहचर्यक विभिन्न अनुभूतिक मन मे स्मरण करैत छलीह। ओ अकिंचन जे गंगाक आर-पार नाह चलबैत छल ताहि केवट कें राम कहने रहथिन्ह—"हमर भ्राता अहाँक भ्राता थिका; हम अहाँक मित्र भेलहुँ आ हमर पत्नी अहाँक भ्रातृ-पत्नी भेलीह।" रामक ई मोक्षप्रद मित्रताक स्मरण कय सीता व्यथा मे औनाय-छटपटाय लगैत छलीह। जखन सीता एहने सुधिपूर्ण विरह-व्यथा मे छलीह ओही काल मे हनुमानक दृष्टि हुनका पर पड़लैन्ह।

जखन हनुमान सीता कें एहि गहन शोकक दशा मे देखैं छथि तऽ हुनक अविचल सतीत्त्व, शील और कुलीनता पर आश्चर्य चकित भऽ जाइत छथि। राम सीताक सौन्दर्य गुणक आस्वाद तखन केने छलाह जखन ओ आनन्दक स्थिति मे छलीह। मुदा एखन दुःख-कातर सीता जे अपन सतीत्त्व कें अभंग राखबाक कठोर तपस्या मे छथि सहस्रगुण अधिक रमणीयतर लगैं छथि। हनुमान सोचैत छथि, "ई कते दयनीय बात थीक जे राम कें ई महिमापूर्ण दृश्य देखबाक सौभाग्य प्राप्त नहि छन्हि !"

तत्क्षण रावण सीताक सम्मुख अबैत अछि और ई देखि हनुमानक मन मे व्यथाजन्य उत्तेजना होमय लगैत छन्हि। रावण बहुत अनुनय-विनय करैत ठाढ़ रहैत अछि, किन्तु से सीताक सम्मानक अनुरूपे दूर सँ। हनुमान अनुभव करैत छथि जे रावण आगिक निकट जैबा सँ डेराइत अछि।

रावण अटल इच्छा आ दृढ़ मनक स्वामी अछि किंतु सीताक सम्मुख ओकर कठोरतर गुणक पराभव भऽ जाइत छैक। ओ सीता कें निवेदन करैत छन्हि :

अर्पित करैछ हमरा
विलोक केर लोक-लोक निज प्रणति
किंतु हम अहँक दास
अर्पित अपना कें करी अहाँ कें
सदय होउ, एहि जन कें अंगीकार करू !

ई शब्द सुनिते सीताक आँखि मे रक्त उमड़ि पड़ैत छन्हि आ रावण दिस बिना तकनहि ओ रोषपूर्ण शब्द मे बजैत छथि :

जँ मेरु पर्वतक आर-पार भेदन
नभ केर खंडन कि ओकर पुनि परिसीमन
आ सप्त लोक केर द्विगुण भुवन
केर भंजन सम हो कार्यक्रम

तँ प्रभुक एक शर एहि सभ लय
क्षण मे सक्षम !
रे विज्ञ मूर्ख !
कय अपशब्दक कि प्रयोग एना
निज दश शिर सँ वंचित हेबाक छौ इष्ट ?
हमर चिर चतुर धनुर्धर स्वामि हेतु
शर केर वर्षण आ क्रीड़ा-रंजन करबा लय
दश माथ तोहर आ दीर्घ स्कन्ध
रुचिकर सुलक्ष्य !
जे वर अनन्त आ आयु अमित
साधन-तप सँ कयलै अर्जित
से मृत्युदेव यमराजे लग उपाय करतौ
देवाधिदेव जे हमर देव
तनिका लग किछु न सहाय हेतौ !

जखन रावण ई शब्द सुनलक तऽ 'ओकर रोषक उद्वेग कामक उद्वेग सँ बढ़ि गेलैक ।' ओ क्रोधोन्मत्त भय अशोक-वाटिका कें छोड़ि अपना महल दिस विदा भऽ गेल । हनुमान एहि रोमांचक दृश्य कें वृक्षक सब सँ ऊँच डारि पर सँ देखैत छलाह और ई देखि जे सतीत्वक प्रकाश अमन्द जरि रहल अछि, हर्षमग्न भेलाह ।

मध्य रात्रि भऽ गेल और हनुमान सोचलन्हि जे सीता सँ भेट करबाक ई उपयुक्त समय अछि । जखन ओ नीचा उतरलाह ओ सीताक चारू कात राक्षसी सब कें गोल बना कय बैसल देखलथिन्ह । ओ सब ततेक सावधान आ चौकस छलि जे सीता जँ कनेको नीन पड़ितथि तऽ ओ सब स्वयं जागृतिक देवी कें सतर्क कऽ दैत । हनुमान अपन जादू शक्तिक प्रयोग कैलन्हि और ओकरा सब कें माया सँ प्रभावित कय सुता देलन्हि । सतत जागरणशील ओहि राक्षसी सब कें सूतल देखि सीता अपना कें नितान्त असकर बुझलन्हि और हुनका एक भय व्याप्त भऽ गेलैन्ह । हुनका ई शंका भेलन्हि जे राम हुनक पता नहि लगा सकताह और हुनक उद्धार करबाक हेतु नहि आबि सकताह । की ओ हुनका त्यागि देबाक निश्चय कऽ चुकल छथि ? अन्त मे ओ संकल्प केलन्हि जे तखन मृत्युक आलिंगन केनाइये हमर कर्त्तव्य अछि । एहि मानसिक स्थिति मे ओ एक निकटवर्त्ती लतामंडप मे चल गेलीह जे माधवीलताक सघन पर्णसमूह सँ आच्छादित छल । एहि क्षण मे हनुमान जे कि अनुमान कऽ चुकल छलाह जे ओ की करय जा रहल छलीह, हुनका दिस दौड़लाह और हुनका सूचित केलथिन्ह जे हम श्रीरामक दूत छी । किछु एहन घटनाक वर्णन कय जे केवल सीता

आ राम कें ज्ञात छलैन्ह ओ शंकालु सीता कें अपना परिचयक संबंध मे विश्वास दियौलथिन्ह।

ओहि घटना समक वर्णनक पश्चात् जे कि सीता कें अपना प्रति रामक आन्तरिक प्रेमक आश्वासनपूर्ण प्रमाणो देलकन्हि, हनुमान सीता कें रामक चिह्न स्वरूप ओ मुद्रिका देलथिन्ह जाहि पर रामक नाम अंकित छल और कहलथिन्ह—"राम हमरा ई सुरक्षित रूपें लै जेबाक हेतु और अहाँ कें समर्पित करबाक हेतु आज्ञा देने छलाह।" मुद्रिका कें देखि सीता दिव्य आनंद मे विभोर भऽ जाइत छथि और ओकरा सूँघि छाती सँ लगबैत छथि। सीता हनुमान कें कहलथिन्ह—"उपकारी हनुमान, अहाँ हमरा जीवन देल अछि। यदि हमर मन पाप सँ निष्कलुष अछि तँ अहाँ आजुक संपूर्ण शक्ति नेने अनन्त काल धरि जीवित रहू। चौदहो लोकक लय भेलाक पश्चातो एक-एक युग एक दिन जकाँ गणना करैत अहाँ शाश्वत काल धरि जीवन धारण केने रही।" सीता कें कौतूहल भेलैन्ह जे ओ कोना अपन छोट शरीर सँ समुद्र कें पार कैलन्हि। हुनक प्रश्नक उत्तर मे हनुमान अपन भूधराकार रूप देखौलन्हि। क्षणक एक क्षुद्र अंश मे ओ नमहर सँ नमहर होइत गेलाह। हुनक कान्ह ऊपर सँ ऊपर पसरैत गेल, यावत् ओ आकाशक शीर्ष तल धरि पहुँचि गेलाह, तकरा बाद ओ एहि हेतुएँ झुकि गेलाह जे ओ आकाशक तल सँ टकरा नहि जाथि। ई विस्मयकारी प्रदर्शन सीताक शंका कें निर्मूल कऽ देलकैन्ह और हुनका सुरक्षाक भावना प्रदान केलकन्हि। सीताक आज्ञा सँ हनुमान अपना पूर्व रूप मे एलाह। तखन सीता ई कहि हुनक बखान केलथिन्ह—"की ई अहाँक प्रतापक हेतु कलंकक बात नहि जे लंका सुदूर सात समुद्रक पार नहि अछि जाहि सँ अहाँ अपन बाहुबल सिद्ध कऽ सकितहुँ?" एकरा पश्चात् एक मनोहर वार्त्तालाप होइत अछि जाहि मे कम्बन सीताक मन कें आक्रान्त करऽवला भाव केर परिवर्त्तनक चित्रण करैत छथि। अन्त मे ओ हनुमान सँ कहैत छथि—"आब अहाँ हमर स्वामी कें कहि देबैन्ह जे हम एक मास धरि प्रतीक्षा करबैन्ह और जँ एहि अवधि मे ओ हमर उद्धार नहि कय सकताह तऽ हुनका कहबैन्ह जे ओ गंगाक तट पर अपन पावन कर सँ हमर अन्त्येष्टि सम्पन्न कऽ देथि।" ओ आगू बजलीह—"और विवाह-कालक प्रतिज्ञाक सेहो हुनका स्मरण करा देबैन्ह जे विवाहक समय ओ प्रतिज्ञा केने छलाह जे एहि जीवन मे हम कोनो दोसर स्त्रीक मनो सँ भावना नहि करब।" एक एहन उत्तर दय जे सीता कें भावोद्वेलित करैत छन्हि और विश्वास दियाबैत छन्हि, हनुमान सीता सँ विदा लैत छथि। एही क्षण मे सीता अपन चूड़ामणि राम कें सुरक्षित पहुँचा देबाक हेतु हनुमानक हाथ मे दैत छथिन्ह। आशीर्वाद प्राप्त कय हनुमान अशोक-वाटिका सँ प्रस्थान करैत छथि, लंका मे आगि लगबैत छथि और समुद्र पार कय राम सँ भेट करैत छथि।

हनुमानक प्रत्यागमन

कवि हमरा सभक ध्यान रामक दिस लऽ जाइत छथि । वानरक एक सेना कें सीताक अन्वेषणक हेतु पठाय सुग्रीव राम कें आश्वासन देबा लय हुनके साहचर्य मे रहैत छथि । जखन ओ निराशापूर्ण शंका कें व्यक्त कऽ रहल छथि दक्षिण क्षितिज पर एक प्रकाश-रेखा दृष्टिगत होइत अछि । हनुमान एना प्रकट भेलाह जेना सूर्य दक्षिण मे उगैत होथि । ओतय आबि हनुमान रामक चरण मे प्रणिपात नहि कैलनि अपितु सीताक दिशा मे अपन मुँह कय भूमि पर दंडायमान भेलाह और हुनक स्तुति करब प्रारंभ कैलन्हि—"हम देखल अछि, एही नेत्र सँ देखल अछि, समुद्र सँ प्रक्षालित लंका मे ओहि सतीत्त्वक भूषण कें । हे ब्रह्माण्डनायक ! अहाँ अपन शंका आ शोक कें समाप्त करू ।" हनुमान द्वारा कैल गेल सीताक पवित्रताक एहन गरिमामय वर्णन सुनि राम उदात्त भावना सँ ओत-प्रोत भऽ जाइत छथि । आब हुनका आगू सीता कें मुक्त करबाक अतिरिक्त कोनो कार्य शेष नहि रहि जाइत छन्हि ।

युद्ध काण्ड

युद्ध-सर्ग

आब लंकाक एक दृश्य सँ युद्धकाण्ड प्रारंभ होइत अछि। हनुमान द्वारा लंका मे आगि लगा देलाक ओ जरा देलाक पश्चात् रावण एकर पुनर्निमाण करबाक आज्ञा देलक। विधाता, भगवान ब्रह्मा, निर्माणक योजना बनौलन्हि और तदनुसार स्वर्गक शिल्पी मय अत्यल्प समय मे नगरक पुनर्निर्माण कय देलक। रावण, जे एक वानर द्वारा नगरक विनाश भऽ गेला सँ अपन अवमानना बूझैत छल, नगरक चारू दिस घूमल और ई देखि आश्वस्त भेल जे पुनर्निर्मित नगर ओहि नगर सँ अधिक रमणीयतर छल जे जरि चुकल छल, आब ओकर क्रोध शान्त भेलैक और ओ आनन्द-उत्सव मे लागल। ओ नव निर्मित सभा-भवन मे अपन युद्ध-परिषदक बैसकी केलक।

युद्ध-परिषद्

जखन रावण अपन सिंहासन पर सँ एक वानरक विद्रूप लीला सँ अपन साम्राज्यक प्रतिष्ठा केर जे क्षति भेल छल ताहि पर भाषण देलक तऽ सम्पूर्ण सभा मे निस्तब्धता व्याप्त भऽ गेल। एक सेनापतिक बाद दोसर सेनापति उठि ठाढ़ होइत गेल और रावण कें विचार दैत गेल जे ओ शत्रुक विरुद्ध युद्ध प्रारंभ करबाक एवं शत्रु कें समूल विनष्ट करबाक आदेश ओकरा प्रदान करय। सभाक एहि चरण मे रावणक अनुज कुंभकर्ण ठाढ़ भेल और ओ कहलकैक जे सीताक अपहरण कय रावण अनुचित पथ पकड़लक अछि। वाल्मीकिक कुंभकर्णक विपरीत जे कि कहैत अछि जे ओ सीता कें विधवा बना देत और रावण कें हुनका सँ विवाह करब सुगम कय देत, कम्बनक कुंभकर्ण कें उचित एवं अनुचितक प्रखर ज्ञान दृष्टि छैक, यद्यपि भ्रातृप्रेमक कारणें गलती केनिहार रावणक हेतु अपन प्राण बलिदान करबा लय सेहो प्रस्तुत अछि।

रावणक कनिष्ठ भ्राता विभीषण एहि मंडल मे सर्वथा विरुद्ध विदु पर छलाह।

ओ तीनू भ्रता मे न केवल सर्वाधिक ज्ञानसम्पन्न छलाह अपितु धर्मक अटल पक्ष-धर सेहो छलाह। हुनक ई स्वभाव छलैन्ह जे धर्मक पक्ष कें राखबाक हेतु ओ जाति, परिवार और अपन 'स्व' पर्यन्तक समस्त बन्धन कें तोडि सकै छलाह। ओ ठाढ़ भेलाह आ रावण कें किछु कटु सत्यक कथा कहि सुनौलथिन्ह—"अहाँक नगर और अहाँक गौरव जगज्जननी सीताक सतीत्व द्वारा भस्म भेल। अहाँ एहि कल्पना मे नहि रहू जे कोनो वानर ई आगि लगौलक।" ओ रावण कें परामर्श देलथिन्ह जे ओ सीता कें प्रभु राम कें घुरा देथि। हुनक भाषण रावण कें क्रोधोन्मत्त कऽ देलक और ओ अट्टहास कऽ उठल। अत्यन्त प्रभावोत्पादक वाक्य-रचना सँ परिपूर्ण भाषण द्वारा ओ विभीषण पर उपहासक वर्षा केलक। किंतु विभीषण, जे कि दृढ़ सत्यनिष्ठ छलाह, पराक्रमी हिरण्यक उदाहरण प्रस्तुत केलन्हि जकरा राम अपन पूर्व नृसिंहावतार मे वध केने छलथिन्ह। विभीषणक आवेगपूर्ण भाषण सुनि रावण कें ई धारणा भेलैक जे ओ राम सँ मिलल छलाह और तैं ओ विभीषण कें ई प्रताड़ना दैत लंका सँ निष्कासित कऽ देलकैन्ह जे जँ ओ आव एको क्षण ओतय रहता तऽ हुनका मृत्युदंड दऽ देल जेतैन्ह। दुखी विभीषण रावण कें ई कहि लंका सँ विदा भऽ गेलाह—"भैया, हम अहाँकें आत्मकल्याणकारी परामर्श देल। मुदा अहाँ हमर सत्परामर्शक उपेक्षा कैल। हमर अपराध क्षमा हो।"

विभीषणक शरणागति

चारि शुद्ध हृदय असुरक संग विभीषण समुद्र पार कैलन्हि और जतय रामक वानर-सेनाक शिविर स्थापित छल ततय अयलाह। किछु वानर सब कें भेलैक जे कोनो भेदिया असुर ओकरा सभक बीच आबि गेल छैक। राम अपन मित्र लोकनि सँ विचार-विमर्श केलनि। हनुमान छोड़ि प्रत्येक स्वजातित्यागी विभीषण कें स्वीकार करबाक प्रस्ताव केर विरोध कैलन्हि। हनुमान विभीषणक न्याय-बुद्धि, असीम करुणा और आध्यात्मिक गुणक प्रशंसा कैलन्हि। सुग्रीव एवं अन्य शंकालु योद्धा दिस घूमि राम कहलन्हि—"हनुमानक कथन, स्पष्टोक्ति एवं शब्द-चयन अद्‌भुत अछि! शरणागत कें शरण देब परम कर्त्तव्य चाहे हम विजयी होइ अथवा पराजित, जीवित रही अथवा मृत्यु कें प्राप्त करी। जाहि क्षण विपत्तिक कारण शरण मे आयल व्यक्ति कें शरण देव हमरा अस्वीकार हैत ताहि क्षण हमर मृत्यु बूझू और जाहि क्षण शरणागतक कपट द्वारा हम मृत्यु कें प्राप्त होइत छी वैह क्षण हमरा लय अमरताक क्षण बूझू।" एहि अवसरक उपयोग करैत कंवन रामक द्वारा शरणागतिक महत्ता पर प्रकाश दैत छथि जाहि मे ईश्वर अपन असीम करुणाक द्वारा शरणागतक सर्वतोभावेन समस्त पापक विमोचन करैत अन्ततोगत्त्वा ओकरा अपन चिदानन्द-सागर मे समाहित कऽ लैत छथि।

रामक आदेशें सुग्रीव विभीषणक स्वागतार्थ बाहर जाइत छथि। दुहूक शुद्ध

हृदय प्रथमे दर्शन मे एक दोसरा सँ एवं प्रकारें आवद्ध भऽ जाइत अछि जे कवि बड़े साहस एवं काल्पनिकता सँ कहैत छथि जे गौरवर्ण सुग्रीव ओ कारी विभीषणक आलिंगन मानू एके समय मे दिवा-रात्रिक आलिंगन समान प्रतीत भऽ रहल अछि।

अनन्य भक्ति भावें विभीषण रामक समीप आबि हुनका पर दृष्टिपात करैत छथि ओ हुनक लावण्य सँ आत्मविभोर भऽ जाइत छथि। अद्यावधि विभीषणक धर्मक ध्यान सैद्धान्तिक मात्र छलैन्ह जे आइ राम-दर्शनक पश्चात् एक मूर्त्त रूप धारण केलकैन्ह। ओ विस्मय सँ पूछि बैसलाह—"की धर्म श्याम वर्णक होइत अछि?" राम विभीषणक असीम भक्ति सँ उन्मुक्त भय हुनका अपन भ्राताक रूप मे अंगीकार करैत छथि। ओ कहैत छथि—"गुहक मिलन सँ हम पाँच भाइ भेल छलहुँ, सुग्रीवक आगमनक पश्चात् हम छौ भेलहुँ, हे तात! आब अहाँक एला सँ हम सात भऽ गेलहुँ। हमर महान पिता दशरथ हमरा वनवास दय पुत्र सँ भरि गेलाह।" विभीषण कें एहि प्रकार अंगीकार कैला सँ संपूर्ण वानर-सेना मे आनन्दक लहरि दौड़ि गेल।

शिल्पी नल कें समुद्र पार लंका धरि सेतु-निर्माण-कार्यक हेतु नियुक्त कैल गेल। सुग्रीवक आज्ञा सँ वानर योद्धा सभ संपूर्ण दिशा मे जाइत अछि और दस-दस मील दूर सँ पर्वतखण्ड, शिलाखण्ड एवं प्रस्तरक टुकड़ी अनैत अछि।

भारत कें लंका सँ जोड़ब्वला सेतु आब पूर्ण भऽ गेल और राम अपन सेनाक संग सेतु पार कय लंका पहुँचैत छथि। राम अंगद कें रावण कें अन्तिम चेतावनी (अंतिमेत्थम) देबाक हेतु पठबैत छथि, मुदा ओ घुरि आबि कय समाचार दैत छथि—यावत् राजमुकुट सहित ओकर शिरोच्छेद नहि कैल जाइत अछि तावत् धरि रावणक हृदय सँ सीताक लिप्सा दूर नहि भऽ सकैत अछि।

युद्धारंभ

अवश्यंभावी युद्ध प्रारंभ होइत अछि। युद्धस्थल मे राक्षस एवं वानर योद्धागण आबि जुटैत छथि। दूनू दलक एक दोसरा सँ भिड़न्त हेबाक पूर्वहिं रावण अकस्मात् अपना सेनाक आगू उपस्थित होइत अछि। चमकैत शस्त्र सँ सुज्जित दीर्घकाय राक्षस सभ रावणक रथक चारूकात घेरने अछि और पूर्ण कण्ठ-स्वर सँ युद्दोघोष कऽ रहल अछि।

राम कें हर्ष होइत छन्हि जे रावण स्वयं युद्ध-भूमिक अग्र भाग मे आइ उपस्थित भय हुनका भिड़न्त करबाक अवसर देलकन्हि। सीताक वियोग मे कृशकाय रामक स्कंध आइ हर्षोत्फुल्ल भऽ गेलन्हि

युद्ध प्रारम्भ होइत अछि। रावण रथी छल और राम विरथी, मुदा ओ हनुमानक कान्ह पर ठाढ़ भय लड़य लगलाह। रामक बाण रावणक बाण कें चूर्ण-

विचूर्ण कऽ दैत अछि। रामक दारुण बाण केर सामना करबा सँ अक्षम भय राक्षस-सेना रावण कें रथ पर छोड़ि अस्त-व्यस्त भय सब दिशा मे पड़ा जाइत अछि। राम अपन असितुल्य बाण द्वारा रावणक रथ केर संधि सभक भेदन करैत ओहि रथ कें खण्ड-पखण्ड कऽ दैत छथि और तखन रावण भूमि पर ठाढ़ भय वीरतापूर्वक युद्ध करय लगैत अछि। मुदा रामक एक बाण आबि कय ओकर धनुष कें तोड़ि दैत अछि, दोसर ओकर तरुआरि कें ध्वस्त कऽ दैत अछि। रामक तेसर बाण रावणक माथ पर सँ मुकुट कें उड़ा कय तिरस्कारपूर्वक दूर फेकि दैत अछि। ई रावणक जीवन मे सर्वाधिक मानमर्दनक क्षण छल। ओ नमित नेत्रें पद-अंगुष्ठ सँ भूमि कें खुरचैत नतमस्तक ठाढ़ अछि और ओकर अधोमुखी दूनू हाथ एहन बुझना जाइछ जेना कोनो वट-वृक्षक जटा सभ निरालंब रूपें भूमिक स्पर्श कऽ रहल हो।

मुदा राम रावणक एहि विपन्नावस्था सँ अनुचित लाभ उठयबाक आकांक्षी नहि छलाह। करुणाद्रवित राम रावण कें जीवनदान दैत प्रातःकाल युद्धक हेतु एबा लय कहै छथि। रावण लंका घुरि शय्यासीन भय अपन एहि दशा पर विचार करैत अछि। अपन शत्रु पक्षक तिरस्कारपूर्ण हँसीक उपेक्षा करैत ओ ई सोचि ग्लानि सँ गलल जाइत अछि जे विम्बोष्ठी सीता ओकर एहि पराभव पर ओकर उपहास करतीह।

तखन रावण कुंभकर्ण कें बजा पठबैत अछि और ओकरा अपन पराजयक कथा कहि ई इच्छा व्यक्त करैत अछि जे ओ युद्ध-भूमि मे जाय शत्रु कें समाप्त कऽ दियै। कुंभकर्ण आगू बढ़ि ई विचार दैत अछि जे रावण सीता कें छोड़ि दियै और रामक लग आत्म-समर्पण कऽ दियै। ई बात रावण मे महाक्रोध उत्पन्न करैत अछि। ओ क्रोधक उन्माद मे उठैत अछि और अपन रथ-सेना कें उपस्थित हैबाक आज्ञा दैत अछि जाहि सँ ओ स्वयं युद्धभूमि मे जाय शत्रु सँ अन्त-अन्त धरि युद्ध करय। ई देखि कुंभकर्ण अपना दहिना हाथ मे अपन विशाल त्रिशूल उठाय कहैत अछि—"अहाँक एको शब्द बाजब हमर प्राणान्तक कारण हैत। पाछू सँ ग्रीवा पकड़ने नियति हमरा आगू धकेलि रहल अछि। हम मृत्युक वरण करब और जँ हमर मृत्यु भऽ जाय तँ, हे स्वामी, अहाँ राम कें सीता अवश्य घुरा देबैन्ह। ई विजयक तुल्ये हैत।" ओकर विदा हैबाक दृश्य कारुणिक अछि। ओ कहैत अछि—"हे राजन्! हमर सब पाप कें क्षमा कैल जाय। आब पुनः अहाँक मुह देखब हमरा भाग्य मे नहि अछि। विदा!"

निष्ठाजन्य अन्तर्द्वंद्व

कम्बन, जनिका कथा कहबाक अनुपम कौशल छन्हि, हमरा सब कें रामक शिविर मे आनि रामक दृष्टियें विभीषणक प्रथम युद्ध-कार्य कें देखबाक अवसर

प्रदान करैत छथि। जखन कुंभकर्णक रथ युद्ध-भूमि मे प्रवेश करैत अछि राम विभीषण कें कहै छथिन्ह—"हिनक रूप अहाँक ज्येष्ठ भ्राता सँ अधिक मनोहर अछि। ई के छथि ?" राम मुक्त-हृदय सँ अपन विरोधीक व्यक्तित्वक बखान करैत छथि। ओ आगू कहैत छथि—"कतेको दिन बीति जायत तखन जा कय आँखि लगातार तकैत-तकैत एकर एक कान्ह सँ दोसर कान्ह आ बीचक शरीरक सर्वेक्षण कऽ सकत। की ई चरणयुक्त कोनो शैल थिक ? ई कोनो युद्ध पिपासु व्यक्ति सन नहि बुझना जाइत अछि। ई के थिक ?" विभीषण राम कें कुंभकर्णक महान गुणक विषय मे बतौलथिन्ह जे ई कोना सीताक अपहरण करबाक हेतु रावणक भर्त्सना कैने छलाह। ओ राम कें इहो कहै छथिन्ह जे कुंभकर्ण कें रावण आ विभीषण दूनू सँ प्रगाढ़ प्रेम छैन्ह। एहि वर्णन कें सुनि राम प्रसन्न होइत छथि और विभीषण कें कहैत छथिन्ह जे अहाँ कुंभकर्ण लग जाय हुनका अपना पक्ष मे फोड़ि आनू। तदनुसार विभीषण कुंभकर्ण लग जाइत छथि और हुनका प्रणाम करैत छथि। कुंभकर्ण विभीषण कें हृदय सँ लगबैत हुनका कहैत छथिन्ह—"हमरा बहुत आनन्द होइत अछि जे अहाँ रामक पक्ष मे सम्मिलित भय हमरा सभ मे एक एहन भाइ भेलहुँ जे एहि विनाश-लीला सँ बचि जीवि सकब। हमरा ई बताउ जे अहाँ मूढ़मति जकाँ पुनः हमरा शिविर मे आबि हमर आशा कें कियैं भग्न कैल अछि ? कठिन तपस्या सँ विवेक-बुद्धि, धर्मक रूप एवं अमर जीवन केर अहाँ उपलब्धि कैल। हे तात ! तत्रापि की अहाँ अपना कें अधम दानव-संस्कार सँ मुक्त करबा मे अक्षम छी ?" कुंभकर्ण ई शब्द एहि भ्रम मे कहै छथि जे विभीषण रामक दल कें छोड़ि कय रावणक शिविर मे चल आयल छथि। ओ आगू कहैत छथि—"सर्वेश्वर प्रभु धनुषक संग युद्धक हेतु सन्नद्ध ओतय ठाढ़ छथि; मृत्यु एवं नियति एतय हमरा सभक संहार करबा लय ठाढ़ अछि; आब अहाँ राम कें त्यागि एहि पूर्वनिर्धारित विजित दल मे कियैं घुरि एलहुँ ?" विभीषण उत्तर दैत छथि—"संपूर्ण वेदक अधिष्ठाता स्वयं प्रेम भाव सँ हमरा अहाँ लग एक टा आग्रह करबा लय पठौलन्हि अछि। हे तात ! अहाँ धर्मक विषय मे कहियो समझौता नहि कैल, अहाँ कें हमरा संग चलि राम सँ मिलि जेबाक चाही।" ई शब्द बजैत विभीषण कुंभकर्णक चरण मे प्रणिपात करैत छथि एवं अनुनय करैत छथि जे हुनका संगे ओ चलथि। विभीषणक विपरीत, कुंभकर्ण जनैत छलाह जे ओ एखन धरि निम्न कोटिक मूल्यक स्तर पर जीवन व्यतीत करैत आयल छथि तैं हेतु रावण कें छोड़ब और हठात् उच्चतर आदर्शक हेतु संग्राम करब कायरता हैत और अपन स्वभावक प्रतिकूल हैत। संगहि कुंभकर्ण विभीषणक उच्च आदर्शवाद एवं हुनक उद्देश्यक सत्यता कें बूझबाक शक्ति रखैत छथि। तैं ओ सोचैत छथि जे धर्म-रक्षणक हेतु रावणक विरुद्ध लड़ब हुनक वास्तविक आन्तरिक प्रवृत्तिक अनुरूप हैत।

जखन कुंभकर्ण रावणक उच्च गुणक चिंतन करैत छथि तऽ ओ ओकर स्तुति

मे मग्न भऽ जाइत छथि। एहि गुण सबहक स्मरण करैत ओ मर्मस्पर्शी शैली मे कहैत छथि :

ओ अद्वितीय
ओ शत्रुरहित अछि वीर पुरुष
जकरा सुदीर्घ स्कंध विराजित
महाशैल भगवान शिवक
की भऽ सकैछ ई उचित
विजित यमराजक फाँसा सँ
बन्हाय पुनि वैह स्कंध ?
आ मृत्यु-लोक ओ गमन करय
नितान्त असकर, रक्षकविहीन ?

कुंभकर्णक मन निष्ठाजन्य अन्तर्द्वंद्व सँ प्रताड़ित होइत छन्हि। अपन ध्यान आब ओ विभीषणक रक्षाक दिस लऽ जाइत छथि जनिका सँ हुनका ओतबे प्रगाढ़ प्रेम छैन्ह जतबा रावण सँ। ओ विभीषण कें कहैत छथि—"एतय एको क्षण नहि विलमू। घुरि जाउ आ रामक मित्रता प्राप्त करू। जे भवितव्य अछि ओकर निर्धारित समय पर घटित हैब अवश्यंभावी अछि। जे विनाशक हेतु अभिशप्त अछि तकर कतबो सावधानी आ गहन सुव्यवस्था कैल जाय ओ विनष्ट हेबे करत। अहाँ सँ बढ़ि कय ज्ञानी आ सुलझल मस्तिष्कवला के हैत ? अहाँ बिना कोनो खेद केने घुरि जाउ। हे तात ! हमरा सभक संबंध मे करुणाजन्य खेद जुनि करू।" ई कहि ओ हुनका आलिंगनबद्ध कऽ लैत छथि। ओ ठाढ़ भेल उसास भरिते रहैत छथि आ एकटक विभीषण कें देखैत रहैत छथि। ओ पुनः कहैत छथि—"आइ सँ भ्रातृत्त्वक ई संबंध टूटैत अछि।" ई शब्द सुनि विभीषणक आत्मा हुनका शरीरक संग-संग संकुचित भऽ जाइत छन्हि और ओ कुंभकर्णक चरण पर खसि पड़ैत छथि। ई बूझि जे आब आगू कोनो वार्त्तालाप करब निष्फल अछि, विभीषण उठि विदा होइत छथि कि तखने हुनका चारू दिसक राक्षसगण केर हाथ अनायास हुनका अभिवादनक हेतु उठि जाइत अछि। प्रसंगतः ई ध्यातव्य जे वाल्मीकि रामायण मे एहि दुहू भ्राताक बीच कोनो मिलन नहि भेल अछि। ई प्रसंग कम्बनक प्रज्ञा आ नाटकीय कल्पनाशक्तिक संयोग सँ उद्भूत अछि।

विभीषण रामक शिविर मे पहुँचलाह आ अपना और कुंभकर्णक बीच जे किछु घटित भेल छलैन्ह तकरा राम कें कहि सुनौलथिन्ह। राम अवश्यंभावी स्थिति कें स्वीकार कय लक्ष्मण कें कुंभकर्ण सँ युद्ध करबाक अनुमति प्रदान केलथिन्ह।

कुंभकर्णक मरणोपरान्तक इच्छा

दुहू यशस्वी योद्धाक बीचक द्वंद्व-युद्ध देखबा लय हजारो एकत्रित भऽ गेल। कुंभकर्णक समक्ष युद्ध करबाक कोनो आदर्श नहि छलैन्ह, प्रत्युत हुनक कर्त्तव्य 'करब वा मरब' मात्र छलैन्ह। मुदा लक्ष्मण उच्च उद्देश्य सँ प्रेरित छलाह और तैं ओ युद्धक उच्च आवेश सँ संवलित छलाह। वाक्चातुर्य, कटाक्ष एवं प्रतिवादपूर्ण आरंभिक कटु विवादक उपरान्त एक भयंकर एवं दीर्घकालीन युद्धारंभ भेल जाहि मे दूनू एक दोसरा कें परास्त करबाक पराक्रम देखाओल और एहि क्रम मे दूनू क्लांत भऽ गेलाह। अन्ततः राम हस्तक्षेप करैत कुंभकर्णक सेना कें तितिर-बितिर कऽ देलैन्ह आ कुंभकर्ण कें बाण सँ आच्छादित कऽ देलैन्ह। सिंदूरी रक्तधारा युद्ध भूमिक आर-पार धरि फूटि पड़ल जे कुंभकर्णक रथ-सेना, गज-सेना, अश्वदल आ पदाति कें शोणित मे नहा देलक। तखन शोभासागर राम अपन सुन्दर स्कंध एवं धनुष नेने कुंभकर्णक सम्मुख अबैत छथि जे क्षत-विक्षत आ अंग-भंग भेल पड़ल छथि। राम कें सम्बोधित करैत विभीषणक कल्याणक हेतु कुंभकर्ण मार्मिक प्रार्थना करैत छथि—"हमर अनुज ओहि विवेकक चिर व्याप्त तत्त्व मे स्थित अछि जे शाश्वत नियम सँ उद्भूत होइत अछि; ओ जाति आ वर्णक क्षुद्र रीति कें नहि जनैत अछि। हे राजन्य रूप परमात्मन्! ओ अपनेक शरणागत अछि। हम अपने सँ अनुनय करैत छी जे अपने ओकरा चिर शरण प्रदान करियैक। निष्ठुर रावण, भ्राता होइतहुँ, ओकरा शरण नहि देतैक, प्रत्युत ओकरा देखिते ओकर प्राण लऽ लेतैक। तैं, हे स्वामी, विनती करैत छी, हमरा वरदान दियऽ जे युद्धकाल धरि ओकरा अपन वा लक्ष्मण वा हनुमानक आश्रय-छाया मे राखबैक।" रामक द्वारा प्रार्थना स्वीकृत भेलाक पश्चात् कुंभकर्ण प्राण-विसर्जन करैत छथि। वाल्मीकिक अभद्र कुंभकर्णक विपरीत कंबनक कुंभकर्ण अपन उदात्त शौर्य, उत्कृष्ट न्यायबुद्धि एवं हृदयक कोमलताक गुण सँ विभूषित छथि। विभीषणक प्रति हम अपन श्लाघा व्यक्त करैत छी और कुभकर्णक प्रतियें अपन करुणा।

रावणक शोक

कुंभकर्णक मृत्युक समाचार रावण कें शोकमग्न कऽ दैत अछि। दन्यमलै सँ उत्पन्न रावणक पुत्र आदिकाय कुपित भय कुंभकर्णक मृत्युक बदला लेबाक हेतु युद्धक मोर्चा पर जाइत अछि। एक विशाल सेना ओकर अनुसरणकरैत अछि। लक्ष्मणक संग संग्राम करबा मे आदिकायक मस्तक छिन्न भऽ जाइत अछि और ओ मृत्यु कें प्राप्त करैत अछि। एहि कलंकपूर्ण मृत्युक खबरि दूतक द्वारा रावण कें भेटैत छैक। आदिकायक मृत्यु रावणक मन मे भावनाक तीव्र अन्तर्द्वंद्व उत्पन्न करैत अछि :

उच्छ्वासें ओ उठबैछ माथ।
पुनि लज्जित भय गिरबैछ माथ॥
भ्राता ओ सुतक मृत्यु दारुण।
जगबैछ शौर्य, बनबैत करुण॥
खन रोषें, खन शोकें रावण।
भीषण सँ पुनि होइछ उन्मन॥
ओ ठाढ़, धार दृग सँ फुटैत।
सागर-तरंग सन जे उठैत॥
बल दैत परस्पर लहरि-लहरि।
बढ़िते जाइछ सुदूर तट धरि॥
पुनि जे अन्तः प्रत्यावर्तित।
से अश्रु-ज्वार दृग मे लंबित॥
कखनो पृथ्वी कें उठा लेत।
कखनो जनु नभ कें खसा देत॥
वा एके बेर कय पदाघात।
कर प्राणिमात्र कें धूलिसात्॥
जे किछु नारीक नाम धारी।
दू फाँक बना सभ कें फारी॥
रावण सोचय की की न करी।
बनि महाकाल मारी कि मरी॥

श्रेष्ठतर शोक

रावणक चारू दिस उपस्थित लोक सभ ओकर क्रोधोन्माद कें देखि कय भय ओ विस्मय सँ भरि जाइत अछि। कम्बन नाट्य शिल्पक अपन अचूक बोध और मनोविज्ञानक अप्रतिम ज्ञान सँ ठीक एही क्षण मे एहि दृश्यक बीच पुत्र-शोकाकुल दन्यमलै कें उपस्थित करैत छथि। ओ रावणक एक रानी थिक और आदिकायक माता अछि जे युद्ध मे मारल गेल अछि। पुत्रक मृत्यु पर ओकरा जे दारुण शोक होइत छैक से अमर्षरहित किंतु अपराधी रावण कें अपन बचाव करबाक हेतु प्रवृत्त करैत अछि। रानी दन्यमलै उच्च कुलोत्पन्न नारी थिक जे राजकीय परम्परा मे पालित-पोषित भेल छलि। रावण पर्यन्त ओकरा अपना सँ श्रेष्ठतर बूझि आदर दृष्टि सँ देखैत छल। ओ जोर-जोर सँ छाती पीटैत अबैत अछि। ओ रावणक पैर पर खसि क्रन्दन करैत अछि:

की हमर क्रन्दनक स्वर, हे पति!
सुनि सकइत छी?

की हमर कथा पर कान अहाँ
दय सकइत छी ?
अछि कतय हमर प्राणक टुकड़ी
से देखा दियऽ।
छल हमर पूत आँखिक पुतरी
से अना दियऽ ॥

दन्यमलै केर श्रेष्ठतर शोक रावणक सकल कोलाहलपूर्ण क्रोधोन्माद कें शान्त और निस्तब्ध कऽ दैत अछि। सीताक प्रति कामलिप्साक कारणें दन्यमलै रावणक भर्त्सना करैत चेतवैत अछि—"सीताक कारणें अहाँ पर एक नहि अनेक-अनेक विपत्ति आयत !" एहि तरहें जखन ओ विलाप कऽ रहल अछि तऽ रावणक परिचरी स्वर्गक अप्सरा उर्वशी और मेनका दन्यमलै कें भरि पाँज पकड़ि महलक भीतर लऽ जाइत अछि।

रावण अपन सर्वश्रेष्ठ वीर पुत्र इन्द्रजित कें युद्ध मे पठवैत अछि। ओ ब्रह्मास्त्र सन अद्भुत अस्त्रक प्रयोग करैत अछि जे शत्रु-पक्ष पर विषाक्त गैस छोड़ि पुनः घुरिअबैत अछि। ओ एहि प्रक्षेपास्त्रक प्रयोग मध्य रात्रि मे प्रगाढ़ निद्राभिभूत राम, लक्ष्मण और हुनक सैन्यदल पर कैलक। ओ विषाक्त गैस सभ कें अचेत करैत सभ कें मृतवत् कऽ देलक। अपन एहि सफलता सँ आह्लादित भय इन्द्रजित महल आबि कय सूति रहल।

जाम्बवानक परामर्श पर हनुमान बड़े वेग सँ संजीवि पर्वत पर गेलाह और ओकरा सम्पूर्ण उखाड़ि कै लय एलाह। ओहि पर्वतीय बूटीक गन्ध लैते राम, लक्ष्मण ओ सैन्यदल पुनः चेतना प्राप्त कैलक। मूर्च्छा हटला पर राम चिंतित विभीषण कें चिन्ताक कारण पुछलथिन्ह। विभीषण हुनका सविस्तार बतौलथिन्ह जे कोना हनुमानक प्रयत्न सँ राम, लक्ष्मण और सेना मे पुनः चेतनाक संचार करा-ओल गेल छल। तखने राम कृतज्ञतापूर्वक हनुमानक आलिंगन कैलन्हि।

धर्मक विजय

दोसर दिन इन्द्रजित कें ज्ञात भेलैक जे ओकर धूर्तता काज नहि केलकैक। रावणक द्वारा उकसौल गेला पर ओ एक लोमहर्षक युद्ध कैलक जाहि मे एक वक्र चन्द्राकार तीर सँ लक्ष्मण ओकर मस्तक कें काटि देलथिन्ह। ओकर मृत्युक समाचार रावण कें गंभीर रूपें अशान्त कऽ देलकैक।

रावण अनुभव करैत अछि जे ओकर समस्त अनर्थक कारण सीता छथि और ओ अपन क्रोधावेश मे सीताक प्राण लऽ लेबाक निश्चय करैत अशोक-वाटिका दिस दौड़ैत अछि। ओकरा रोकैत महोदर कहैत अछि जे जँ अहाँ सीताक वध करबैन्ह तऽ

शाश्वत अयशक भागी हैब। ओ रावणक आन्तरिक शौर्य-प्रेम एवं कीर्त्ति-लिप्सा कें जगबैत ओकरा एहि प्रमत्त दुष्कर्म सँ विरत करैत अछि। रावणक शोकोन्माद युद्धोन्माद मे परिवर्त्तित होइत अछि। रामक संग संग्राम करैत ओ असाधारण वीरता सँ लड़ैत अछि, किन्तु रामक तीर ओकर शिरोच्छेद कय ओकरा भू-लुण्ठित कऽ दैत अछि। रामक शौर्य एवं धर्मकेर विजय होइत अछि और वन्दिनी सीता मुक्त होइत छथि। विभीषण मृत राक्षसगणक अंतिम संस्कार सम्पन्न करैत छथि।

विजयी योद्धागण विभीषण, सुग्रीव एवं हनुमानक संग अयोध्या प्रस्थान करैत छथि।

एक बेर बजनिहार शत्रुघ्न

एहि बीच भरत, जे चौदह वर्षक चिन्तापूर्ण अवधि पर्यन्त प्रतिनिधिक रूप मे राज्यक शासन करैत आयल छलाह, उद्ग्रीव भऽ दक्षिणाभिमुख रामक आगमन केर प्रतीक्षा करैत रहल छथि। आइ चौदह वर्ष पूर्ण होमऽ जा रहल अछि। भरत एक स्तंभ पर चढ़ि दक्षिण दिशा मे देखैत छथि, मुदा रामक आगमनक कोनो संकेत नहि पबैत छथि। निराश भय ओ ज्वाला मे कूदि अपन प्राणान्त करबाक प्रतिज्ञा केर पालन करबाक निश्चय करैत छथि। हुनक आदेश सँ हुनक लोक सभ एक बड़का चिता तैयार करैत अछि। ओ नागरिक आ ऋषि लोकनि कें बजबा पठबैत छथि और दृढ़ निश्चयपूर्वक हुनका सभ कें कहैत जथि जे हम निर्धारित अवधिक उपरान्त एक क्षणो जीवित नहि रहब। लोक सभक हुनका एहि कार्य सँ रोकबाक प्रयास निष्फल सिद्ध होइत अछि। ठीक एही क्षण भरतक छोट भ्राता शत्रुघ्न ओहि स्थल पर अबैत छथि। भरत हुनका कहैत छथिन्ह—"आइये अवधि पूर्ण हेबाक निश्चित तिथि अछि, मुदा राम नहि घुरलाह अछि। आत्म-दाह करबा सँ पूर्व हम अहाँ सँ एक प्रार्थना करैत छी। यावत् धरि राम आबथि अहाँ एहि राज्य पर शासन करब और हुनका एला पर राज्य हुनका समर्पित कऽ देबैन्ह।"

एहि मार्मिक शब्द कें सुनि शत्रुघ्न आत्मग्लानि सँ भरि जाइत छथि। ओ एक मूक नायक छथि जे सम्पूर्ण कम्ब रामायण मे एक बेर छोड़ि कखनो नै बजै छथि और जखन ओ बजैत छथि, जेना कि एखन, तऽ कम्बन हुनक कथन कें अपन संपूर्ण लयगत माधुर्य सँ भरि दैत छथि। ओहि कथन केर लयक तऽ नहि, मुदा ओकर बौद्धिक विषय-वस्तुक अनुवाद निम्नलिखित शब्द मे देल जा सकैत अछि:

छथि एक भाइ ओ
जे कि गेला हुनकर परिकर बनि कय
अपने वन-राज्य करय जे धरा-वधू कें त्यागि देल!
आ एक भाइ ई

जे कि जखन ओ सभ वन सँ
कय अवधि पूर्ण नहि घुरि सकला
तँ प्रिय प्राणक अविलंब विसर्जन करबा केर
संकल्प नेने छथि प्रत्यर्पित !
पर पृथक भेल निर्लिप्त मूक दर्शकक सदृश
निर्लज्ज कि हम एहि धरणि-धाम केर राज्य करब !
हे सम्प्रभुते ! ई सत्य, अहाँ
छी चिर कुसुमित जनु मधु कलिके !

एहि कविताक मूल केर लयगत विन्यास एहि तरहें कैल गेल अछि जे ओकर प्रत्येक तुक एवं अनुप्रास केर स्वराघात ठीक ओतय पड़ैत अछि जतय भावनाक बलाघात पड़ैत अछि। यदि हम दू टा लेखा-चित्र (ग्राफ) खींची जाहि मे सँ एक शत्रुघ्नक कथन केर भावनात्मक तीव्रताक चित्रण करय और दोसर शब्दगत तीव्रता केर, तऽ दूनूक बीच एक एहन परिपूर्ण समानता हैत जे एक केर ढलान दोसरक ढलान और एक केर चढ़ाव दोसरक चढ़ावक अनुरूप हैत जैं कि मूल तमिल कविता उचिते काव्योपलब्धिक एक उत्कृष्ट उदाहरण मानल जाइत अछि।

राज्याभिषेक

अयोध्याक नागरिक लोकनि शत्रुघ्नक दयनीय संकटदशा और भरतक दृढ़ अविचल संकल्प सँ विमूढ़ भेल ठाढ़ छथि। ठीक ओही क्षण मे हनुमान ओहि स्थल पर ई घोषित करैत द्रुत गतियें अबैत छथि, "राम आबि गेलाह।" अपना हाथ सँ ओ ज्वाला कें मिझाय भस्म बनबैत छथि और आनन्द सँ नृत्य करैत छथि। राम-आगमन केर मंगलमय समाचार सुनि भरत आनन्दातिरेक सँ आत्मविभोर भऽ जाइत छथि। ओ अपना चारू दिसक लोक कें प्रणाम करैत छथि। अपन दासी-परिचारिका लोकनि कें सेहो प्रणाम करैत छथि और अपनो कें प्रणाम करैत छथि। हुनक आनन्द हुनका एना विभोर कऽ दैत छन्हि जे कवि ई चिन्तन करैत छथि :

सत्ये, प्रेमक जे अछि तत्त्व।
मधुक चुआओल अन्तस्सत्त्व॥

शीघ्रे विभीषण, सुग्रीव ओ वानर-सेनाक संग राम, लक्ष्मण आ सीता पहुँचैत छथि। सम्पूर्ण अयोध्या आनंदमग्न भऽ उठैत अछि। संगीत ओ उत्सवक बीच रामक राज्याभिषेक सम्पन्न होइत अछि।

उपसंहार

दश सहस्र सँ अधिक छन्द सँ युक्त कम्बनक महाकाव्यक प्रति एहि लघु प्रबंध मे पूर्ण न्याय नहि कैल जा सकैत अछि। संपूर्ण महाकाव्य मे कवि जीवनक नियंत्रण-कारी तत्त्व पर विजय प्राप्त केनिहार साधकक सदृश दृढ़ प्रत्यय एवं प्रपत्ति भावना सँ बजैत छथि। उदाहरणस्वरूप 'हिरण्यवदाइ पदालम' केर दृष्टांत देल जा सकैत अछि जाहि मे ओ अत्यधिक मौलिक नाटकीय परिस्थितिक सृजन करैत छथि। एहि दृश्य मे ओ परमेश्वर विष्णुक सम्मुख ब्रह्मा कें अनैत छथि जे हुनक सृजनात्मके शक्तिक प्रतीक छथि और हुनका संग हुनक एक वैश्विक वार्त्तालाप उपस्थित करबैत छथि। हिरण्यकशिपु केर पुत्र प्रह्लादक पुकार पर भगवान ब्रह्माण्डक भेदन करैत तुरत पृथ्वी पर नृसिंह रूप मे नास्तिक हिरण्यक समक्ष अवतरित होइत छथि और अपन लाल नख आ दंत सँ ओकर संहार कऽ दैत छथि। जखन नृसिंह असीम क्रोधावेश मे गर्जन करैत छथि तखन हुनक क्रोध कें शमित करबाक हेतु कंबन ओही स्थल पर अत्यन्त कलात्मक और हास्यपूर्ण परिवेश मे ब्रह्मा कें उपस्थित करैत छथि। तखन ब्रह्मा अत्यन्त भक्ति भावें प्रेमपूर्ण व्यंग्य-वाक्यावली सँ हुनक अभ्यर्थना करैत छथि :

देवाधिदेव हे परम प्रभो।
ई रूप लेल जे चरम विभो॥
कैलहुँ अपने ई पूर्ण सिद्ध।
छी स्वयं स्वयंभू चिर प्रसिद्ध॥
पर कैल हमर एहि हेतु सृजन।
हम अगणित रूप रची जीवन॥
तऽ कार्य-क्षेत्र जे हमर न्यस्त।
की अतिक्रमित नहि अस्त-व्यस्त॥
जे एहि रूपक निर्माण-कार्य।
कैलहुँ कि स्वयं निज शिरोधार्य॥

ब्रह्माक एहि हास्यपूर्ण उपालंभ मे तर्क सँ अधिक भक्ति अछि जे जाहि जगन्नियन्ता कें अपन अधिकार दोसर प्रतिनिधि कें दऽ देवाक सर्वोच्च शक्ति छन्हि, पुनः ओहि अधिकार पर अतिक्रमण करवाक अधिकार हुनका नहि छन्हि। परन्तु ब्रह्मा अपन प्रभुक विरुद्ध जे निम्नलिखित दोषारोपण करैत छथि ओहि मे यथार्थ अछि :

अहँक आदि मूल तत्त्व।
सृष्टिक सब जतय सत्त्व।।
ग्रह-नक्षत्र कत सहस्र।
धारण कयने अजस्र।।
जेना उदधि जल बुद-बुद।
चलइत अर्बुद-अर्बुद।।
अहँक रूप से अनन्त।
कोटि रूप रूपमन्त।।
किंतु एक विग्रहत्त्व।
कय सीमित अनन्तत्त्व।।
लेलहुँ संकुचित रूप।
खेद, विसरि निज स्वरूप।।

भगवानेक असीमता एवं हुनक प्राकट्यक हीनताबोधक सीमाक बीच विसंगतिक दिग्दर्शन करेलाक पश्चात् ब्रह्मा हुनक सर्वव्यापक एवं सर्वातीत रूपक बीच जे अन्तर्विरोध अछि तकरा निम्नलिखित शब्द मे व्यक्त करैत छथि :

नहि कतहु वाह्य अस्तित्त्व हमर।
हे प्रभु, अपनेक बसल अन्तर।।
बिनु अहँक कृपें जड़ वा जीवन।
हम कय न सकी कहुना सर्जन।।
नहि, छलहुँ पूर्व, पश्चात् रहब।
लय रूप, अहीं मे विलय करब।।
जे अहँक अन्तरक स्वर्ण-मर्म।
लय स्वर्णकार सम ततहि जन्म।।
हम ओही तत्त्व कें छी गढ़ैत।
अपनेक कृपा कें छी बुझैत।।

एहि प्रकार कम्बन अनेक पद्यक द्वारा अपन सृष्टिकर्त्ताक संग आध्यात्मिक

वाद-प्रतिवाद करैत छथि। आध्यात्मिक दृष्टिकोणक विविधता एवं निर्भीकता, श्रद्धासिक्त विनोद एवं करुणा तथा काव्यगत भव्यता एवं नाटकीय शक्तिक जे प्रदर्शन कंबन करैत छथि ओ हुनक काव्य कें विश्वक श्रेष्ठतम काव्यक समकक्ष आनि दैत छैन्ह। अद्वैत विचारधाराक तात्पर्य सापेक्षताक संसार मे रहनिहारक बुद्धि कें किंकर्त्तव्य विमूढ़ कऽ दैत अछि, मुदा कविक प्रतिभा एहि किंकर्त्तव्य विमूढ़ता कें मूर्त्तता और नाटकीयता प्रदान करैत एही किंकर्त्तव्यविमूढ़ता कें अद्वैतक यथार्थता केर प्रतिपादन हेतु विश्वसनीय प्रमाणक रूप मे व्यवहार करैत अछि।

कम्बनक सफलताक कारण हुनक वर्ण्य विषय सँ अधिक हुनक वर्णनशैली अछि। हुनक प्रत्येक शब्द हुनक प्रत्ययकारी शक्तिक केन्द्र-विंदु अछि जाहि मे हुनक जीवन्त विश्वास मानवीय स्वरक कम्पन रूप मे परिवर्त्तित भऽ जाइत अछि। जे क्यो एहि कम्पनक प्रत्यक्ष अनुभव करय चाहैत छथि हुनका कविक मूल कविताक श्रवण करय पड़तैन्ह, ने कि अनुवादक दुर्बल सृजनशक्ति-विहीन स्वर-समूह के।

कविक मतें जीवन 'एकटा मूर्ख द्वारा कहल निरर्थक कोलाहल एवं उत्तेजना-पूर्ण कथा' नहि अछि, अपितु जीवन पूर्ण अर्थ, व्यवस्था एवं प्रतिष्ठा सँ सम्पन्न अछि। सम्पूर्ण चराचरक हित असीम दया कविक कलाक उत्स अछि। ओ जीवन कें एक वैश्विक यात्राक एक परिवर्त्तनशील किन्तु आवश्यक चरण मानैत छथि और ओ पार्थिव जीवनक घटनाक्रम कें एहि रूपें व्याख्यायित करैत छथि जे जन्मपूर्व उत्पन्न होमऽवला कारणक परिणाम थीक और मृत्यूपरान्त जीवन पर सेहो प्रभाव रखैत अछि। तैं ओ जीवनक अधिक एवं और अधिक अभ्यंतर मे अवगाहन करैत छथि और एहि चेतना कें नेने जे 'मनुष्य' एक दिक्काल रहित सातत्यक अंग थिक ओ विगत एवं अनागत केर शाश्वतता मे अधिक सँ अधिक खनन करैत छथि। ई हुनका जीवनक माया-लीला कें स्थिर दृष्टि सँ देखबाक, जीवनक पृथक एवं विभिन्न खण्ड कें एक सामंजस्य सूत्र मे बान्हबाक और एक गंभीर मंगल दृष्टि एवं अन्तर्ज्ञान केर आलोक मे सम्पूर्णक व्याख्या करबाक शक्ति प्रदान करैत छन्हि और जेना इमर्सन प्लेटोक विषय मे कहलन्हि अछि हमरा लोकनि तहिना कंबनक विषय मे कहि सकैं छी जे ओ सूर्यक समान अपन दृष्टिक केन्द्रिकता सँ एक निरभ्र निष्ठा प्राप्त कैलन्हि।

तकर ई अर्थ नहि जे कम्बन एक बोझिल तत्त्वमीमांसक कवि अथवा धर्म संबंधी विविध विषयक प्रचारवादी वक्तेता छलाह। हुनक कलाक मूल चरित्र एवं जीवन-स्थितिक वास्तविक संसार मे अछि और हुनक महाकाव्य अपन प्रसार मे जीवन एवं प्रकृति कें समाहित केने चलैत अछि। तैं ओ मरुभूमिक शुष्कताक वर्णन करैत अपेक्षाकृत हल्लुक मनोवृत्ति सँ एकर तुलना ओहि आवेगशून्यता सँ करैत छथि जे एक दिस सामान्य गणिका आ दोसर दिस मुक्तिक आकांक्षी साधु दुहूक जीवनक समान

जीवन-लक्षण थीक। समुद्रक आर-पार सेतु-निर्माणक वर्णन करैत ओ अपन मनोहर एवं चलचित्रात्मक विवरण मे एक वानरक साहसिक कार्यक चर्चा एना कऽ सकैत छथि जे एके बेर तीन-तीन लघु पर्वत कें नेने अबैत अछि—एक टा कें पैर सँ गुड़कबैत, दोसर कें अपन पसारल बाँहि पर नेने अबैत और तेसर कें अपन नाँगड़ि मे खूब कसि कय बान्हने। ओ एक सौ युद्धक वर्णन एहन प्रत्यक्षताक संग और जेना ओहि मे स्वयं भाग लेने होथि ताहि चेतना सँ कऽ सकै छथि जाहि मे प्रत्येक वर्णन दोसर सँ भिन्न विन्यास मे रचित अछि और सब रोमांच, कौतूहल एवं तीव्र वेग सँ भरल अछि। मानव हृदयक पारखीक रूप मे ओ मनुष्यक आचरणक गुह्यतम आंतरिक मूल कें उद्घाटित कऽ सकैत छथि। ओ महाकाव्यक कठोरता कें नाटकक नम्यता सँ सन्तुलित कऽ सकैत छथि और दुहू कें अपन गीतात्मक तीव्रताक प्रकाश सँ संश्लिष्ट कऽ सकैत छथि।

ओ जे किछु करैत छथि ताहि क्रम मे पाठकक हृदय मे प्रत्येक महत्त्वपूर्ण विषयक प्रति रागात्मक संबंध-भावना कें पुष्ट करबा मे सतत सक्षम होइत छथि। ओ रामायणक निर्मलकारी जल मे पाठक कें बारंबार अवगाहन करबाक हेतु प्रेरित करैत छथि और तखन पाठक अधिक भावपूर्ण आदर्शक संग धर्मस्थापना मे अधिक तीव्र वैयक्तिक सहभागिता, सत्यं-शिवं-सुन्दरं केर अधिक प्रखर चेतना, परम सत्यक संबंध मे अधिक साहस और ओकर समाधानक हेतु अधिक सुगम आत्मविश्वास नेने ओहि मे सँ निकलैत अछि।

और ई सम्पूर्ण उपलब्धि कवि अपन सर्वोच्च काव्य प्रतिभा द्वारा प्राप्त करैत छथि। कम्बनक लय अप्रतिम पूर्णता, विविधता एवं प्रचुरता नेने अछि। ओ अपन स्वर एवं व्यंजन-ध्वनिक संयोजन एहन कौशल ओ चमत्कार सँ करैत छथि जे ओ कोनो मनः स्थितिक एवं भावनाक एक सूक्ष्म शरीरी (Astral) रूप प्रस्तुत कऽ दैत अछि। हुनक लयात्मक रचना पाठकक सतत विचार-चंचल मन कें एके बेर अचल कऽ देबाक शक्ति रखैत अछि। संगहि ओ व्यक्ति कें अपन वैयक्तिक आवेग सँ अप्रभावित राखि कविक सन्देश कें ग्रहण करबा योग्य बना दैत अछि। ई सभ टा संयोजन अपना मे एहन सहज प्रवाहक स्वीकृति नेने अछि जे ई सूचित करैत अछि जे काव्य-रचनाक प्रक्रिया मे कवि कें अपन भाव व्यक्त करबा मे शब्द संबंधी कोनो पूर्व संकटक लेशो मात्र अनुभूति नहि भेलन्हि। ब्रह्माण्डक पाछाँ वर्त्तमान कोनो गंभीर अटल उद्देश्य कें व्यक्त करैत अथवा अस्तित्त्वक निगूढ़ आन्तरिक स्थलक झलक प्रेषित करबाक क्रमें कम्बनक लय प्रभावपूर्ण रूपें ध्यानक क्षण के प्रलंबित कऽ दैत अछि। वस्तुतः कम्बनक काव्य मे एहन सुरभि अछि जे ताहि कारणें तमिल लोकनि एक मत सँ कम्बन कें 'कवि चक्रवर्त्ती' वा 'काव्य-सम्राट्' घोषित कैलन्हि अछि।

सन्दर्भ-ग्रंथ

तमिल मे

1. कम्बर थारुम् रामायणम्—रसिकमणि टी० के० चिदंबरनाथ मुदालियर
2. कम्बर यार ?—रसिकमणि टी० के० चिदम्बरनाथ मुदालियर
3. कम्ब रामायण सारम्—वी० पी० सुब्रमण्य मुदालियर
4. वीर मानगर—डॉ० आर० पी० सेतू पिल्लै
5. कम्ब चित्रम्—पी० श्री आचार्य
6. अशोक वनम्—प्रो० ए० मुत्तुशिवम्
7. कम्बन काव्य निलय—सो० मुरुगप्पा
8. कल्वियिल पेरियवार कम्बर—ए० वी० सुब्रमराय अय्यर
9. रावणम् मत्चियुम् वीझचियुम्—प्रो० ए० एस० गुन्नसंवंदम्
10. सीता कल्याणम् एंड पादुका पट्टाभिषेकम्—टी० एम० भास्कर टोन्डैमन
11. कम्ब रामायणम्—वी० एम० गोपालकृष्णमाचारियार
12. उंगल कम्बन—निबन्ध-संग्रह

अंग्रेजी मे

1. स्टडीज इन कंब रामायण—वी० वी० एस० अय्यर
2. सेलेक्ट ट्रान्सलेशन्स फ्रॉम कम्बन—वी० एस० मुदालियर

भारतीय साहित्यक निर्माता

भारतीय साहित्यक इतिहास-यात्रा में अपन महत्त्वपूर्ण पदचिन्ह जे केओ छोड़ि गेलाह अछि—पुरना किंवा नवका साहित्यनिर्मातालोकनि तनिका सभक परिचय देबाक लक्ष्य सोझां राखि एहि ग्रन्थमालाक आयोजन कएल गेल अछि।

एहि मालाक प्रत्येक पोथीमे कोनो एकटा एहन विशिष्ट भारतीय लेखकक जीवन ओ कृतित्वंक बखान कएल जाइछ जे अपन भाषाक माध्यमसँ भारतीय साहित्यक उन्नति ओ विकासमे स्थायी एवं मूल्यवान योग देने छथि।

एहि क्रमसे मैथिली लेखक पर ओ मैथिली भाषामे एखन धरि जे पुस्तक प्रकाशित भेल अछि तकर विवरण नीचां देल जाइत अछि;

मूलतः अङरेजीमे

विद्यापति	:	रमानाथ झा
चन्दा झा	:	जयदेव मिश्र

मूलतः मैथिलीमे

सीताराम झा	:	भीमनाथ झा
उमेश मिश्र	:	गोविन्द झा

मैथिलीमे अनूदित

नामदेव	:	माधव गोपाल देशमुख
	:	अनु० : सोमदेव
ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	:	हिरण्मय वनर्जी
		अनु० : उदयनारायण सिंह 'नचिकेता'
काजी नजरुल इस्लाम	:	गोपाल हालदार
		अनु० : रमाकान्त झा
जयदेव	:	सुनीति कुमार चटर्जी
		अनु० : शैलेन्द्रमोहन झा
चण्डीदास	:	सुकुमार सेन
		अनु० : गोविन्द झा
श्रीअरविन्द	:	मनोज दास
		अनु० : उमानाथ झा
कम्बन	:	एस० : महाराजन
		अनु० : जगदीश प्रसाद कर्ण

11713
9.12.04
SHIMLA

भारतीय साहित्यक निर्माता

भारतीय साहित्यक इतिहास-यात्रा मे अपन महत्त्वपूर्ण पदचिन्ह जे केओ छोड़ि गेलाह अछि—पुरना किंवा नबका साहित्यनिर्मातालोकनि तनिका सभक परिचय देबाक लक्ष्य सोझाँ राखि एहि ग्रन्थमालाक आयोजन कएल गेल अछि।

एहि मालाक प्रत्येक पोथीमे कोनो एकटा एहन विशिष्ट भारतीय लेखकक जीवन ओ कृतित्वक बखान कएल जाइछ जे अपन भाषाक माध्यमसँ भारतीय साहित्यक उन्नति ओ विकासमे स्थायी एवं मूल्यवान योग देने छथि।

एहि क्रममे मैथिली लेखक पर ओ मैथिली भाषामे एखन धरि जे पुस्तक प्रकाशित भेल अछि तकर विवरण नीचाँ देल जाइत अछि :

मूलतः अङरेजीमे

विद्यापति	:	रमानाथ झा
चन्दा झा	:	जयदेव मिश्र

मूलतः मैथिलीमे

सीताराम झा	:	भीमनाथ झा
उमेश मिश्र	:	गोविन्द झा

मैथिलीमे अनूदित

नामदेव	:	माधव गोपाल देशमुख
	:	अनु० : सोमदेव
ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	:	हिरण्मय बनर्जी
		अनु० : उदयनारायण सिंह 'नचिकेता'
काजी नजरुल इस्लाम	:	गोपाल हालदार
		अनु० : रमाकान्त झा
जयदेव	:	सुनीति कुमार चटर्जी
		अनु० : शैलेन्द्रमोहन झा
चण्डीदास	:	सुकुमार सेन
		अनु० : गोविन्द झा
श्रीअरविन्द	:	मनोज दास
		अनु० : उमानाथ झा
कम्बन	:	एस० : महाराजन
		अनु० : जगदीश प्रसाद कर्ण